मुक्तिदाता येशु का शुभ संदेश
लेखक शिष्य मत्तियाह

पुस्तक की कुछ ज़रूरी बातें

प्राचीन परंपरा के अनुसार इस पुस्तक में मुक्तिदाता येशु के बारह प्रिय शिष्यों में से एक शिष्य मत्तियाह (मत्ती) ने उनके जीवन का वर्णन किया है। शिष्य मत्तियाह मुक्तिदाता येशु को यहूदियों के सबसे महान गुरु के रूप में प्रस्तुत करता है। मत्तियाह की पुस्तक में मुक्तिदाता येशु के प्रवचनों में से पांच शामिल हैं (5; 10; 13; 18; 23)। प्रत्येक प्रवचन गुरु के रूप में उनके शक्तिशाली अधिकार को दर्शाता है। ये शिक्षाएँ उस समय से गुरु येशु के सभी शिष्यों और उनके सत्संग के लिए बहुत महत्वपूर्ण हो गई हैं।

मत्तियाह इस बात को दिखाता है कि गुरु येशु वही मुक्तिदाता हैं जिनका यहूदी समाज के लोग बहुत समय से इंतज़ार कर रहे थे। लेकिन मुक्तिदाता सिर्फ यहूदी लोगों के लिए नहीं, परंतु दुनिया के हर समाज के लोगों के लिए भी हैं (24:14; 25:32)। मुक्तिदाता येशु की वंशावली में, तीन महिलाओं का उल्लेख किया गया है जो यहुदी समाज से नहीं थीं (1:5,6)। प्रभुजी जन्म के समय पर्शिया देश से पंडित उनके दर्शन करने आए थे (2:1,2)। गुरु येशु के शुभ संदेश को फैलाने कार्य के द्वारा यहूदी लोगों के साथ-साथ रोम और सीरिया देश के लोगों को भी आशीर्वाद मिला (4:24; 8:5; 15:22)। और उनकी मृत्यु होने के तीन दिन बाद जब वह ज़िन्दा हो गए उन्होंने अपने शिष्यों को आज्ञा दी कि तुम यह शुभ संदेश दुनिया के हर समाज के लोगों को सुनाओ (28:19)।

मत्तियाह दिखाता है कि मुक्तिदाता येशु न सिर्फ अपने दिव्य ज्ञान द्वारा लोगों को उनकी कठिनाइयों के बारे में बताते, परंतु उन्हें समाधान भी देते हैं। मुक्तिदाता येशु के संदेशों को सुनें और उन पर अमल करके लाभ उठाएँ।

प्रार्थना - “हे परमात्मा, शिष्य मत्तियाह को मुक्तिदाता येशु के बारे में इस शुभ संदेश को बताने की प्रेरणा देने के लिए आपका धन्यवाद। यह आपकी कृपा है कि हमें अब गुरु येशु के चरणों में सीखने का यह अवसर प्राप्त हुआ है।”

• • • ■ • • •

1

मुक्तिदाता येशु की वंशावली

[1]यह मुक्तिदाता येशु के पूर्वजों की सूची है। मुक्तिदाता येशु राजा
दाविद के परिवार से थे। राजा दाविद कुलपिता अब्राहम के परिवार से
थे।

[2]अब्राहम का बेटा इसहाक, इसहाक का बेटा याकोब,* याकोब
का बेटा यहूदा और उसके ग्यारह भाई। [3]यहूदा के बेटे पेरस और
ज़ेरह जिनकी माँ का नाम तामार था।

पेरस का बेटा हेज़रोन, हेज़रोन का बेटा हाराम, [4]हाराम का बेटा
अमिनादाब, अमिनादाब का बेटा नहशोन, नहशोन का बेटा सलमोन,
[5]सलमोन का बेटा बोआज़ जिसकी माँ राहब* थी। बोआज़ का बेटा
ओबेद जिसकी माँ रूथ* थी।

ओबेद का बेटा यिशय और [6]यिशय का बेटा दाविद। राजा दाविद
का बेटा शलोमो जिसकी माँ सेनापति ऊरिया* की विधवा थी।

---

* **1:2** *अब्राहम का बेटा इसहाक, इसहाक का बेटा याकोब* - कुलपिता अब्राहम, इसहाक और राष्ट्रपिता याकोब यहूदियों के तीन महान कुलपिता हैं * **1:5** *राहब* - राहब मूल रूप से इज़राएल समाज से नहीं थी, लेकिन वह और उसका पूरा परिवार यहोशु के समय में परमात्मा के भक्त बन गए (यहोशु 2:11; 6:17) * **1:5** *रूथ* - रूथ मूल रूप से इज़राएल समाज से नहीं थी, लेकिन उसने अपने देवताओं को छोड़ दिया और परमात्मा की भक्त बन गई (रूथ 1:16-17)। * **1:6** *सेनापति ऊरिया* - ऊरिया यहूदी समाज से नहीं थे।

[7]राजा शलोमो का बेटा रोबोहम, रोबोहम का बेटा अबियाह, अबियाह
का बेटा आसाफ,+ [8]आसाफ का बेटा यहोशाफात, यहोशाफात का बेटा
योराम, योराम का बेटा उज़्ज़ाईयाह, [9]उज़्ज़ाईयाह का बेटा योताम, योताम
का बेटा आखाज़, आखाज़ का बेटा हेज़ेकियाह, [10]हेज़ेकियाह का बेटा
मनासे, मनासे का बेटा आमोस,+ आमोस का बेटा योशियाह।
[11]जब इज़राएल के लोग बंदी होकर बाबीलोन देश को गए, उस
समय योशियाह का बेटा यखनयाह और उसके भाई पैदा हुए।
[12]यहूदी लोगों को बंदी बनाकर बाबीलोन देश में लाने के बाद,
यखनयाह का बेटा शालतिएल पैदा हुआ।
शालतिएल का बेटा ज़रुबाबेल, [13]ज़रुबाबेल का बेटा अबीहूद,
अबीहूद का बेटा एलियाकिम, एलियाकिम का बेटा अज़ोर, [14]अज़ोर
का बेटा सदोक, सदोक का बेटा अखीम, अखीम का बेटा एलीहूद,
[15]एलीहूद का बेटा एलअज़र, एलअज़र का बेटा मत्थान, मत्थान का
बेटा याकोब।
[16]और याकोब का बेटा योसफ पैदा हुए जो मरियम का पति था।
मरियम के बेटे येशु थे, जो मुक्तिदाता कहलाते हैं।
[17]इस प्रकार कुलपिता अब्राहम से राजा दाविद तक कुल चौदह
पीढ़ियाँ, राजा दाविद से बाबीलोन देश लाए जाने तक चौदह पीढ़ियाँ
और बाबीलोन देश लाए जाने के बाद मुक्तिदाता के आने तक चौदह
पीढ़ियाँ हुईं।

मुक्तिदाता येशु का जन्म

[18]मुक्तिदाता येशु का जन्म इस प्रकार हुआ। उनकी माता मरियम की
मंगनी योसफ से हुई थी। परंतु ऐसा हुआ जब मरियम कुँवारी ही थी,
परमात्मा की पवित्र आत्मा की अद्भुत शक्ति द्वारा से गर्भवती हो गई।
[19]मरियम का मंगेतर योसफ एक धर्मी व्यक्ति था और वह नहीं चाहता
था कि मरियम की बदनामी हो। इसलिए उसने चुपचाप मंगनी* तोड़ने
का फैसला किया।

---

* **1:19** *मंगनी* - यहूदी समाज में मंगनी करना बहुत मज़बूत गठजोड़ के रूप में देखा जाता था। यदि कोई इसे तोड़ना चाहता था तो उसे तलाक के प्रमाण पत्र की ज़रूरत होती थी।

[20]जब योसफ इस बारे में विचार कर ही रहा था तो प्रभु परमात्मा के
स्वर्गदूत ने उसे सपने में दर्शन दिया और कहा, "योसफ, राजा दाविद के
वंशज! अपनी पत्नी मरियम को स्वीकार करने से मत डर, क्योंकि जो
उसके गर्भ में है, वह पवित्र आत्मा से है। [21]वह पुत्र को जन्म देगी और
तुम उसका नाम येशु रखना, जिसका अर्थ है, 'प्रभु परमात्मा मुक्ति देते हैं।'
वह अपने लोगों के बुरे कर्मों का खाता मिटाकर उन्हें मुक्ति देंगे।"
[22]इसलिए प्रभु परमात्मा का किया गया वादा पूरा हुआ जैसा कि
उनके प्रवक्ता ने कहा था,
[23] "देखो, एक कुँवारी कन्या गर्भवती होगी
और वह पुत्र को जन्म देगी।
उसका नाम 'इमानुएल' रखा जाएगा,
जिसका अर्थ है, 'परमात्मा हमारे साथ है'।"
[24]योसफ नींद से जागा और उसने प्रभु के स्वर्ग-दूत की आज्ञा के
अनुसार काम किया। उसने मरियम के साथ शादी कर ली, [25]किंतु जब
तक मरियम ने अपने बेटे को जन्म न दिया, योसफ ने उसके साथ
सहवास नहीं किया। बच्चे का जन्म होने के बाद योसफ ने उसका नाम
"येशु" रखा।

2

तारे द्वारा पंडितों को रास्ता दिखाया जाना

[1]राजा हेरोदेस के शासन-काल में* जब यहूदिया प्रदेश के बैथलहम
गाँव में प्रभु येशु का जन्म हुआ, तब पूर्व के देशों से कुछ पंडित*
यरूशलम शहर में आए। [2]वे लोगों से पूछने लगे, "यहूदियों के राजा
जिनका जन्म हो चुका है, कहाँ हैं? हम यह इसलिए पूछ रहे हैं,
क्योंकि हमने एक उदय होता तारा देखा है जो उनके जन्म को दर्शाता
है, तो हम उनके आगे झुक कर प्रणाम करने आए हैं।"

---

* **2:1** *राजा हेरोदेस के शासन-काल में* - यह राजा हेरोदेस प्रथम है (सन् 37 बी.सी.ई. से 4 बी.सी.ई. तक)। वह इज़राएल का कठपुतली शासक था जिसे रोम सम्राट ने स्थापित किया था। राजा हेरोदेस अपनी भवन-निर्माण योजनाओं तथा अपने परिवार और प्रजा के प्रति क्रूरता के लिए मशहूर था। * **2:1** *पूर्व के देशों से कुछ पंडित* - ये पंडित या नक्षत्र ज्ञानी पर्शिया देश से थे जिनको आज ईरान-इराक के देशों के नाम से जाना जाता है। वे तारों का अध्ययन करने के लिए जाने जाते थे।

3यह सुनकर राजा हेरोदेस चिंता में पड़ गया और उसके साथ यरूशलम के
बहुत से निवासी भी। 4राजा हेरोदेस ने सब प्रधान पुरोहितों और धर्मगुरुओं
को इकट्ठा कर उनसे पूछा, "मुक्तिदाता का जन्म कहाँ हुआ होगा?"
5उन्होंने बताया, "मुक्तिदाता का जन्म यहूदिया प्रदेश के बैथलहम
गाँव में होगा। हम यह जानते हैं क्योंकि बहुत साल पहले परमात्मा के
प्रवक्ता मिका ने यह अपनी पुस्तक में लिखा है,

6 'ओ बैथलहम, यहूदिया प्रदेश के गाँव,
तू यहूदिया के प्रमुख नगरों में किसी से कम नहीं,
क्योंकि तुझमें एक शासक पैदा होगा
जो मेरी प्रजा इज़राएल की चरवाहे की तरह देखभाल करेगा।'"

7तब हेरोदेस ने पंडितों को चुपचाप बुलाकर उनसे पूछताछ की और
उनसे यह पता लगा लिया कि तारा उन्हें ठीक किस समय दिखाई
दिया था। 8फिर उसने यह कहकर उन्हें बैथलहम गाँव भेजा, "जाओ,
और बालक को खोजो और जब वह मिल जाए तो वापस आकर मुझे
बताना कि मैं भी जाकर उनके सामने झुक का उन्हें प्रणाम करूँ।"
9राजा का आदेश सुनकर पंडित बालक की खोज में निकल पड़े।
और देखो, जो तारा उन्होंने उदय होते देखा था, वह उनके आगे-आगे
चला और जहाँ बालक था, ठीक उस घर के ऊपर ठहर गया। 10तारे
को देखकर पंडितों की खुशी का ठिकाना न रहा।
11जब वे घर के अंदर गए, उन्होंने बालक को उसकी माता मरियम के
साथ देखा। उन्होंने बालक के सामने झुककर उसे प्रणाम किया और
अपने खज़ाने के संदूक खोलकर सोना, लोबान के टुकड़े और गंधरस
की भेंटें बालक को चढ़ाई।
12तब पंडितों ने सपने में परमात्मा का यह आदेश पाकर कि राजा
हेरोदेस के पास न लौटना, वे दूसरे मार्ग से अपने-अपने देश चले गए।

इजिप्ट देश में शरण लेना

13पंडितों के चले जाने के बाद प्रभु परमात्मा के स्वर्गदूत ने सपने में
योसफ को दर्शन दिया। उसने योसफ से कहा, "उठो, बालक और

2:6 मिका 5:2

उसकी माता को लेकर इजिप्ट देश को भाग जाओ। जब तक मैं लौटने
के लिए न कहूँ, वहीं रहना, क्योंकि राजा हेरोदेस इस बालक की हत्या
करने के लिए इसकी खोज करने वाला है।”
[14]तो जोसफ नींद से उठा और रात में ही बालक और उसकी माता
को लेकर इजिप्ट देश चला गया [15]और वे राजा हेरोदेस की मृत्यु तक
वहीं रहे। इसलिए परमात्मा के प्रवक्ता द्वारा किया गया यह वादा पूरा
हुआ, “मैंने इजिप्ट देश से अपने पुत्र को बुलाया।”

बालकों की हत्या

[16]जब राजा हेरोदेस ने देखा कि पंडितों ने उसे धोखा दिया है तब वह
क्रोध से भर गया। उसने सैनिकों को भेजा और बैथलहम तथा उसके
आस-पास के गाँवों में उन सब बालकों को, जो पंडितों के बताए समय
के अनुसार दो साल के या उससे कम के थे, मरवा डाला। [17]इसलिए
प्रभु परमात्मा द्वारा किया गया यह वादा पूरा हुआ, जैसा कि उनके
प्रवक्ता यरमियाह ने कहा था,
[18]“रमाह नगर में रोना और दर्द से भरी आवाज़ें सुनाई दीं।
कुलमाता राशेल* अपने बच्चों के लिए रो रही थी।
वह तसल्ली नहीं चाहती है
क्योंकि उसके पुत्र मर गए थे।”

इजिप्ट से लौटना

[19]राजा हेरोदेस की मृत्यु के बाद प्रभु परमात्मा के स्वर्गदूत ने इजिप्ट
देश में योसफ को सपने में दर्शन दिया [20]और उससे कहा, “उठो,
बालक और उसकी माता को लेकर इज़राएल देश वापस लौट जाओ,
क्योंकि जो लोग बालक का जान लेना चाहते थे, वे अब मर चुके हैं।”
[21]योसफ नींद से उठा और बालक तथा उसकी माता को लेकर
इज़राएल देश वापस लौट गया। [22]परंतु जब योसफ ने सुना कि राजा
अरखेलस अपने पिता राजा हेरोदेस की मृत्यु के बाद यहूदिया प्रदेश

2:15 होशे 11:1 * **2:18** *कुलमाता राशेल* - राशेल याकोब की पत्नी थी। याकोब को इज़राएल के नाम से भी जाना जाता था, इसलिए राशेल को इज़राएल राष्ट्र की आत्मिक माँ माना जाता था।
2:18 यरमियाह 31:15

में शासन कर रहा है, तब उसे वहाँ जाने से डर लगा। और सपने में
चेतावनी पाकर गलील प्रदेश चला गया।
23तब परिवार नासरत नामक नगर में जाकर रहने लगा। इससे
परमात्मा के प्रवक्ताओं की यह बात पूरी हुई, "उसे नासरी कहा
जाएगा।"

3

समर्पण-स्नान दाता योहन और उनका संदेश

1बहुत साल बाद समर्पण-स्नान दाता योहन यहूदिया प्रदेश की
सुनसान बंजर जगह में आए और वहाँ जमा हो रहे लोगों को यह संदेश
सुनाने लगे। 2"अपने बुरे कर्मों से पश्चाताप करो, क्योंकि जो परमस्वर्ग
में रहते है उनका शासन शुरू होने वाला है।"
3यह योहन वही व्यक्ति थे जिनके लिए परमात्मा के प्रवक्ता
यशायाह ने कहा,

"सुनसान बंजर जगह में कोई ऊँची आवाज़ में पुकार रहा है,
'प्रभु के आने के लिए रास्ते को तैयार करो
और हर बाधा को दूर करो।'"*

4योहन ऊँट के बालों से बने कपड़े पहनते और कमर में चमड़े का
बेल्ट बाँधते थे। टिड्डी और शहद उनका भोजन था। 5यरूशलम शहर,
सारे यहूदिया प्रदेश और यरदन नदी के आसपास के सब क्षेत्रों से लोग
उनके प्रवचन सुनने उनके पास आने लगे। 6लोगों ने अपने पापों को
सबके सामने स्वीकार कर यरदन नदी में योहन से समर्पण-स्नान लेने
लगे।
7जब योहन ने अनेक फरीसी धार्मिक पंथ और सदूकी धार्मिक पंथ
के लोगों को समर्पण-स्नान लेने के लिए अपने पास आते देखा तब
उनसे यह कहा, "ओ ज़हरीले साँपों के बच्चो! तुम लोगों को किसने
परमात्मा के क्रोध से बचने का रास्ता बता दिया? 8अगर तुम लोग
सच में परमात्मा के क्रोध से बचना चाहते हो तो अच्छे कर्म करो
जिससे पता चले कि तुमने अपने बुरे कर्मों से पश्चाताप कर लिया

---

* **3:3** यशायाह 40:3

है। 9इस धोखे में न रहना कि अब्राहम हमारे कुलपिता हैं इसलिए
परमात्मा हमें दंड नहीं देंगे। मैं तुम लोगों से कहता हूँ कि परमात्मा
इन पत्थरों से भी अब्राहम के लिए संतान पैदा कर सकते हैं। 10जैसे
कुल्हाड़ी उन पेड़ों को काटती है जो अच्छे फल नहीं देते हैं, उसी
तरह परमात्मा उन लोगों को आग से दंडित करने के लिए तैयार हैं जो
अच्छे कर्म नहीं करते हैं।

11"मैं तो तुम लोगों को तुम्हारे बुरे कर्मों से पश्चाताप कराने
के लिए पानी से समर्पण-स्नान देता हूँ, पर एक मुझसे अधिक
शक्तिशाली आ रहे हैं और मैं तो इस योग्य भी नहीं कि उनकी
जूतियाँ भी उठा सकूँ। वह तुम्हें पवित्र आत्मा और आग का स्नान
देंगे। 12इस तरह गेहूँ को भूसी से अलग कर देंगे। गेहूँ को अपने
भंडार में इकट्ठा करेंगे, परंतु भूसी को उस आग में भस्म कर देंगे जो
बुझेगी नहीं।"

परमस्वर्ग का खुल जाना

13तब प्रभु येशु योहन से समर्पण-स्नान लेने के लिए गलील प्रदेश से
उनके पास यरदन नदी के किनारे आए। 14किंतु योहन ने उनको रोका
और यह कहा, "स्वयं मुझे आपसे समर्पण-स्नान लेने की ज़रूरत है,
आप मेरे पास क्यों आए हैं?"

15प्रभु येशु ने उत्तर दिया, "अभी तो ऐसा ही होने दो, क्योंकि हमें
जीवन का हर काम परमात्मा की आज्ञाओं के अनुसार करना है।" इस
पर योहन उन्हें स्नान देने के लिए तैयार हो गए।

16जब प्रभु येशु समर्पण-स्नान लेकर जैसे ही पानी से निकले तो
उनके लिए आकाश और परमस्वर्ग खुल गया, और प्रभु येशु ने
परमात्मा की पवित्र आत्मा को सफेद कबूतर के समान उतरते और
अपने ऊपर आते हुए देखा। 17तब परमस्वर्ग से परमात्मा की यह
आवाज़ सुनाई दी, "यह मेरा प्रिय पुत्र है और इससे मैं बहुत खुश
हूँ।"*

---

* **3:17** *यह मेरा प्रिय पुत्र है और इससे मैं बहुत खुश हूँ* - ये वही शब्द हैं जिनका प्रयोग परमात्मा-ग्रंथ में इस्राएल के राजा के अभिषेक के लिए किया गया है (भजन शास्त्र 2:2) जो मुक्ति लाएगा और विश्व के सभी समाजों में न्याय स्थापित करेगा (यशायाह 42:1-4 देखें)।

4

शैतान की प्रभु येशु से अपनी भक्ति कराने की कोशिश

[1]तब पवित्र आत्मा प्रभु येशु को सुनसान बंजर जगह में ले गया
कि शैतान उन्हें परखे। [2]जब प्रभु येशु चालीस दिन और चालीस रात
उपवास कर चुके तब उन्हें भूख लगी।
[3]परखने वाला शैतान उनके पास आया और उसने प्रभु येशु से कहा,
"यदि तुम परमात्मा के पुत्र हो तो इन पत्थरों से कह दीजिए कि ये
रोटियाँ बन जाएँ।"
[4]प्रभु येशु ने उत्तर दिया, "परमात्मा-ग्रंथ में यह लिखा है, 'इंसान का
जीवन केवल रोटी खाने से ही नहीं, परंतु परमात्मा के मुख से निकली
हर एक बात पर भी निर्भर है।'"
[5]तब शैतान प्रभु येशु को पवित्र शहर यरूशलम में ले गया, और उन्हें
परमात्मा के मंदिर के शिखर पर खड़ा कर उनसे कहा, [6]"यदि तुम
परमात्मा के पुत्र हो तो नीचे कूद जाओ, क्योंकि परमात्मा-ग्रंथ में लिखा
है, 'परमात्मा अपने स्वर्गदूतों को आज्ञा देंगे कि वे तुम्हें अपने हाथों में
लपक लें कि कहीं ऐसा न हो कि तुम्हारे पाँवों तक में भी पत्थर लगे।'"
[7]प्रभु येशु ने उससे कहा, "किंतु परमात्मा-ग्रंथ में यह भी लिखा है,
'तुम प्रभु परमात्मा को मत परखो।'"
[8]फिर शैतान प्रभु येशु को एक बहुत ऊँचे पहाड़ पर ले गया और दुनिया
के सारे देशों और उनकी चमक-दमक को दिखाकर उनसे बोला, [9]"यदि
तुम घुटने टेककर मेरी भक्ति करो तो मैं यह सबकुछ तुमको दे दूँगा।"
[10]प्रभु येशु ने उससे कहा, "मुझ से दूर हट शैतान, क्योंकि परमात्मा-ग्रंथ
में यह लिखा है, 'तुम केवल प्रभु परमात्मा की ही भक्ति और सेवा करो।'"
[11]तब शैतान प्रभु येशु को छोड़कर चला गया और तुरंत स्वर्गदूत
आकर उनकी सेवा-टहल करने लगे।

प्रभु येशु के शुभ संदेश को फैलाने के कार्य की शुरुआत

[12]जब प्रभु येशु ने सुना कि समर्पण-स्नान दाता योहन को जेल में डाल
दिया गया है तब वह यहूदिया प्रदेश छोड़ कर वापस गलील प्रदेश

4:4 उपदेश 8:3 **4:6** भजन शास्त्र 91:11,12 **4:7** उपदेश 6:16 **4:10** उपदेश 6:13

को लौट गए। [13]वह नासरत नगर गए, और कुछ समय बाद वह उस
जगह को छोड़कर कफरनहूम शहर में रहने लगे। यह नगर ज़बूलून
और नफ्ताली वंशजों के क्षेत्रों में गलील झील के किनारे स्थित है।
[14]इसलिए परमात्मा द्वारा किया गया यह वादा पूरा हुआ, जैसा कि
परमात्मा के प्रवक्ता यशायाह ने कहा था,

[15]“मैं तुम लोगों से बात कर रहा हूँ
जो ज़बूलून और नफ्ताली वंशजों की भूमि में बसे हो,
यह भूमि गलील सागर के पास
और यरदन नदी के उस पार गलील प्रदेश में है
जहाँ पर वे लोग भी रहते हैं जो यहूदी समाज से नहीं हैं।
[16]तुम्हारे लोग जो अंधकार में रहते हैं
बड़ी प्रकाश देखेंगे।
तुम्हारे लोग जो मृत्यु की छाया में थे
उन पर प्रकाश उदय हुआ है।”

[17]उस समय से गुरु येशु लोगों को परमात्मा के शुभ संदेश सुनाने
लगे। उन्होंने कहा, “अपने बुरे कर्मों से पश्चाताप करो, क्योंकि जो
परमस्वर्ग में रहते है उनका शासन शुरू होने वाला है।”

[18]जब गुरु येशु गलील झील के किनारे टहल रहे थे तब उन्होंने दो
भाइयों को, शिमोन जो पतरस भी कहलाता था और उसके भाई
अंदरियास को देखा। वे मछुआरे थे और झील में मछली पकड़ने के
लिए जाल डाल रहे थे। [19]गुरु येशु ने उनसे कहा, “आओ, मेरे शिष्य
बनो। तुम्हारा काम मछली पकड़ना रहा है। लेकिन अब मैं तुम्हें लोगों
को परमात्मा की शरण में लाना सिखाऊँगा।” [20]वे तुरंत जालों को
छोड़कर उनके साथ चल पड़े।

[21]वहाँ से झील के किनारे थोड़ा और आगे बढ़ने पर गुरु येशु को
अन्य दो भाई याकोब और योहन दिखाई दिए। वे अपने पिता
ज़बदियाह के साथ नाव में जाल ठीक कर रहे थे। गुरु येशु ने याकोब
और योहन को अपना शिष्य बनने के लिए बुलाया [22]और वे तुरंत नाव
और अपने पिता को छोड़कर उनके पीछे हो लिए।

4:16 यशायाह 9:1-2

गुरुजी अलग-अलग समाज के लोगों के लिए अद्‌भुत काम करते हैं

[23]गुरु येशु सारे गलील प्रदेश में घूमने लगे। वह यहूदी सत्संग भवनों
में उपदेश देते, परमात्मा के साम्राज्य का शुभ संदेश सुनाते और सब
बीमारियों और रोगों से लोगों को ठीक करने लगे। [24]इस प्रकार वह
पड़ोसी देश सीरिया में भी मशहूर हो गए, यहाँ उन लोगों की संख्या
बहुत थी जो यहूदी नहीं थे। लोग अलग-अलग बीमारियों और दर्द से
पीड़ित, अशुद्ध आत्मा से जकड़े हुए, मिर्गी और लकवा के मारे लोगों
को प्रभु येशु के पास लाए और उन्होंने उन सबको भी ठीक कर दिया।
[25]गलील प्रदेश, दस शहरों का इलाका, यरूशलम शहर, यहूदिया प्रदेश
और यरदन नदी के पार के इलाके से बड़ी भीड़ जहाँ प्रभु येशु जाते थे
उनके पीछे चली आती थी।

5

जीवनदायी उपदेश

[1]जब गुरु येशु ने भीड़ को देखा तो वह पहाड़ी पर चढ़ गए और जब
वह एक स्थान पर बैठ गए तब शिष्य उनके पास आए। [2]वह उन्हें इस
प्रकार शिक्षा देने लगे।

[3]“परमात्मा उन लोगों को आशीर्वाद देते हैं
जो गरीब हैं और उनके प्रति समर्पित हैं,
वे परमस्वर्ग के साम्राज्य में शामिल हैं।
[4]परमात्मा उन लोगों को आशीर्वाद देते हैं
जो पश्चाताप करते हैं,
उन्हें शांति प्राप्त होगी।
[5]परमात्मा उन लोगों को आशीर्वाद देते हैं
जो मन से कोमल हैं,
पृथ्वी उन्हीं की होगी।
[6]परमात्मा उन लोगों को आशीर्वाद देते हैं
जो हर एक काम परमात्मा की आज्ञाओं के अनुसार करते हैं।
वे संतुष्ट होंगे।
[7]परमात्मा उन लोगों को आशीर्वाद देते हैं
जो दूसरों पर दया दिखाते हैं,

उन पर भी दया दिखाई जाएगी।
8 परमात्मा उन लोगों को आशीर्वाद देते हैं
जिनके मन पवित्र हैं,
वे परमात्मा को देखेंगे।
9 परमात्मा उन लोगों को आशीर्वाद देते हैं
जो मेल-मिलाप कराते हैं,
वे परमात्मा की संतान कहलाएँगे।
10 परमात्मा उन लोगों को आशीर्वाद देते हैं
जो उनकी आज्ञाओं का पालन करने पर भी सताए जाते हैं,
वे परमस्वर्ग के साम्राज्य में शामिल होंगे।
11 "परमात्मा तुम्हें आशीर्वाद देते हैं जब लोग मेरा शिष्य होने के
कारण तुम्हारा अपमान करते हैं, तुम्हें सताते हैं, तुम्हारे खिलाफ झूठ
बोलते है और तुम्हारे खिलाफ हर तरह की बुरी बातें बोलते हैं।
12 "खुशी और आनंद मनाओ, क्योंकि तुम्हें परमात्मा परमस्वर्ग में
बड़ा इनाम देंगे। इसी प्रकार लोगों ने परमात्मा के प्रवक्ताओं को भी
सताया था जो तुमसे बहुत पहले आए थे।

नमक और दीपक से शिक्षा

13 "तुम अच्छे नमक के समान हो, जिससे पृथ्वी के लोगों को लाभ होता
है।* परंतु यदि नमक अपना स्वाद खो देता है, तो वह किसी काम का नहीं
रहता, और लोग उसे बाहर फेंक देते हैं, और अपने पैरों तले रौंद देते हैं।
14 "तुम सभी दुनिया के लिए एक रोशनी की तरह हो। तुम उस शहर
की तरह हो जो पहाड़ पर बसा है जिसे दूर से साफ-साफ देखा जा
सकता है। 15 और तुम एक दीपक की तरह हो जो पूरे घर को रोशनी
देता है। अपनी रोशनी को ढांप कर मत रखो। 16 तुम्हारे अच्छे काम
रोशनी की तरह चमकें ताकि लोग इन्हें देख सकें और इसके लिए वे
तुम्हारे पिता परमात्मा* का गुणगान करें।

---

* **5:13** *पृथ्वी के लोगों को लाभ होता है* - अर्थात्, यह चीज़ों को शुद्ध करता है, जो अच्छा है उसे संरक्षित करता है, और रिश्तों को एक अच्छा स्वाद देता है। * **5:16** *पिता परमात्मा* - या, "पिता जो परमस्वर्ग में हैं।" इन शब्दों का अनुवाद निम्न स्थानों पर भी इसी प्रकार किया गया है (मत्तियाह 5:45,48; 6:1,9,14; 7:11,21; 10:32,3; 12:50, 16:17, 18:10,14,29)

प्रभु येशु मोशे के नियमों के बारे में बात करते हैं

[17]“यह न समझो कि मैं मोशे के नियम और शिक्षा और परमात्मा के
प्रवक्ताओं की पुस्तकों को रद्द करने आया हूँ। मैं उन्हें रद्द करने नहीं,
परंतु पूरा करने तथा उनका सही अर्थ प्रकट करने आया हूँ। [18]मैं तुमसे
सच कहता हूँ, जब तक आकाश और पृथ्वी रहेंगे, तब तक मोशे के
नियम और शिक्षा की एक मात्रा या एक बिंदु भी रद्द नहीं होगी। मोशे के
नियम और शिक्षा का लक्ष्य ज़रूर पूरा होगा।
[19]“इसलिए यदि कोई इन छोटी-से-छोटी आज्ञाओं में से एक को भी
तोड़ता है और दूसरों को भी यही सिखाए, तो वह परमात्मा के परमस्वर्ग
के साम्राज्य में सबसे छोटा कहलाएगा। परंतु जो कोई उनका पालन
करे और दूसरों को भी यही सिखाए, वह परमात्मा के सम्राज्य में महान
कहलाएगा। [20]मैं तुमसे कहता हूँ, तुम्हें धर्मगुरुओं और फरीसी धार्मिक
पंथ के लोगों से बढ़कर परमात्मा की आज्ञाओं का पालन करना होगा।
नहीं तो तुम परमात्मा के परमस्वर्ग के साम्राज्य में नहीं जा सकते।

क्रोध और हत्या

[21]“तुमने सुना है कि हमारे पूर्वजों से कहा गया था, ‘हत्या न करना
और जो कोई हत्या करेगा वह दंड के योग्य होगा।’ [22]किंतु मैं तुमसे
कहता हूँ, जो कोई किसी पर* गुस्सा करेगा, वह परमात्मा के सामने
वह दंड के योग्य होगा। जो किसी का भी अपमान करेगा, उसको
धर्म-महासभा के सामने न्याय के लिए पेश होना होगा। और जो कोई
किसी को ‘अरे निकम्मे’ कहकर बुलाएगा वह आग से धधकते हुए
नरक में डाले जाने के योग्य होगा।
[23]“यदि तुम अपनी भेंट मंदिर में चढ़ा रहे हो और वहाँ तुम्हें याद आए
कि तुमसे कोई किसी कारण नाराज़ है, [24]तो अपनी भेंट वेदी के सामने
बिना चढ़ाए छोड़ दो और उस व्यक्ति के पास जाकर पहले नाराज़गी
दूर करके मेल-मिलाप कर लो। और तब आकर भेंट चढ़ाओ।
[25]“जिसने तुमपर आरोप लगाया है जब वह तुम्हें अदालत ले जा
रहा हो, अदालत पहुँचने से पहले ही उसे मनालो और समझोता कर

5:21 निर्गमन 20:13-17 * **5:22** *किसी पर* - या, “अपने भाई से”

लो। ऐसा न हो कि आरोप लगाने वाला तुम्हें जज को सौंप दे और
जज सिपाही को जो तुम्हें जेल में डाल देगा। [26]मैं तुमसे सच कहता हूँ,
जब तक तुम एक-एक पैसा न चुका दोगे, तुम जेल से आज़ाद नहीं हो
पाओगे।

दुराचार

[27]"तुमने सुना है कि यह कहा गया था, 'शादी के बाहर
शारीरिक सम्बन्ध नहीं रखना चाहिए।' [28]किंतु मैं तुमसे कहता हूँ,
जो कोई पुरुष किसी औरत को बुरी इच्छा से पाने की योजना
बनाए तो वह मन में उसके साथ शारीरिक सम्बन्ध बनाने का
पाप कर चुका है। [29]यदि तुम्हारी दाईं आँख तुम्हें पाप में गिराने
का कारण बने तो उसे निकालकर फेंक दो। हाँ, तुम एक आँख
खो दोगे। लेकिन इससे बुरा यह होगा कि तुम्हारा पूरा शरीर
सही सलामत रहे, परंतु परमात्मा तुम्हें उसे सही सलामत शरीर
समेत नरक में फेंक दें। [30]यदि तुम्हारा दायाँ हाथ तुमसे पाप
करवाए तो उसे काटकर फेंक दो। हाँ, तुम एक हाथ खो दोगे।
लेकिन इससे बुरा यह होगा कि तुम्हारा पूरा शरीर सही सलामत
रहे परंतु परमात्मा तुम्हें उसे सही सलामत शरीर समेत नरक में
फेंक दें।

तलाक देने का सिर्फ एक कारण

[31]"तुमने सुना है कि यह भी कहा गया था, 'जो पति अपनी पत्नी
को तलाक दे, वह उसे रिश्ता खत्म होने का कानूनी कागज़ दे।'
[32]लेकिन अब मैं तुमसे कहता हूँ, अगर कोई पति अपनी पत्नी के
किसी और के साथ शारीरिक सम्बन्ध रखने के अलावा किसी और
कारण से तलाक दे और अगर वह स्त्री किसी और से शादी करती
है, तो पहला पति उससे यौन पाप कराता है। और अगर कोई दूसरा
पुरुष उस तलाकशुदा महिला से शादी करता है, तो वह भी यौन पाप
करता है।

5:27 निर्गमन 20:14 **5:31** उपदेश 24:1

शपथ और सच्चाई

[33]“तुमने सुना है कि हमारे पूर्वजों से कहा गया था, ‘झूठी कसम न
खाना, परंतु प्रभु परमात्मा के लिए अपनी मन्नतों को ज़रूर पूरा करना।’
[34-35]लेकिन जो मैं तुमको बताना चाहता हूँ, वह यह है कि अपनी बात
को विश्वासयोग्य बनाने के लिए किसी के नाम की कसम न खाना।
न तो ‘परमस्वर्ग’ या ‘पृथ्वी’ के नामों का इस्तेमाल करना क्योंकि
परमस्वर्ग और पृथ्वी वे स्थान हैं जहाँ परमात्मा शासन करते हैं। किसी
कसम को विश्वासयोग्य बनाने के लिए ‘यरूशलम’ नाम का इस्तेमाल
न करना क्योंकि यरूशलम महान राजा परमात्मा का शहर है जो वहाँ
भी शासन करते हैं। [36]किसी कसम को विश्वासयोग्य बनाने के लिए
‘तुम्हारे सिर की कसम’ जैसे शब्दों का इस्तेमाल न करना, क्योंकि तुम
अपने एक भी बाल के असली रंग को स्थाई रूप से बदल नहीं सकते।
[37]“इसके बजाय, जब तुम किसी से कुछ कहते हो, तो तुमको केवल
यह कहना चाहिए ‘हाँ, मैं यह करूँगा।’ या तुमको केवल यह कहना
चाहिए ‘नहीं, मैं यह नहीं करूंगा।’ इससे अधिक कुछ भी कहोगे तो जो
कहोगे वह ठीक नहीं है और तुम कहीं न कहीं शैतान के प्रभाव में हो।

बदला लेने की सोचो भी मत

[38]“तुमने सुना है कि यह कहा गया था, ‘अगर तुम्हारी आंख पर कोई
चोट लगाए, तो तुम भी उसकी आंख पर चोट करो। और अगर तुम्हारे
दांत पर कोई चोट लगाए, तो तुम भी उसके दांत पर चोट करो।’ [39]किंतु
मैं तुमसे कहता हूँ, दुश्मन से बदला लेने की सोचो भी मत, परंतु जो
तुम्हारे दाएँ गाल पर थप्पड़ मारे तो दूसरा गाल भी उसकी ओर कर
दो। [40]जो तुम पर मुकद्दमा करके तुमसे कुछ लेना चाहे, तो उसे उसकी
माँग से अधिक दे दो। [41]यदि कोई अपना भारी सामान उठाकर तुम्हें
एक किलोमीटर लेकर चलने को मजबूर करे, तो खुशी-खुशी उसके
साथ दो किलोमीटर चले जाओ।* [42]जो तुमसे कुछ माँगे उसे दो और
जो तुमसे उधार लेना चाहे उससे मुँह न मोड़ो।

5:33 लेवी 19:12; जनगणना 30:2 **5:38** निर्गमन 21:24; लेवी 24:20 * **5:41** *दो किलोमीटर* - रोम सैनिक को यह अधिकार था कि वह किसी व्यक्ति को अपना सामान को एक किलोमीटर तक ले जाने के लिए मजबूर कर सकता था।

दोस्तों और शत्रुओं से प्रेम करना

[43]“तुमने सुना है कि यह कहा गया था, ‘अपने दोस्तों से प्रेम करना
और अपने शत्रु से नफरत।’ [44]पर मैं तुमसे कहता हूँ, अपने दोस्तों के
साथ-साथ अपने शत्रुओं से भी प्रेम करो। तुम्हारे साथ बुरा व्यवहार
करने वालों के लिए प्रार्थना करो कि परमात्मा उनका भला करें। [45]इस
तरह, तुम दिखा सको कि तुम पिता परमात्मा की संतान हो, क्योंकि
परमात्मा अच्छे और बुरे दोनों लोगों पर समान रूप से सूर्य उदय
करते हैं तथा धर्मी और अधर्मी दोनों पर बारिश बरसाते हैं। [46]यदि तुम
केवल उन्हीं से प्रेम करो जो तुमसे प्रेम करते हैं तो इसमें क्या बड़ी
बात है? क्या बेईमान व्यापारी* यह नहीं करते? [47]यदि तुम केवल
अपने समाज के लोगों को ही नमस्कार करते हो तो इसमें भी क्या
बड़ी बात है? क्या दूसरे समाज के लोग ऐसा नहीं करते? [48]इसलिए
तुम हर तरह से अच्छे बनो, क्योंकि तुम्हारे पिता परमात्मा हर तरह से
अच्छे हैं।”

6

दान देने का सही तरीका

[1]गुरु येशु ने आगे कहा, “ध्यान रहे कि परमात्मा की आज्ञाओं का
पालन केवल दिखावे के लिए मत करो, नहीं तो तुम अपने पिता
परमात्मा से इनाम न पाओगे।

[2]“जब तुम गरीबों को दान दो तब इसका ढिंढोरा न पीटो, जैसे
ढोंगी सत्संग भवनों और गलियों में अपना ढिंढोरा पिटते हैं ताकि
लोग उनकी बड़ाई करें। मैं तुमसे सच कहता हूँ, उन्होंने बाहरी
दिखावा करके केवल लोगों को ही प्रभावित किया। यही उनका
इनाम है।

[3]“जब तुम गरीबों को देते हो, तो किसी को भी इसके बारे में पता न
चले, [4]तब तुम्हारा दान गुप्त रहेगा। और तुम्हारे पिता परमात्मा जो सब
कुछ जानते हैं, तुम्हें इनाम देंगे।

5:43 लेवी 19:18,33 *** 5:46** *बेईमान व्यापारी* - या, “टैक्स लेने वाले।” इस समय के सबसे बेईमान व्यापारियों में से थे।

गुप्त प्रार्थना

5“परमात्मा से प्रार्थना करते समय ढोंगीयों की तरह व्यव्हार न करो,
क्योंकि ढोंगीयों को सत्संग भवनों और नुक्कड़ों पर खड़े होकर प्रार्थना
करना बहुत पसंद है कि लोग उन्हें देखें। मैं तुमसे सच कहता हूँ, उन्होंने
बाहरी दिखावा करके केवल लोगों को ही प्रभावित किया। यही
उनका इनाम है।
6“लेकिन तुम, जब पिता परमात्मा से प्रार्थना करते हो, तो ऐसी जगह
पर जाओ जहाँ तुम अकेले हो। परमात्मा तुम्हें उस समय भी देख सकते
हैं जब तुम्हें कोई नहीं देख रहा, और वह तुम्हें इनाम देंगे।
7“प्रार्थना करते समय दूसरे समाज के बहुत से लोगों के समान
बेमतलब लम्बी प्रार्थना मत करो, क्योंकि वे सोचते हैं कि उनके
देवी-देवता उनकी लम्बी प्रार्थनाओं से खुश होकर उनकी सुन लेंगे।
8तुम उनकी तरह प्रार्थना मत करो, क्योंकि तुम्हारे पिता परमात्मा
तुम्हारे माँगने से पहले ही जानते हैं कि तुम्हें किन चीज़ों की ज़रूरत है।

प्रभु द्वारा प्रार्थना करना सिखाना

9“तो तुम इस प्रकार प्रार्थना किया करो,
‘हे हमारे पिता परमात्मा,
आपके पवित्र नाम का आदर हो।
10 आप का साम्राज्य आए।
आप की इच्छा जैसे परमस्वर्ग में पूरी होती है,
वैसे ही पृथ्वी पर भी हो।
11 जितने भोजन की हमें रोज़ाना ज़रूरत है,
उतना हमें दीजिए।
12 हमारे बुरे कर्मों का खाता मिटा दीजिए,
जैसे हमने भी उन्हें माफ किया है
जो हमारे विरुद्ध पाप करते हैं।
13 हमें पाप में फँसने की परीक्षा से बचाइए
और शैतान की चालों से भी हमें बचाइए।’+
14“यदि तुम उन लोगों के पाप माफ करते हो जो तुम्हारे विरुद्ध पाप
करते हैं, तो तुम्हारे पिता परमात्मा तुम्हारे बुरे कर्मों का खाता मिटा

देंगे। [15]परंतु यदि तुम लोगों के पाप माफ नहीं करोगे, तो तुम्हारे पिता
परमात्मा भी तुम्हारे बुरे कर्मों का खाता नहीं मिटाएँगे।

उपवास रखने का सही तरीका

[16]"जब तुम उपवास रखो, तब ढोंगीयों के समान तुम्हारे चेहरे से उदासी
न छाई रहे, क्योंकि वे अपना चेहरा उदास रखते हैं जिससे वे लोगों को
उपवासी दिखाई दें। मैं तुमसे सच कहता हूँ, उन्होंने बाहरी दिखावा करके
केवल लोगों को ही प्रभावित किया। यही उनका इनाम है। [17]परंतु जब
तुम उपवास रखते हो, अपना चेहरा धो लो और रोज़ाना की तरह अपने
आप को तैयार करो [18]जिससे लोगों को नहीं, केवल परमात्मा को पता
हो कि तुमने उपवास रखा है। वह अदृश्य अंतर्यामी हैं और जो कुछ भी
अच्छे काम तुम गुप्त रूप से करते हो इसके लिए वह तुम्हें इनाम देंगे।

परमात्मा और पैसे में से एक को चुनना होगा

[19]"पृथ्वी पर अपने लिए पैसे इकट्ठा मत करो जहाँ कीड़े और ज़ंग
उसे बेकार कर देते हैं और चोर उसे चुरा लेते हैं। [20]परंतु तुम परमस्वर्ग
में अपने लिए आत्मिक धन इकट्ठा करो जहाँ न तो कीड़े और ज़ंग
उसे बेकार कर सकते हैं और न ही चोर उसे चुराते हैं। [21]क्योंकि जहाँ
तुम्हारा पैसे है, वहीं तुम्हारा मन भी लगा रहेगा।

[22]"तुम्हारी आँखें तुम्हारे शरीर के लिए एक खिड़की की तरह हैं
जिससे रोशिनी आती है। जब तुम्हारी आँखें शुद्ध होती हैं,* तो तुम्हारा
शरीर अद्भुत प्रकाश से भर जाता है। [23]परंतु यदि तुम्हारी आँख अशुद्ध
है, तो तुम्हारा शरीर अंधकार से भरा हुआ है। तो यदि जो प्रकाश
तुम्हारे भीतर होना चाहिए वह नहीं है, तब तुम गहरे अंधकार में हो!

[24]"कोई दो मालिकों की सेवा नहीं कर सकता, क्योंकि वह एक से
नफरत करेगा और दूसरे से प्रेम करेगा, या एक से ईमानदार रहेगा और
दूसरे से बेइमानी करेगा। तुम परमात्मा और पैसे दोनों की भक्ति नहीं
कर सकते।

---

* **6:22** *तुम्हारी आँखें शुद्ध होती हैं* - यहूदी कहावतों में, "शुद्ध आँखें" वे आँखें हैं जो गरीब लोगों की ज़रूरतों को देखती हैं और उनकी मदद करती हैं।

चिंता से मुक्ति

25 "इसलिए मेरी बात ध्यान से सुनो, अपने जीवन के लिए चिंता
न करना कि तुम क्या खाओगे और क्या पियोगे और न ही शरीर के
लिए कि क्या पहनोगे। क्या भोजन के मुकाबले जीवन, और कपड़ों
के मुकाबले शरीर अधिक कीमती नहीं है? 26 आकाश के पक्षियों को
देखो। वे न बोते हैं, न काटते हैं, और न ही अनाज घरों में जमा करते
हैं, परंतु तुम्हारे पिता परमात्मा उनका पालन-पोषण करते हैं। क्या तुम
उनसे अधिक कीमती नहीं हो?
27 "चिंता करके तुम में से कौन व्यक्ति अपनी उम्र में एक पल भी
बढ़ा सकता है? 28 कपड़ों के लिए तुम चिंता क्यों करते हो? जंगली
फूलों से सीखो कि वे किस प्रकार बढ़ते हैं। वे अपने कपड़े बनाने के
लिए कुछ मेहनत नहीं करते। 29 लेकिन मैं तुमको बताता हूँ कि राजा
शलोमो ने इन फूलों में से एक के समान भी सुंदर कपड़े नहीं पहने
होंगे! 30 मैदान में अपने आप उगने वाली हर चीज को परमात्मा ऐसी
सुंदरता प्रदान करते हैं, भले ही वह आज मैदान में हो और कल आग
में फेंक दी जाएगी। परमात्मा निश्चित रूप से तुम्हारे जीवन को और भी
अधिक सुंदर बनाएँगे! तो भी तुम्हारी आस्था इतनी कम क्यों है?
31 "इसलिए चिंता मत करो! यह न कहो कि 'हम क्या खाएँगे?' या 'क्या
पिएँगे?' या 'क्या पहनेंगे'? 32 क्योंकि इन सब चीज़ों की चिंता वे लोग
करते हैं जो परमात्मा को नहीं जानते। परंतु तुम्हारे पिता परमात्मा जानते हैं
कि तुम्हें इन सबकी ज़रूरत है। 33 पहले परमात्मा को अपना राजा मानकर
उनके आज्ञाओं का पालन करो तो ये सब चीज़ें भी तुम्हारी हो जाएँगी।
34 "भविष्य की चिंता न करना, क्योंकि भविष्य अपनी चिंता आप
कर लेगा। आज के लिए आज का ही दुख बहुत है।

7

पहले अपने गिरेबान में झाको

1 "तुम किसी के अच्छे और बुरे होने का फैसला मत करो। फैसला
करना परमात्मा का काम है। 2 क्योंकि परमात्मा तुम्हें भी उसी तरह से
आकेंगे जैसे तुम दूसरों को आंकते हो। और जिस तराज़ू से तुम तौलते
हो उसी तराज़ू से परमात्मा तुम्हारे लिए भी तौलेंगे।

[3]“तुम दूसरों की आँख में तिनका क्यों ढूँढ़ते हो जबकि अपनी आँख
में पड़ी मोटी लकड़ी पर तुम्हारा ध्यान नहीं जाता? [4]इस हालत में
क्या तुम दूसरों से कैसे कह सकते हो कि ‘आओ, मैं तुम्हारी आँख से
तिनका निकाल दूँ’ जबकि स्वयं तुम्हारी आँख में मोटी लकड़ी है? [5]अरे
ढोंगी, पहले अपनी आंख से मोटी लकड़ी निकालो, तभी तुम दूसरों
की आंख का तिनका निकालने के लिए ठीक-ठीक देख सकोगे।
[6]“जो चीज़ें परमात्मा की हैं उन्हें जंगली कुत्तों की तरह व्यवहार
करने वाले लोगों को मत दो वरना वे मुड़कर तुम पर हमला कर देंगे।
और सूअरों की तरह व्यवहार करने वाले लोगों के आगे अपने कीमती
मोती न फेंको क्योंकि वे उनको रौंद देंगे।

परमात्मा से मांगो

[7]“माँगो, तो तुम्हें दिया जाएगा। ढूँढो, तो तुम पाओगे। खटखटाओ,
तो तुम्हारे लिए दरवाज़ा खोला जाएगा। [8]जो कोई माँगता है, उसे
मिलता है। जो ढूँढता है, वह पाता है और जो दरवाज़ा खटखटाता है,
उसके लिए खोला जाता है। [9]तुममें से ऐसा कौन है कि यदि उसका पुत्र
उससे रोटी माँगे तो क्या वह उसे पत्थर देगा, [10]या खाने को मछली माँगे
तो क्या वह उसे साँप देगा? [11]जब तुम पापी होते हुए भी अपने बच्चों
को अच्छी-अच्छी चीज़ें देना जानते हो, तो तुमसे कहीं अधिक तुम्हारे
पिता परमात्मा, अपने माँगने वालों को अच्छी-अच्छी चीजें क्यों न
देगा?

मोक्ष का मार्ग सकरा है

[12]“जैसा तुम चाहते हो कि लोग तुम्हारे साथ बर्ताव करें वैसा ही तुम
भी उनके साथ बर्ताव करो, क्योंकि मोशे के नियम और परमात्मा के
प्रवक्ताओं की यही शिक्षा है।
[13]“सकरे दरवाज़े से अंदर जाओ क्योंकि विनाश की ओर ले जाने
वाला दरवाज़ा चौड़ा है, और वहाँ जाने वाले रास्ते पर जाना आसान
है। बहुत सारे लोग उस चौड़े दरवाज़े से जाना चुनते हैं। [14]लेकिन
मोक्ष प्राप्त करने का दरवाज़ा बहुत संकरा है और मार्ग कठिन है, और
केवल कुछ ही लोग इसे प्राप्त कर पाते हैं।

फल से पेड़ की पहचान

[15]“झूठे लोग जो अपने आप को परमात्मा का प्रवक्ता कहते हैं उनसे
सावधान! वे तुम्हारे पास भेड़ों के भेस में आते हैं, पर अंदर से वे फाड़
खाने वाले भेड़िए हैं। [16]उनके कर्मों से तुम उन्हें पहचान पाओगे। क्या
लोग काँटों से भरी झाड़ियों से अंगूर और काँटे दार पौधे से अंजीर
का फल इकट्ठा करते हैं? [17]इसी तरह अच्छे पेड़ में अच्छे फल लगते
हैं और बुरे पेड़ में बुरे फल। [18]यह हो नहीं सकता कि अच्छे पेड़ में
बुरे फल लगें और बुरे पेड़ में अच्छे फल। [19]जो पेड़ अच्छा फल नहीं
देता, वह काटा और आग में झोंका जाता है। [20]इस प्रकार तुम झूठे
प्रवक्ताओं के कामों से उन्हें पहचान सकते हो।

कथनी और करनी

[21]“हर एक व्यक्ति जो मुझे ‘प्रभु, प्रभु’ कहता है परंतु जो परमात्मा
चाहते हैं वह नहीं करता, वह परमस्वर्ग के साम्राज्य में नहीं जा
सकता। परंतु जो व्यक्ति मेरे पिता परमात्मा की इच्छा को पूरा करता
है, वह व्यक्ति ही परमात्मा के साम्राज्य में आ सकता है। [22]अच्छे और
बुरे कर्मों के न्याय के दिन मुझसे बहुत लोग यह कहेंगे, ‘प्रभु, प्रभु!
क्या हमने आपके नाम से भविष्यवाणियाँ नहीं कीं? क्या हमने आपके
नाम से अशुद्ध आत्माओं को नहीं निकाला? क्या हमने आपके नाम से
अनेक चमत्कारी काम नहीं किए?’ [23]तब मैं उनसे साफ-साफ कह दूँगा,
‘मेरा तुमसे कुछ लेना-देना नहीं। अधर्मियो, मुझसे दूर होओ।’

केवल सुनो नहीं, उस पर चलो भी

[24]“जो व्यक्ति मेरी इन बातों को सुनता और उन पर चलता है, वह उस
समझदार मनुष्य के समान है जिसने अपना घर मज़बूत और गहरी नीवं
पर बनाया। [25]बारिश हुई, बाढ़ आई, आँधी चली और उस घर से टकराई,
तो भी वह नहीं गिरा, क्योंकि उसकी नींव गहरी और मज़बूत थी।
[26]“परंतु जो व्यक्ति मेरी इन बातों को सुनता है और उन पर नहीं
चलता, वह उस मूर्ख मनुष्य के समान है जिसने अपने घर की नींव रेत

7:23 भजन शास्त्र 6:8

पर बनाई। 27जब बारिश हुई, बाढ़ आई, आँधी चली और उस घर से
टकराईं, तो वह गिर पड़ा और उसका पूरी तरह विनाश हो गया।"
28जब गुरु येशु यह उपदेश दे चुके तब भीड़ उनकी शिक्षा सुनकर
हैरान हो गई 29उनके उपदेशों से साफ पता चलता था कि उन्हें
परमात्मा ने अधिकार दिया हुआ है। उनके उपदेश अन्य धर्मगुरुओं जैसे
नहीं थे।

8

कोढ़ी को छू कर स्वस्थ करना

1जब गुरु येशु पहाड़ी से उतरे तब बड़ी भीड़ उनके पीछे हो ली। 2उस
समय एक कोढ़ी उनके पास आया और घुटने टेककर कहने लगा, "हे
प्रभु, यदि आप की कृपा हो जाए तो मैं कोढ़ से शुद्ध हो जाऊँगा।"
3प्रभु येशु ने हाथ बढ़ाकर उसे छुआ और कहा, "मेरी कृपा तुम पर
हो गयी है। तथास्तु।" और वह तुरंत ठीक हो गया। 4प्रभु येशु ने उससे
कहा, "देखो, किसी से न कहना, किंतु जाओ, अपने आप को पुरोहित
को दिखाओ ताकि वह देख सके कि तुम ठीक हो गए हो। तब
परमात्मा के प्रवक्ता मोशे के आदेश के अनुसार मंदिर में भेंट चढ़ाओ
ताकि लोगों को भी पता चले कि तुम कोढ़ से पूरी तरह से ठीक हो
गए हो।"

हैरान कर देने वाली आस्था

5जब प्रभु येशु कफरनहूम शहर में आए तब एक रोम सम्राट के एक
सेना-अधिकारी ने आकर उनसे मदद माँगी। 6"प्रभु, मेरा सेवक घर में
बहुत बीमार पड़ा है, उसे लकवा मार गया है।"
7प्रभु येशु ने उससे कहा, "मैं आकर उसे ठीक करूँगा।"
8सेना-अधिकारी ने कहा, "प्रभु, मैं इस योग्य नहीं कि आप मेरे घर
आए। यदि आप यहाँ से ही केवल आदेश दे देंगे तो मेरा सेवक ठीक
हो जाएगा। 9मैं अपने से बड़े अधिकारियों के अधीन हूँ, और सौ
सैनिक मेरे अधीन हैं। मैं एक सैनिक से कहता हूँ, 'जा' तो वह जाता है,
और दूसरे सैनिक से कहता हूँ, 'आ' तो वह आता है। मैं अपने सेवक
से कहता हूँ, 'यह कर' तो वह करता है।"

[10]प्रभु येशु को यह सुनकर हैरानी हुई और उन्होंने अपने साथ चलने वाली भीड़ से कहा, “मैं तुमसे सच कहता हूँ, मैंने पूरे इज़राएल देश में भी ऐसी गहरी आस्था किसी में नहीं पाई। [11]और मैं तुमसे कहता हूँ की पूर्व और पश्चिम के देशों से बहुत से ऐसे लोग जो यहूदी समाज से नहीं हैं आएँगे और कुलपिता अब्राहम, इसहाक और याकोब के साथ परमात्मा के परमस्वर्ग के साम्राज्य में भोजन करने बैठेंगे। [12]परंतु बहुत से यहूदी जिनके लिए परमात्मा का साम्राज्य तैयार किया गया था, अंधकार में डाल दिए जाएँगे। वहाँ वे रोएँगे और गुस्से और दर्द से दांत पीसेंगे।”

[13]फिर प्रभु येशु ने सेना-अधिकारी से कहा, “घर जाओ, जैसी तुम्हारी आस्था है, वैसा ही तुम्हारे लिए होगा।” उसी समय उसका सेवक ठीक हो गया।

बिमारियों और अशुद्ध आत्मा से छुटकारा

[14]इस घटना के कुछ समय बाद प्रभु येशु पतरस के घर आए और देखा कि उसकी सास बुखार में बिस्तर पर पड़ी है। [15]प्रभु येशु ने पतरस की सास का हाथ छुआ और उसका बुखार तुरंत उतर गया और वह उठकर उनकी सेवा-सत्कार करने लगी।

[16]उसी शाम लोग अनेक अशुद्ध आत्माओं से जकड़े व्यक्तियों को प्रभु येशु के पास लाए। प्रभु येशु ने अशुद्ध आत्माओं उन लोगों के शरीर से बाहर निकल जाने की आज्ञा दी और बिमारों को केवल कहने भर से ठीक कर दिया। [17]इसलिए परमात्मा द्वारा किया गया वादा पूरा हुआ जैसा कि उनके प्रवक्ता यशायाह ने कहा था कि

“उन्होंने हमारी बीमारियों को ठीक किया
 और हमें हमारे रोगों से मुक्त कर दिया।”

पारिवारिक कर्तव्यों से बढ़कर क्या है?

[18]एक दिन जब गुरु येशु ने अपने चारों ओर बड़ी भीड़ को देखा तो शिष्यों को झील की दूसरी ओर जाने का आदेश दिया।

8:17 यशायाह 53:4

[19]तब एक धर्मगुरु उनके पास आकर बोला, “गुरुजी, जहाँ कहीं
आप जाएँगे मैं आपका शिष्य बनकर साथ चलूँगा।”
[20]प्रभु येशु ने उससे कहा, “लोमड़ियों की माँदें हैं, और आकाश के
पक्षियों के घोंसले, परंतु तेजस्वी मानव-पुत्र के पास अपना कोई घर
नहीं जहाँ वह आराम कर सके।”
[21]एक अन्य शिष्य उनसे कहने लगा, “प्रभु, अभी मुझे जाने दीजिए
कि मैं अपने बूढ़े पिता की देख-भाल करूँ। उनकी मृत्यु के बाद मैं
आपके साथ चलूँगा।”
[22]परंतु प्रभु येशु ने उससे कहा, “पारिवारिक कर्तव्यों को जिनको
निभाना है, वे निभाते रहेंगे। मैं चाहता हूँ कि तुम अभी मेरे साथ चलो।”

तूफान ने गुरु येशु की आज्ञा मानी

[23]जब गुरु येशु और उनके शिष्य नाव में जा रहे थे, [24]तो अचानक
झील में बड़ा तूफान उठा, यहाँ तक कि नाव में लहरों का पानी भरने
लगा। इस पर भी गुरु येशु की नींद नहीं खुली। [25]शिष्यों ने आकर उन्हें
जगाया और चिल्लाए, “प्रभु, हमें बचाइए! हम डूब कर मर जाएँगे!”
[26]प्रभु येशु बोले, “तुम इतने डरे हुए क्यों हो? मुझमें तुम्हारी आस्था
बस इतनी ही है?” तब प्रभु येशु ने उठकर तूफान और लहरों को
आदेश दिया कि वे थम जाएँ। वे तुरंत थम गए और बड़ी शांति छा
गई।
[27]शिष्य हैरान हो कहने लगे, “यह कैसे अद्‌भुत मनुष्य हैं कि तूफान
और लहरें भी इनका कहना मानते हैं?”

अशुद्ध आत्माएँ परमात्मा-पुत्र को पहचानकर डर गईं

[28]जब प्रभु येशु अपने शिष्यों के साथ झील की दूसरी ओर गदरेनियों
के इलाके* में आए तब उन्हें अशुद्ध आत्माओं से जकड़े हुए दो मनुष्य
मिले जो शव रखने वाली गुफाओं में रहते थे। वे इतने खतरनाक थे कि
कोई व्यक्ति उस रास्ते से निकल नहीं सकता था।

---

* **8:28** *गदरेनियों के इलाके* - (या, “गैरगसिनियों के प्रदेश”) इस इलाके में वे लोग रहा करते थे जो यहूदी समाज से नहीं थे।

29वे अचानक प्रभु येशु पर चिल्ला उठे, "हे परमात्मा के पुत्र, हमसे
आपको क्या काम? क्या आप समय से पहले ही हमारा न्याय करने
और दुख देने आ गए?"
30वहाँ से कुछ दूर पर बहुत से सूअरों का एक झुंड चर रहा था।
31अशुद्ध आत्माओं ने विनती की, "यदि आप हमें निकाल ही रहे हैं तो
हमें सूअरों के झुंड में भेज दीजिए।"
32प्रभु येशु ने उनसे कहा, "जाओ!" और वे तुरंत मनुष्यों में से
निकलकर सूअरों के झुंड में समा गईं और सूअरों का झुंड टीले से नीचे
झील की ओर भागा और डूब मरा।
33तब यह देखकर सूअरों के चरवाहे नगर की ओर भागे और सब
लोगों को उन अशुद्ध आत्माओं से जकड़े दोनों मनुष्यों के साथ हुई
घटना के बारे में बताया। 34इस पर सारा नगर प्रभु येशु से मिलने निकल
आया और जब लोगों ने उन्हें देखा तब वे उनसे विनती करने लगे,
"कृपया, हमारे प्रदेश से चले जाइए।"

9

प्रभु येशु को पाप मिटाने का अधिकार

1प्रभु येशु नाव पर चढ़कर झील की दूसरी ओर वापस अपने नगर में
आए। 2उसी समय कुछ लोग लकवा मारे बीमार को उनके पास लाए
जो चटाई पर पड़ा रहता था। जब प्रभु येशु ने उसकी और उसके दोस्तों
की आस्था को देखा तो लकवा मारे बीमार से कहा, "मित्र, खुश रहो।
तुम्हारे बुरे कर्मों का खाता मिटा दिया गया है!"
3इस पर कुछ धर्मगुरु मन में सोचने लगे, "यह परमात्मा का अपमान
करता है! केवल परमात्मा को छोड़ और कौन बुरे कर्मों का खाता
मिटा सकता है?"
4परंतु प्रभु येशु ने उनके मन के विचार जानकर कहा, "तुम अपने
मन में मेरे बारे में बुरे विचार क्यों ला रहे हो? 5मेरे लिए कौन सी बात
कहना ज़्यादा आसान है? यह कि तुम्हारे बुरे कर्मों का खाता मिट गया,
या यह कहना कि उठो और चलो-फिरो? 6मैं चाहता हूँ कि तुम लोग
समझ जाओ कि मानव-पुत्र को पृथ्वी पर बुरे कर्मों के खाते को मिटाने
का अधिकार है।" तब प्रभु येशु ने लकवे के मारे को देखा और बोले,

"उठो, अपनी चटाई उठाओ और अपने घर जाओ।" [7]तो वह उठा और
अपने घर चला गया। [8]लोग यह देखकर श्रद्धा से भर गए और इस बात
के लिए परमात्मा का गुणगान करने लगे कि उन्होंने क्योंकि मनुष्यों
को ऐसा अद्‌भुत अधिकार दिया है।

मत्तियाह का गुरु येशु की शरण में आना

[9]वहाँ से आगे बढ़ने पर प्रभु येशु ने मत्तियाह* नामक एक मनुष्य को
टैक्स लेने की चौकी पर बैठे देखा। उन्होंने उससे कहा, "आओ और
मेरे शिष्य बनों।" मत्तियाह उठा और गुरु येशु के साथ चल दिया।
[10]गुरु येशु और उनके शिष्य को मत्तियाह ने अपने घर भोजन करने
के लिए बुलाया। जब वे भोजन करने बैठे तब अनेक बेईमान टैक्स
लेने वाले और दूसरे पापी लोग भी भोज में शामिल हुए। [11]यह देखकर
कुछ फरीसी पंथ के लोगों ने गुरु येशु के शिष्यों से कहा, "तुम्हारे गुरु
बेईमान टैक्स लेने वालों और पापियों के साथ क्यों उठते बैठते है?"
[12]गुरु येशु उनकी बात सुनकर बोले, "ठीक लोगों को डॉक्टर
की ज़रूरत नहीं होती, पर बीमारों को होती है। [13]जाकर सीखो कि
परमात्मा-ग्रंथ में इस बारे में क्या लिखा है, 'मैं, परमात्मा, बलि नहीं
चाहता, परंतु दया चाहता हूँ।' मैं नेक लोगों को नहीं, परंतु पापियों को
अपना शिष्य बनाने के लिए आया हूँ।"

पुराने रीति-रिवाजों पर गुरु का नया प्रकाश

[14]एक दिन समर्पण-स्नान दाता योहन के शिष्यों ने प्रभु येशु के पास
आकर उनसे पूछा, "क्या कारण है कि हम और फरीसी पंथ के लोग
तो नियमित रूप से+ व्रत रखते हैं, पर आपके शिष्य व्रत नहीं रखते?"
[15]गुरु येशु ने उनसे कहा, "जब लोग दूल्हे के साथ शादी में होते हैं तो
वे व्रत के बारे में सोचते भी नहीं हैं। पर समय आएगा जब दूल्हा उनसे
छीन लिया जाएगा, तब उस समय वे व्रत रखेंगे।
[16]"कोई भी नए कपड़े का टुकड़ा पुराने कपड़े में नहीं लगाता। यदि
वह ऐसा करता है, तो नया कपड़े का टुकड़ा धोए जाने पर सुकड़

---

* **9:9** *मत्तियाह* - मत्तियाह "लेवी" नाम से भी जाना जाता है। **9:13** होशे 6:6

जाएगा और पुराने कपड़े से अलग हो जाएगा, जिससे पहले से भी बड़ा छेद हो जाएगा।

[17]"इसी तरह कोई भी नए अंगूर को रस को पुरानी सख्त मश्कों में नहीं रखता है। यदि वह इसे रखेगा, तो नए अंगूर के रस का झाग इतना उफन जाएगा की पुरानी सख्त मश्कों को फाड़ देगा। इसके बजाय नए अंगूर के रस को नए, नरम और लचीली मश्कों में रखा जाना चाहिए। इस प्रकार अंगूर-रस और मश्क दोनों सुरक्षित रहते हैं।"

प्रभु येशु पर आस्था द्वारा रोग और मृत्यु पर विजय

[18]जब प्रभु येशु योहन के शिष्यों से बात कर रहे थे कि अचानक यहूदी सत्संग भवन के एक धर्मगुरु आए और उनके सामने घुटने टेककर बोले, "मेरी बेटी अभी-अभी मरी है। फिर भी आप चलकर अपना हाथ उस पर रख दीजिए, तो वह ज़िन्दा हो जाएगी।"

[19]गुरु येशु उठे और अपने शिष्यों के साथ उस धर्मगुरु के घर की
ओर चले। [20]एक स्त्री थी जो मासिक धर्म में अधिक खून बहने से
पीड़ित थी और इसको ऐसा बारह साल से हो रहा था। वह पीछे से
आई और उसने प्रभु येशु के चोगे के सिरे को छू लिया। [21]वह अपने
मन में कह रही थी, "यदि मैं इनके कपड़े को ही छू लूँगी तो ठीक हो
जाऊँगी।"

[22]प्रभु येशु ने मुड़कर उसे देखा और बोले, "बेटी, खुश हो जाओ! मुझपर तुम्हारी आस्था ने तुम्हें ठीक कर दिया है।" और उसी समय से वह स्त्री ठीक हो गई।

[23]जब प्रभु येशु धर्मगुरु के घर पहुँचे तो उन्होंने बाँसुरी बजाने वालों
को शोक भरी धुन बजाते और भीड़ को रोते चिल्लाते देखा। [24]वह बोले,
"हट जाओ, बालिका मरी नहीं, परंतु सो रही है।" यह सुनकर लोग प्रभु
येशु का मज़ाक उड़ाने लगे। [25]पर जब भीड़ को घर से हटा दिया गया
तब प्रभु येशु घर के अंदर गए। उन्होंने बालिका का हाथ पकड़ा और
वह उठ बैठी। [26]इस चमत्कार की खबर उस जिले के कोने-कोने में
फैल गई।

अंधों को ठीक करना

27प्रभु येशु वहाँ से आगे बढ़े तो दो अंधे यह पुकारते हुए उनके पीछे-पीछे चले, "हमारे मुक्तिदाता राजा दाविद के वंशज, हम पर दया कीजिए!"

28जब प्रभु येशु घर में पहुँचे तब वे अंधे उनके पास आए। प्रभु येशु ने उनसे पूछा, "क्या तुम्हें विश्वास है कि मैं तुम्हें ठीक कर सकता हूँ?"

उन्होंने कहा, "हाँ, प्रभु।"

29तब प्रभु येशु ने उनकी आँखें छूकर यह कहा, "तुम्हारी आस्था के
अनुसार तुम्हें फल मिले।"
30उनकी आँखें ठीक हो गईं! तो प्रभु येशु ने
उन्हें चेतावनी दी, "सावधान, यह बात किसी से न कहना।"
31परंतु घर
से निकलकर उन्होंने अपने ठीक होने की बात सारे जिले में फैला दी।

गूँगा व्यक्ति बोलने लगा

32जब ये दोनों व्यक्ति प्रभु येशु के वहाँ से बाहर निकल ही रहे थे तो
उस समय लोग अशुद्ध आत्मा से जकड़े हुए एक गूँगे व्यक्ति को प्रभु
येशु के पास लाए।
33प्रभु येशु ने उस आत्मा को निकाल दिया और वह
गूँगा व्यक्ति बोलने लगा! इस पर भीड़ ने हैरान होकर कहा, "हमारे
इज़राएल देश में इस प्रकार का चमत्कार कभी नहीं देखा गया।"

34परंतु फरीसी पंथ के लोगों ने प्रभु येशु के बारे में यह कहा, "वह तो अशुद्ध आत्माओं के मुखिया की मदद से अशुद्ध आत्माओं को निकालता है।"+

प्रभु येशु की दया भरी योजना

35तब प्रभु येशु सब नगरों और गाँवों में जा-जाकर यहूदी सत्संग
भवनों में उपदेश देते, परमात्मा के साम्राज्य का शुभ संदेश सुनाते और
हर प्रकार के रोगों और बीमारियों को दूर करते थे।
36भीड़ को देखकर
प्रभु येशु को उन पर दया आई, क्योंकि उन लोगों की बहुत समस्याएँ
थी पर कोई उनकी मदद नहीं करता था। ये लोग उन भेड़ों के समान
थे जिनका कोई चरवाहा न हो जो उनकी देख-भाल कर सके।
37तब
गुरु येशु ने अपने शिष्यों से कहा, "पकी फसल तो बहुत है परंतु कटाई
के लिए मजदूर थोड़े हैं।
38इसलिए खेत के मालिक से प्रार्थना करो कि
वह अपनी फसल काटने के लिए और मजदूर खेत में भेजे।"

10
प्रभु येशु अपने राजदूतों को पहला कार्य सौंपते हैं

[1]तब प्रभु येशु ने अपने बारह शिष्यों को बुलाकर उन्हें लोगों में से
अशुद्ध आत्माओं को निकालने का और उनके सब रोगों और बीमारियों
को दूर करने का अधिकार दिया। [2]इन बारह राजदूतों के नाम ये हैं -
शिमोन जो पतरस भी कहलाता है, उसका भाई अंदरियास, ज़बदियाह
के पुत्र याकोब और योहन, [3]फिलिपस, बरतोलोमै, थोमस, टैक्स
लेनेवाला मत्तियाह, हलफियस का पुत्र याकोब, थदयस,+ [4]देशभक्त
शिमोन, और यहूदा इस्करियोत जिसने प्रभु येशु को धोखा दिया।
[5]इन बारह को प्रभु येशु ने यह आज्ञा देकर भेजा, “उनके पास मत
जाना जो यहूदी समाज से नहीं हैं, और न ही समेरिया समाज के लोगों
के नगरों में जाना, [6]परंतु इसके बजाय इज़राएल के लोगों के पास
जाना। वे उन भेड़ों की तरह हैं जो अपने चरवाहे के पास से भटक
गई हैं। [7]जब तुम इज़राएल के लोगों के पास जाओ तो इस संदेश को
बताना, ‘जो परमस्वर्ग में रहते है उनका शासन शुरू होने वाला है।’
[8]बीमारों को ठीक करना, मृत लोगों को ज़िन्दा करना, कोढ़ियों को
ठीक करना और अशुद्ध आत्माओं को निकालना। मैंने तुमको यह
शक्तियाँ बिना दाम लिए दीं हैं। तुम भी इसको बिना दाम दूसरों को
दो।
[9]“अपने साथ यात्रा में सोने, चाँदी और ताँबे के सिक्के न लो, [10]न
रास्ते के लिए झोला, न दो कुर्ते, न दो जोड़ी जूते और न ही लाठी। तुम
मेरे सेवक हो और तुम जहाँ भी जाओ तुम्हारा अच्छा सेवा-सत्कार
होना चाहिए। [11]जिस किसी नगर या गाँव में जाओ तो पहले पता
लगाओ कौन तुम्हें अपने घर बुलाना चाहता है, और विदा होने तक
वहीं रहो। [12]उस घर के अंदर जाते समय घर के लोगों को नमस्कार
करके आशीर्वाद दो। [13]अगर घर के लोग तुम्हारी अच्छी देख-भाल
करेंगे तो तुम्हारी शांति की प्रार्थना से उन्हें आशीर्वाद मिलेगा। और
अगर वे ऐसा नहीं करते हैं तो तुम्हारी प्रार्थना से उन्हें आशीर्वाद नहीं
मिलेगा। [14]जो लोग तुम्हारा स्वागत न करें और परमात्मा का संदेश न
सुनें, तो उस घर से या उस नगर से निकलते समय उधर मुड़कर भी न
देखना। यह उनके लिए एक चेतावनी होगी। [15]मैं तुम से सच कहता हूँ,

जिस नगर में तुम्हारा स्वागत न हो तो अच्छे और बुरे कर्मों के न्याय के दिन उस नगर के मुकाबले पापी सदोम और गमोरा जैसे क्षेत्रों की दशा अधिक ठीक होगी।

आनेवाला संकट

[16]"देखो, मैं तुमको भेड़ों के समान भेड़ियों के बीच भेज रहा
हूँ। इसलिए चालाकी से काम लो लेकिन कुछ बुरा मत करना।*
[17]सावधान रहो, क्योंकि कुछ लोग तुम्हें गिरफ्तार करवाकर अदालतों
में पेश करेंगे और सत्संग भवनों में तुम्हें कोड़े लगवाएँगे। [18]मेरे कारण
तुम शासकों और राजाओं के सामने भी पेश किए जाओगे। यह तुम्हारे
लिए एक अवसर होगा कि तुम शासकों और उन लोगों को, जो यहूदी
समाज से नहीं हैं, मुझमें अपनी आस्था के बारे में बताओ। [19]जब वे
तुम्हें गिरफ्तार करके शासकों के सामने पेश करें तो चिंता न करना कि
तुम क्या कहोगे, क्योंकि परमात्मा उस समय तुम्हें बताएँगे कि तुम्हें
क्या कहना है। [20]बोलने वाले तुम नहीं, परंतु तुम्हारे पिता परमात्मा की
पवित्र आत्मा है जो तुम्हारे द्वारा बोलता है।
[21]"भाई भाई को और पिता पुत्र को मारने की योजनाएँ बनाएँगे।
बेटे-बेटियाँ अपने माता-पिता के विरुद्ध बगावत करेंगे और उन्हें मरवा
डालेंगे। [22]मेरे नाम के कारण सब तुमसे नफरत करेंगे, परंतु जो अंत
तक अपनी आस्था में मज़बूत रहेगा, वह मुक्ति पाएगा। [23]जब लोग
तुम्हें एक नगर में सताएँ तब तुम दूसरे नगर में भाग जाना। मैं तुमसे सच
कहता हूँ कि तुम इज़राएल देश के सभी नगरों में अपना काम पूरा भी
नहीं कर पाओगे इससे पहले ही तेजस्वी मानव-पुत्र आ जाएगा।
[24]"शिष्य अपने गुरु से बड़ा नहीं होता, न ही नौकर अपने मालिक
से। [25]शिष्य को अपने गुरु के बराबर बनने से और सेवक का अपने
मालिक के बराबर बनने से संतुष्ट होना चाहिए। यदि लोगों ने मुझ घर
के मुखिया को शैतान बालज़बूल कह कर बुलाया है, तो मेरे परिवार के
लोगों को क्या कुछ न कहेंगे?

*** 10:16** - या, "तुम साँप जैसे चालाक तथा कबूतर जैसे भोले बनो" परंतु अर्थ यह है कि हम अपना काम चतुराई से करें, परंतु किसी को नुकसान न पहुंचाएँ।

लोगों से मत डरो

[26]"उन लोगों से मत डरो जो तुम्हारी बुराई करते हैं। परमात्मा उन
सभी पापों को दिखाएँगे जो लोगों ने छिपा रखें हैं। सबके छिपे हुए
पाप सामने आ जाएँगे। [27]जो बातें मैं तुम्हें गुप्त रूप से बताता हूँ, उसकी
घोषणा सबके बीच कर दो। जो बातें मैंने तुम्हें धीमी आवाज़ में कहीं हैं,
उन्हें सब लोगों के बीच ऊँची आवाज़ में सुनाओ। [28]लोगों से मत डरो
कि वे क्या कहेंगे और क्या करेंगे। वे तुम्हारे शरीर ही को मार सकते
हैं, आत्मा को नहीं। इसके बजाय, परमात्मा से डरो क्योंकि वह शरीर
को नष्ट कर सकते हैं और आत्मा को भी नरक में नष्ट कर सकते हैं।
[29]साधारण चिड़िया बहुत सस्ते दाम में बिकती है, एक पैसे में दो। फिर
भी परमात्मा की मर्ज़ी के बिना, उनमें से एक भी नहीं मरती। [30]परमात्मा
यह भी जानते हैं कि हमारे सिर पर कितने बाल हैं। [31]इसलिए, किसी
से भी मत डरो, क्योंकि तुम इन छोटे पक्षियों की तुलना में परमात्मा के
लिए कहीं अधिक किमती हो।

[32]"इसलिए, यदि तुम दूसरों के सामने खड़े होकर कहते हो कि तुम
मुझ पर आस्था रखते हो, तो मैं अपने पिता परमात्मा के सामने कहूँगा
कि तुम मेरे हो। [33]हालाँकि, यदि तुम दूसरों के सामने खड़े होकर कहोगे
कि तुम मुझपर आस्था नहीं रखते, तो मैं भी अपने पिता परमात्मा के
सामने कहूँगा कि तुम मेरे नहीं हो।

परमात्मा और प्रभु येशु की आज्ञा पालन पहली प्राथमिकता

[34]"यह न समझो कि मैं पृथ्वी पर लोगों के झगड़े निपटाने आया हूँ। मैं
झगड़े निपटाने नहीं परंतु मतभेद पैदा करने आया हूँ। [35]मैं आया हूँ कि
बेटे को उसके पिता के, बेटी को उसकी माता के और बहू को उसकी
सास के विरुद्ध कर दूँ। [36]तुम्हारे शत्रु तुम्हारे अपने लोग ही होंगे।*

[37]"जो व्यक्ति अपनी माँ या पिता को मुझसे अधिक प्रेम करता
है, वह मेरा शिष्य बनने के योग्य नहीं। जो पिता अपने बच्चों को मुझसे

10:36 मिका 7:6 * **10:36** *तुम्हारे शत्रु तुम्हारे अपने लोग ही होंगे* - प्रभु येशु परमात्मा के प्रवक्ता मीका का उदाहरण दे रहे हैं जहाँ परिवार के कुछ सदस्य परमात्मा की आज्ञा पालन करने को कोई महत्त्व नहीं देते हैं, वे उन परिवार के सदस्यों का विरोध करते हैं जो परमात्मा की आज्ञाओं का पालन करते हैं। प्रभु येशु के भक्त इस विरोध में भी प्रेम और मेल-मिलाप से ही चलते हैं।

अधिक प्रेम करता है, वह भी मेरा शिष्य बनने के योग्य नहीं। 38और
जो कोई भी अपना क्रूस उठाने और मेरे पीछे चलने को तैयार नहीं*
उसमें मेरा शिष्य बनने की योग्यता नहीं। 39जो कोई अपने जीवन को
पाना चाहता है, वह उसे गंवा देगा तथा जो कोई मेरे लिए अपने जीवन
की हानि उठाता है, तो वह अपने जीवन को पा लेगा।
40"जो कोई तुम्हारा स्वागत करता है, वह मेरा स्वागत करता है, और
जो मेरा स्वागत करता है वह मेरे भेजने वाले पिता परमात्मा का स्वागत
करता है। 41जो परमात्मा के प्रवक्ता का इसलिए स्वागत करे कि वह
परमात्मा के संदेश को बताता है, तो जो इनाम परमात्मा के प्रवक्ता को
मिलता है वही उसे भी मिलेगा। और जो धर्मी व्यक्ति का इसलिए स्वागत
करे कि वह परमात्मा की आज्ञाओं का पालन करता है, तो जो इनाम
धर्मी व्यक्ति को मिलता है वही उसे भी मिलेगा। 42जो कोई इन साधारण
व्यक्तियों में से किसी एक को एक कटोरा ठंडा पानी सिर्फ इसलिए दे कि
वह मेरा शिष्य है, मैं तुम से सच कहता हूँ, उसे इनाम ज़रूर मिलेगा।"

11

प्रभु येशु और योहन

1जब गुरु येशु अपने बारह शिष्यों को ये आदेश दे चुके तब वह वहाँ
से चले गए और गलील प्रदेश के आस-पास के नगरों में लोगों को
शिक्षा देने और उन्हें शुभ संदेश सुनाने लगे।
2जब समर्पण-स्नान दाता योहन ने मुक्तिदाता येशु के कामों के बारे में
सुना, उस समय योहन जेल में थे। उन्होंने अपने शिष्यों+ को गुरु येशु के
पास यह पूछने के लिए भेजा, 3"क्या आने वाले मुक्तिदाता आप ही हैं,
या हम किसी और का इंतज़ार करें?"
4प्रभु येशु ने उनको उत्तर दिया, "जाओ और जो तुमने मुझे कहते और
करते देखा है वह सब योहन को बताओ कि 5अंधे देखते हैं, लँगड़े

---

* **10:38** *अपना क्रूस उठाने और मेरे पीछे चलने को तैयार नहीं* - अक्सर जब रोमन सरकार कैदियों को क्रूस पर चढ़ाती थी तो वे उन्हें अपना क्रूस उठाकर उस जगह चलने को कहते थे जहाँ उन्हें उस क्रूस पर मृत्यु दंड मिलना था। प्रभु येशु अपने शिष्यों को यह समझाने के लिए इस चित्र का उपयोग करते हैं कि उनके पीछे चलने की कीमत क्या होगी। उन्हें कष्ट सहने और मरने के लिए तैयार रहना होगा।

चलते हैं, कोढ़ी ठीक किए जाते हैं, बहरे सुनते हैं, मृत लोग ज़िन्दा
किए जाते हैं और गरीबों को शुभ संदेश सुनाया जाता है। [6]परमात्मा
उसे आशीर्वाद दें जो मानता है कि मैं वही मुक्तिदाता हूँ जो आने वाला
था।"

[7]योहन के शिष्य वापस जा ही रहे थे कि प्रभु येशु योहन के बारे में
भीड़ से कहने लगे, "तुम सुनसान जगह में क्या देखने गए थे? क्या
हवा से हिलती हुई लंबी घास को? [8]यदि यह नहीं, तो तुम क्या
देखने गए थे? ऐसे मनुष्य को जो कीमती कपड़े पहनता है? जो लोग
महंगे कपड़े पहनते हैं, वे महलों में रहते हैं! [9]अब बताओ, तुम क्या
देखने गए थे? परमात्मा के प्रवक्ता को देखने? हाँ, मैं तुमसे कहता
हूँ, वह परमात्मा के प्रवक्ता से भी महान व्यक्ति हैं। [10]उन्हीं के बारे में
परमात्मा-ग्रंथ में यह लिखा है,

'देखो, मैं तुम्हारे आगे अपना दूत भेज रहा हूँ,
वह तुम्हारे आगे तुम्हारा मार्ग तैयार करेगा।'

[11]"मैं तुमसे सच कहता हूँ, जो महिलाओं से पैदा हुए हैं उनमें
समर्पण-स्नान दाता योहन से महान कोई नहीं हुआ। तो भी परमात्मा के
परमस्वर्ग के साम्राज्य में छोटे से छोटा व्यक्ति योहन से अधिक महान
है।

[12]"समर्पण-स्नान दाता योहन के समय से अब तक परमात्मा का
साम्राज्य शक्ति से खुल गया है और उसमें जाने वाले पूरे जोश से उसे
अपना रहे हैं।* [13]समर्पण स्नान दाता योहन के आने तक सब परमात्मा
के प्रवक्ता और मोशे के नियम की पुस्तकें परमात्मा के साम्राज्य
के दिव्य संदेश सुनाती रहीं। [14]योहन वह व्यक्ति हैं जिनके बारे में
परमात्मा के प्रवक्ता बात कर रहे थे जब उन्होंने भविष्यवाणी की थी
कि परमात्मा के प्रवक्ता एलियाह आएँगे। [15]जिसके कान खुले हों वह
सुन ले!

11:10 मलाकी 3:1; निर्गमन 23:20 * **11:12** *शक्ति से खुल गया है* - सभवतः प्रभु येशु परमात्मा के प्रवक्ता मिका (मिका 2:12-13) की भविष्यवाणी के बारे में कह रहे थे जिसमें कहा गया, "चरवाहा-महाराजा" द्वार को शक्ति से तोड़ेंगे और उनके पीछे लोग भी शक्ति से द्वार में प्रवेश करेंगे। योहन और जो लोग प्रभु येशु में आस्था रखते हैं उनके पीछे चलकर परमात्मा के साम्राज्य में पूरे जोश से उसे अपना रहे हैं।

16 "मैं आज के लोगों की तुलना किससे करूँ? ये सार्वजनिक जगहों
में बैठे हुए बच्चों के समान हैं जो एक-दूसरे को पुकार कर कहते हैं,
17 'हमने तुम्हारे लिए बाँसुरी पर खुशी का गीत बजाया,
पर तुम न नाचे।
हमने दुख भरे गीत गाए,
पर तुम न रोए।'
18 "योहन उपवास रखने और जंगल में अकेले रहने आए थे, और
वे कहते हैं कि उसमें अशुद्ध आत्मा है। 19 तेजस्वी मानव-पुत्र आया
और लोगों के साथ मिलने-जुलने और खाने-पीने में समय बिताया,
तो लोग कहते हैं, 'देखो, पेटू और पियक्कड़, बेईमान टैक्स लेने वालों
और पापियों का दोस्त!' लेकिन जब कोई व्यक्ति परमात्मा से
समझदारी प्राप्त करता है, तो उसके कामों में उसकी झलक दिखती
है।"

भक्तिहीन नगरों को धिक्कार

20 तब प्रभु येशु उन नगरों को फटकारने लगे जिनमें उन्होंने बहुत
से चमत्कार किए थे, क्योंकि उनके निवासियों ने अपने बुरे कर्मों से
पश्चाताप नहीं किया था। 21 प्रभु येशु ने कहा, "खोराज़िन नगर, तुझे
अपने पापों का परिणाम भुगतना होगा! बैथसैदा नगर, तुझे भी अपने
पापों का परिणाम भुगतना होगा! जो चमत्कार तुममें किए गए, यदि
वे सोर और सीदोन शहरों में किए जाते तो उनके निवासियों ने शोक
के कपड़े पहनकर और राख में बैठकर अपने बुरे कर्मों से पश्चाताप
कर लिया होता। 22 मैं तुमसे कहता हूँ, अच्छे और बुरे कर्मों के न्याय के
दिन तुम्हारे मुकाबले सोर और सीदोन शहरों की दशा अधिक अच्छी
होगी।
23 "तुम कफरनहूम शहर के लोगो, क्या तुम परमस्वर्ग तक जाने की
सोच रहे हो? नहीं, तुम तो मृत्युलोक में गिरोगे! क्योंकि जो चमत्कार
तुम्हारे शहर में किए गए, यदि वे सदोम शहर में किए जाते तो परमात्मा
द्वारा उसका विनाश नहीं होता। 24 मैं तुमसे कहता हूँ, अच्छे और
बुरे कर्मों के न्याय के दिन तुम्हारे मुकाबले सदोम के लोगों की दशा
अधिक अच्छी होगी।"

बालक-समान निर्दोष मन

[25]उस समय प्रभु येशु ने यह कहा, “हे पिता परमात्मा, आकाश और
पृथ्वी के मालिक, मैं धन्यवाद देता हूँ कि आपने यह सच ज्ञानियों
और बुद्धिमानों से गुप्त रखा और आम लोगों पर प्रकट किया। [26]हे पिता
परमात्मा, आपने ऐसा इसलिए किया क्योंकि इससे आपको बहुत
खुशी मिली।

प्रेमपूर्ण निमंत्रण

[27]“मेरे पिता परमात्मा ने अपना सारा अधिकार मुझे सौंप दिया है।
पिता परमात्मा के अलावा मुझ पुत्र को अच्छी तरह कोई नहीं जानता।
और मुझ पुत्र के अलावा पिता परमात्मा को अच्छी तरह कोई नहीं
जानता है। और पुत्र जिसको भी चाहे पिता परमात्मा को समझने का
ज्ञान दे सकता है।

[28]“हे सब थके और बोझों से दबे लोगो, मेरे पास आओ और मैं तुम्हें
शांतिदायक समाधान दूँगा। [29]अपने आप को मुझसे जोड़ लो* और
मुझसे सीखो, क्योंकि मैं कठोर नहीं हूँ और मेरा मन कोमल है। मुझ
से जुड़कर तुम मेरी शीतल छाया में आराम पाओगे। [30]मेरे साथ चलना
आसान है और मेरी शिक्षाएँ बोझ नहीं हैं।”

12

धार्मिक नियमों के पालन से ज़्यादा दूसरों की चिंता ज़रूरी

[1]उस समय प्रभु येशु आराम-दिवस के मौके पर खेतों में से होकर जा
रहे थे। उनके शिष्यों को भूख लगी तो वे गेहूँ की बालें तोड़-तोड़ कर
खाने लगे। [2]यह देखकर फरीसी धार्मिक पंथ के लोगों ने प्रभु येशु से
कहा, “देखिए, आपके शिष्य वह काम कर रहे हैं जो आराम-दिवस
पर करना मोशे के नियम और शिक्षा के अनुसार मना है।”

[3]प्रभु येशु ने उनसे कहा, “क्या तुम लोगों ने परमात्मा-ग्रंथ की
उस घटना के बारे में नहीं पढ़ा कि भूख लगने पर राजा दाविद और
उनके साथियों ने क्या किया था? [4]राजा दाविद परमात्मा के पवित्र

---

* **11:29** *अपने आप को मुझसे जोड़ लो* - या, “मेरा जुआ अपने पर ले लो।”

स्थान के आँगन में आए और उसे और उसके साथियों को परमात्मा
को चढ़ाई गई पवित्र रोटियाँ दी गई। और उन्होंने उन रोटियों को
खाया, जबकि इन पवित्र रोटियों को केवल पुरोहित ही खा सकते
थे। [5]और क्या तुमने मोशे के नियम और शिक्षा में यह भी नहीं पढ़ा
है कि आराम-दिवस के मौके पर भी पुरोहित मंदिर में काम करते हैं,
लेकिन कोई नहीं कहता कि उन्होंने पाप किया है। [6]मैं तुमसे कहता
हूँ, यहाँ जो कुछ घट रहा है* वह मंदिर से भी बड़ा है। [7]परमात्मा-ग्रंथ
में लिखा है, 'मैं चाहता हूँ कि तुम चढ़ावे से ज़्यादा दूसरों की चिंता
करने पर ध्यान दो।' अगर तुम इसका सही अर्थ जानते तो निर्दोष
को दोषी न बताते। [8]क्योंकि तेजस्वी मानव-पुत्र आराम-दिवस का भी
मालिक है।"

लकवा मारे मनुष्य का स्वस्थ किया जाना

[9]वहाँ से प्रभु येशु आगे बढ़े और वह यहूदी सत्संग भवन में गए।
[10]वहाँ एक मनुष्य था जिसके हाथ को लकवा मार गया था और वह
उस हाथ से कुछ काम नहीं कर पाता था। कुछ फरीसियों ने प्रभु येशु
की गलती पकड़ने के लिए उनसे पूछा, "क्या आराम-दिवस के मौके
पर किसी को स्वस्थ करना मोशे के नियम और शिक्षा के अनुसार
सही है?"

[11]उन्होंने उत्तर दिया, "तुममें से ऐसा कौन व्यक्ति है जिसके पास
एक ही भेड़ हो और अगर वह आराम-दिवस के मौके पर गड्ढे में गिर
जाए, तो वह उसे पकड़कर न निकाले? [12]तो मनुष्य भेड़ के मुकाबले
बहुत कीमती है! इसलिए आराम-दिवस के मौके पर भलाई करना मोशे
के नियम और शिक्षा के अनुसार सही काम है।"

[13]तब प्रभु येशु ने उस मनुष्य से कहा, "अपना हाथ बढ़ा।" उसने
हाथ बढ़ा दिया और वह हाथ दूसरे हाथ के समान पूरी तरह से स्वस्थ
हो गया। [14]तब फरीसी बाहर चले गए और प्रभु येशु के विरुद्ध साजिश
करने लगे कि किस प्रकार उनको मार डालें।

---

* **12:6** *जो कुछ घट रहा है वह मंदिर से भी बड़ा है* - हो सकता है कि प्रभु येशु परमात्मा के साम्राज्य, या मुक्तिदाता के रूप में अपने कार्य को संदर्भित कर रहे हो। **12:7** होशे 6:6

परमात्मा का सेवक तुम्हें न्याय दिलाएगा

15यह जानकर प्रभु येशु वहाँ से चले गए। बहुत लोग उनके पीछे हो
लिए और उनमें से जो बीमार थे उन सब को प्रभु येशु ने ठीक कर
दिया। 16लेकिन प्रभु येशु ने उन लोगों को चेतावनी दी कि किसी को
मत बताना कि वह कौन है।

17इस प्रकार परमात्मा द्वारा किया गया वादा पूरा हुआ जो उन्होंने
परमात्मा के प्रवक्ता यशायाह के माध्यम से किया था,

18 "मेरे सेवक को देखो, जिसे मैंने चुना है,
मेरा प्रिय जिससे मैं बहुत खुश हूँ।
मैं अपना पवित्र आत्मा उसे दूँगा
और वह सभी समाज के लोगों पर
न्याय की घोषणा करेगा।
19 वह लोगों के साथ लड़ाई-झगड़ा नहीं करेगा,
न ही उन पर चिल्लाएगा।
वह सार्वजनिक जगहों पर लोगों का ध्यान भी
अपनी ओर नहीं खींचेगा।
20 वह उन लोगों के साथ कोमल व्यवहार करेगा
जो कमज़ोर हैं।
वह उस व्यक्ति को जोश से भरेगा
जिसके पास कोई उम्मीद नहीं है।
वह तब तक ऐसा करता रहेगा
जब तक पृथ्वी के सब लोगों को न्याय न मिल जाए।
21 और दुनिया के हर समाज के लोग
उसके नाम पर आशा रखेंगे।"

शैतान के राज्य में सेंध

22तब लोग एक अशुद्ध आत्मा से जकड़े मनुष्य को, जो अंधा और
गूँगा था, प्रभु येशु के पास लाए। प्रभु येशु ने उसमें से अशुद्ध आत्मा
निकाल दी और उसे स्वस्थ कर दिया और वह मनुष्य बोलने और

12:21 यशायाह 42:1-4

देखने लगा। 23 इस पर सारी भीड़ हैरान होकर कहने लगी, “कहीं यही
हमारे मुक्तिदाता तो नहीं जो राजा दाविद के वंशज हैं?”
24 किंतु जब फरीसियों ने यह सुना तो वे बोले, “इस व्यक्ति को
बालज़बूल शैतान से शक्ति मिली है, जो अशुद्ध आत्माओं का शासक
है। इसीलिए वह अशुद्ध आत्माओं को निकाल सकता है।”
25 प्रभु येशु ने उनके मन के विचार जानकर उनसे कहा, “जिस देश
में फूट पड़ जाती है, वह नाश हो जाता है। और जिस नगर या घर में
फूट पड़ जाती है, तो वह बर्बाद हो जाता है। 26 यदि शैतान ही किसी
व्यक्ति में से शैतान को बाहर निकालता है, तो वह अपना ही विरोधी
हो जाएगा। फिर उसका राज्य कैसे स्थिर रहेगा? 27 अच्छा, यदि मैं
बालज़बूल द्वारा अशुद्ध आत्माओं को निकालता हूँ तो तुम्हारे शिष्य
किसके द्वारा अशुद्ध आत्माओं को निकालते हैं? इसलिए तुम्हारे चेले
ही तुम्हें गलत साबित करेंगे। 28 परंतु यदि मैं परमात्मा की पवित्र आत्मा
द्वारा अशुद्ध आत्माओं को निकालता हूँ तो मेरा यह कार्य साबित
करता है कि परमात्मा का साम्राज्य तुम्हारे बीच पहुँच चुका है। 29 कोई
भी ताकतवर आदमी के घर में घुसकर उसकी चीज़ों को कैसे चुरा
सकता है जब तक कि वह पहले ताकतवर आदमी को बांध न ले?
तभी वह सब कुछ ले सकता है।
30 “जो मेरे साथ नहीं, वह मेरे विरोध में है। और जो मेरे साथ भेड़ों
को इकट्ठा नहीं करता, वह उन्हें मुझसे दूर ले जाता है। 31 इस कारण मैं
तुमसे कहता हूँ, लोगों को हर एक पाप और अपमान की माफी मिलेगी
पर परमात्मा की पवित्र आत्मा का अपमान करने की माफी नहीं
मिलेगी। 32 जो मनुष्य तेजस्वी मानव-पुत्र की बुराई करेगा, उसे माफी
मिल सकती है, परंतु जो व्यक्ति पवित्र आत्मा का अपमान करेगा, उसे
न तो इस संसार में और न आने वाले संसार में माफी मिलेगी।

तुम्हारे शब्द तुम्हारे चाल-चलन का आईना होते हैं

33 “अगर पेड़ अच्छा है, तो उसका फल भी अच्छा होगा। अगर पेड़
खराब है, तो उसका फल भी खराब होगा। पेड़ का फल दिखाता कि
पेड़ अच्छा है या बुरा है। 34 अरे ज़हरीले साँपों के बच्चो! तुममें बुराइयाँ
भरी हुई हैं तो तुम अच्छी बात कैसे कह सकते हो? क्योंकि जो मन में

भरा है, वही मुँह से निकलता है। [35]अच्छा व्यक्ति अपने मन के अच्छे
खज़ाने से अच्छी बातें निकालता है और बुरा व्यक्ति अपने मन के बुरे
खज़ाने से बुरी बातें निकालता है। [36]मैं तुमसे कहता हूँ, जो इंसान दूसरों
को दुख पहुँचाने वाली बातें बोलेगा, अच्छे और बुरे कर्मों के न्याय के
दिन उसको अपना हिसाब देना होगा। [37]क्योंकि तुम अपनी बोली के
कारण ही निर्दोष या दोषी साबित होगे।"

समय रहते सबसे महान को पहचान लो

[38]तब कुछ धर्मगुरुओं और फरीसियों ने प्रभु येशु से कहा, "गुरुजी,
हम आपसे कोई निशान या चमत्कार देखना चाहते हैं जिससे पता चले
कि परमात्मा ने आपको भेजा है।"

[39]लेकिन प्रभु येशु ने उत्तर दिया कि "इस पीढ़ी के लोग बुरे हैं
और परमात्मा के प्रति विश्वासयोग्य नहीं हैं। ये लोग निशानी और
चमत्कार देखना चाहते हैं, परंतु इन्हें परमात्मा के प्रवक्ता योना के
उदाहरण की निशानी के अलावा कोई अन्य निशानी नहीं मिलेगी।
[40]जैसे योना तीन दिन और तीन रात एक बड़ी मछली के पेट में रहा,
उसी प्रकार तेजस्वी मानव-पुत्र तीन दिन और तीन रात धरती के गर्भ
में रहेगा। [41]जिस दिन परमात्मा अच्छे और बुरे कर्मों का न्याय करेंगे
नीनवे शहर के लोग तुम्हारी पीढ़ी के विरुद्ध खड़े होंगे और तुम्हें
दोषी ठहराएँगे। क्योंकि नीनवे के लोगों ने परमात्मा के प्रवक्ता योना
से परमात्मा का संदेश सुनकर अपने बुरे कर्मों से पश्चाताप किया,
लेकिन तुमने पश्चाताप नहीं किया, भले ही यहाँ कुछ बड़ी घटना घट
रही* है जो योना की घटना से भी बड़ी है। [42]जिस दिन परमात्मा सब
लोगों का न्याय करेंगे, दक्षिण देश की रानी भी इस पीढ़ी के विरुद्ध
खड़ी होगी और दिखाएगी कि वे दोषी हो। क्योंकि वह रानी राजा
शलोमो के बुद्धि से भरे शब्दों को सुनने के लिए बहुत दूर से आई थी,
और यहाँ राजा शलोमो से भी कोई महान है, परंतु तुम लोगों ने उनकी
न सुनी।"

---

* **12:41** *यहाँ कुछ बड़ी घटना घट रही* - जैसे 12:6 पद में हो सकता है कि प्रभु येशु परमात्मा के साम्राज्य, या मुक्तिदाता के रूप में अपने कार्य को संदर्भित कर रहे हो।

खाली मन अशुद्ध आत्माओं को आकर्षित करता है

43-44प्रभु येशु ने अपनी बात आगे बढ़ाते हुए कहा, “जिस मनुष्य
के शरीर को अशुद्ध आत्मा अपना घर मानती है। जब वह उस शरीर
को छोड़ कर निकलती है, तब वह सुनसान बंजर जगह की तालाश
में भटकती रहती है। जगह न मिलने पर कहती है, ‘मैं उस घर को,
जहाँ से मैं निकली थी, लौट जाऊँगी।’ वह लौटकर जब उस घर को
साफ-सुथरा और खाली पाती है, 45तब वह जाकर अपने से अधिक
बुरी सात और अशुद्ध आत्माएँ ले आती है। वे मनुष्य में घर बनाकर
रहने लगती हैं और उस मनुष्य की दशा पिछली दशा से भी बदतर हो
जाती है। इस पीढ़ी के बुरे लोगों के साथ भी ऐसा ही होगा।”

प्रभु येशु की आत्मिक माता और भाई बहन

46उस समय प्रभु येशु भीड़ से घिरे हुए थे और लोगों से बातें कर रहे
थे। उनकी माता और भाई बाहर खड़े थे और वे उनसे मिलना चाहते
थे। 47किसी ने उनसे कहा, “गुरुजी, आपकी माता और भाई बाहर खड़े
हैं और वे आपसे मिलना चाहते हैं।”+

48प्रभु येशु ने कहा, “कौन है मेरी माता? और कौन हैं मेरे भाई?”
49फिर अपने शिष्यों की ओर हाथ से इशारा कर कहा, “देखो, ये भी
तो मेरी माता और मेरे भाई हैं। 50क्योंकि जो व्यक्ति मेरे पिता परमात्मा
की इच्छा के अनुसार काम करता है, वही मेरा भाई, बहन और माता
है।”

13

चार तरह की भूमि की कहानी

1उसी दिन प्रभु येशु घर से निकले और झील के किनारे पर बैठ गए।
2उनके पास इतनी बड़ी भीड़ इकट्ठी हो गई कि उन्हें नाव पर चढ़कर
बैठना पड़ा और सारी भीड़ किनारे पर खड़ी रही। 3फिर, उन्होंने उन्हें
कहानियों के माध्यम से कई चीजें सिखाईं। उन्होंने कहा, “एक
किसान खेत में बीज बिखेरने निकला। 4बिखेरते समय कुछ बीज रास्ते
के किनारे गिरे और पक्षियों ने आकर उन्हें चुग लिया। 5कुछ बीज
पथरीली भूमि में गिरे जहाँ उन्हें बहुत मिट्टी न मिली और मिट्टी के गहरा

न होने के कारण, वे जल्दी अँकुरित हो गए। [6]और जब सूरज की गर्मी
पड़ी तो वे झुलस गए तब जड़ न पकड़ने के कारण सूख गए। [7]कुछ
बीज कँटीली झाड़ियों में गिरे, और झाड़ियों ने बढ़कर उन नए पोधों
को दबा दिया कि वे बढ़ न सकें। [8]कुछ बीज अच्छी भूमि पर गिरे,
फूले-फले और उनसे बहुत सा अनाज हुआ किसी से सौ गुना, किसी से
साठ गुना और किसी से तीस गुना। [9]जिसके कान खुले हों वह सुन ले!"

[10]कुछ समय बाद शिष्यों ने प्रभु येशु से पूछा, "गुरुजी, जब आप
लोगों से बात करते हैं तो अक्सर कहानियों के द्वारा शिक्षा क्यों देते
हैं?"

[11]उन्होंने उत्तर दिया, "इसलिए कि परमात्मा के परमस्वर्ग के
साम्राज्य के रहस्यों का ज्ञान तुम्हें दिया गया है, पर उन्हें नहीं। [12]क्योंकि
जिसके पास है, उसे भरपूरी से और भी दिया जाएगा और जिसके पास
नहीं है, उससे वह भी जो उसके पास है, छीन लिया जाएगा। [13]मैं उन्हें
कहानियाँ इसलिए सुनाता हूँ कि वे देखते हुए भी मन की आँखों से
नहीं देख पाते हैं, और सुनते हुए भी मन से समझ नहीं पाते हैं। [14]तो
परमात्मा द्वारा किया गया वादा पूरा हुआ जैसा कि उनके प्रवक्ता
यशायाह ने भविष्यवाणी की थी,

'तुम सुनोगे तो ज़रूर, पर समझोगे नहीं,
तुम देखोगे तो ज़रूर, पर पहचान न सकोगे
[15] क्योंकि इन लोगों के दिल पत्थर के हो गए हैं,
ये कानों से ऊँचा सुनने लगे हैं
और इन्होंने अपनी आँखें बंद कर ली हैं
कि कहीं ऐसा न हो कि वे आँखों से देखें,
कानों से सुनें,
मन से समझें
और मुझ परमात्मा के पास लौट आएँ
और मैं उनको स्वस्थ कर दूँ।'"

[16]तब गुरु येशु ने अपने शिष्यों से कहा, "परमात्मा से तुम्हें आशीर्वाद
मिला है, क्योंकि तुम देख और सुन सकते हो। [17]मेरी बात ध्यान से

13:15 यशायाह 6:9-10

सुनो। अनेक परमात्मा के प्रवक्ता और बहुत से धर्मी भक्त जो बहुत साल पहले रहते थे उन्होंने चाहा था कि जो बातें तुम देख रहे हो वे भी देखें, पर वे देख न सके। और जो बातें तुम सुन रहे हो, वे भी सुनना चाहते थे, पर वे न सुन सके।”

चार तरह के लोग

18“अब तुम बीज बिखेरने वाले किसान की कहानी का अर्थ सुनो।
19जब कुछ लोग परमात्मा के साम्राज्य का संदेश सुनते हैं पर समझते
नहीं, तब शैतान आता है और जो कुछ संदेश उन लोगों ने सुना था,
उनको भुला देता है। यह रास्ते के किनारे बिखेरे गए बीजों का अर्थ है।
20“पथरीली भूमि पर बिखेरे गए बीज वे लोग हैं जो परमात्मा के
साम्राज्य के संदेश को सुनकर तुरंत उसे अपना तो खुशी से लेते हैं,
21लेकिन उनके मन में परमात्मा के संदेश की जड़ें गहरी नहीं हो सकीं।
वे थोड़े समय तक भक्ति में बने रहे, परंतु जब परमात्मा के संदेश पर
आस्था रखने के कारण उन पर समस्याएँ आईं और लोग उन्हें परेशान
करने लगे, तो वे तुरंत आस्था से पीछे हट गए।
22“कँटीली झाड़ियों में बिखेरे गए बीज वे लोग हैं, जो संदेश को सुनते हैं,
पर संसार की चिंताओं के शोर और पैसे के मोह के कारण संदेश को नज़र
अंदाज़ कर देते हैं। इसलिए उनमें नेक जीवन के फल नहीं आ पाते हैं।
23“अच्छी भूमि में बिखेरे गए बीज वे लोग हैं, जो परमात्मा के संदेश
को सुनते, समझते हैं और उनमें नेक जीवन के बहुत से फल आते हैं।
यह उपज सौ गुना, साठ गुना और तीस गुना होती है।”

गेहूँ और जंगली बीज की कहानी

24प्रभु येशु ने दूसरी कहानी सुनाई, “परमात्मा के परमस्वर्ग के
साम्राज्य की तुलना उस मनुष्य से की जा सकती है जिसने अपने खेत
में गेहूँ के अच्छे बीज बोए। 25परंतु जब सब लोग सो रहे थे तब उसका
दुश्मन आया और उसने गेहूँ के पौधों के साथ-साथ जंगली पौधों के
बीज बो दिए और चला गया।
26“जब अंकुर निकले और बालें लगीं तब जंगली पौधे भी दिखाई
दिए। 27इस पर घर के मालिक के नौकरों ने आकर उससे कहा,

'मालिक, क्या आपने अपने खेत में अच्छा बीज नहीं बोया था? तो उसमें जंगली पौधे कहाँ से आए?'
28"वह बोला, 'यह किसी दुश्मन का काम है।'
"नौकरों ने कहा, 'क्या आप चाहते हैं कि हम जाकर उन जंगली पौधों को उखाड़ फेंकें?'
29"उसने कहा, 'नहीं, कहीं ऐसा न हो कि तुम जंगली पौधे के साथ
गेहूँ के पौधे भी उखाड़ डालो। 30फसल की कटनी तक दोनों को
साथ-साथ बढ़ने दो। कटनी के समय, मैं काटने वालों से कहूँगा कि पहले जंगली पौधों को इकट्ठा करो और जलाने के लिए उनके गट्ठे बाँध लो। फिर गेहूँ को मेरे अनाज घर में इकट्ठा करो।'"

राई के बीज और खमीर

31गुरु येशु ने एक और कहानी उनको सुनाई। "परमात्मा के परमस्वर्ग
का साम्राज्य राई के बीज के समान है जिसे किसी मनुष्य ने लिया और
अपने खेत में बो दिया। 32राई का बीज अन्य बीज़ों की तुलना में छोटा
होता है, लेकिन बढ़कर खेत के सारे पौधों से बड़ा हो जाता है। वह ऐसा पेड़ बन जाता है कि उसकी शाखाओं में आकाश के पक्षी आकर बसेरा करते हैं।"
33गुरु येशु ने एक और उदाहरण उन्हें दिया, "परमात्मा के परमस्वर्ग का साम्राज्य खमीर के समान है। एक स्त्री ने खमीर लिया और उस थोड़े से खमीर को दस किलो गुंथे मैदे में मिला दिया, और सारा खमीर गुंथे मैदा में फैल गया और थोड़ी देर बाद गुंथा मैदा फूल गया।"
34प्रभु येशु ने लोगों को परमात्मा के साम्राज्य के बारे में बताने के
लिए हमेशा कहानियों का इस्तेमाल किया करते थे। 35परमात्मा
द्वारा किया गया वादा पूरा हुआ जैसा कि उनके प्रवक्ता ने कहा था कि

"दुनिया की शुरुआत से जो बातें छिपी हैं,
मैं कहानियाँ बताकर उन्हें प्रकट करूँगा।"

13:35 भजन शास्त्र 78:2

जंगली बीज के उदाहरण की व्याख्या

[36]जब प्रभु येशु भीड़ को छोड़कर उस घर में गए जहाँ वह ठहरे हुए
थे, उनके शिष्य भी उनके साथ थे। उन्होंने पूछा, "गुरुजी, खेत के
जंगली पौधों की कहानी हमें समझा दीजिए।"
[37]प्रभु येशु ने कहानी का मतलब समझाते हुए कहा कि "अच्छे बीज
बोने वाला तेजस्वी मानव-पुत्र है। [38]खेत है संसार, और अच्छे बीज हैं
परमात्मा के साम्राज्य के लोग। जंगली पौधे हैं शैतान के लोग, [39]और
जिस दुश्मन ने उन्हें बोया है, वह शैतान है। कटनी है इस संसार का
अंत और काटने वाले हैं स्वर्गदूत।
[40]"जैसे जंगली पौधे इकट्ठाकर आग में जलाए जाते हैं, वैसे ही इस
संसार के अंत में होगा। [41]तेजस्वी मानव-पुत्र अपने स्वर्गदूतों को भेजेंगे
और वे अपने साम्राज्य के लोगों में से उन सबको इकट्ठा करेंगे जो
गलत करते हैं या दूसरों को पाप में खींचते हैं। [42]तेजस्वी मानव-पुत्र
के स्वर्गदूत उन सबको नरक की आग में डालेंगे। वहाँ वे रोयेंगे, और
गुस्से और दर्द से दाँत पीसेंगे। [43]परंतु धर्मी भक्त अपने पिता परमात्मा
के साम्राज्य में बहुत आदर पाएँगे। जिसके कान खुले हों, वह सुन ले!

परमात्मा के साम्राज्य का हिस्सा बनना सब से मूल्यवान

[44]"परमात्मा के परमस्वर्ग का साम्राज्य खेत में छिपे हुए खज़ाने के
समान है जिसे किसी मनुष्य ने पाया और फिर उसी खेत में छिपा
दिया। और वह खुश होकर जाता है और अपना सबकुछ बेचकर* उस
खेत को खरीद लेता है।
[45]"और परमात्मा के परमस्वर्ग का साम्राज्य उस व्यापारी के समान
है जो कीमती मोतियों की तलाश में था। [46]जब उसे एक बहुमूल्य मोती*
मिला तब उसने जाकर अपना सबकुछ बेच दिया और उस मोती को
खरीद लिया।
[47]"और परमात्मा के परमस्वर्ग का साम्राज्य उस जाल के समान है जो
झील में डाला गया, और जिसमें सब प्रकार की मछलियाँ घिर आईं।

13:43 दानिएल 12:3 * **13:44** *सबकुछ बेचकर* - परमात्मा के साम्राज्य का हिस्सा बनना हर चीज़ से बढ़कर है। * **13:46** *बहुमूल्य मोती* - मोती परमात्मा के साम्राज्य का प्रतिनिधित्व करता है, जिसका हिस्सा बनने के लिए व्यक्ति को कुछ भी त्यागने को तैयार रहना चाहिए।

[48]जब जाल भर गया तब मछुआरे उसे किनारे पर खींच लाए, और
बैठकर अच्छी मछलियाँ तो टोकरियों में डाल दीं और खराब मछलियाँ
फेंक दीं। [49]इस संसार के अंत में ऐसा ही होगा। स्वर्गदूत आएँगे, और
धर्मी भक्तों को बुरे लोगों से अलग करेंगे, [50]और बुरे लोगों को नरक
की आग में डालेंगे। वहाँ वे रोएँगे और गुस्से और दर्द से दाँत पीसेंगे।"
[51]प्रभु येशु ने अपने शिष्यों से पूछा, "क्या तुम ये सब बातें समझ
गए?"

वे बोले, "जी हाँ।"

[52]प्रभु येशु ने उनसे कहा, "इस कारण मोशे के नियम और शिक्षा
का हर एक धर्मगुरु जो परमात्मा के परमस्वर्ग के साम्राज्य के लिए
समर्पित है, उस घर के मालिक के समान है जो दूसरों को बाँटने के
लिए अपने खज़ाने से नई और पुरानी चीज़ें निकालता है।"

प्रभु में आस्था न रखना चमत्कार के द्वार बंद कर देता है

[53]प्रभु येशु इन कहानियों को सुनाकर वहाँ से चले गए। [54]वह अपने
नगर नासरत में आए और लोगों को सत्संग भवन में उपदेश देने लगे।
लोग उनका उपदेश सुनकर हैरान रह गए और बोले, "इसे यह बुद्धि और
चमत्कारी काम करने की शक्ति कहाँ से प्राप्त हुई? [55]क्या यह बढ़ई
का पुत्र नहीं है? क्या इसकी माता का नाम मरियम और इसके भाइयों
के नाम याकोब, योसफ, शिमोन और यहूदा नहीं हैं? [56]क्या इसकी सब
बहनें हमारे बीच नहीं रहतीं? फिर इसे यह सब ज्ञान और शक्तियाँ कहाँ
से प्राप्त हुईं?" [57]उन लोगों ने प्रभु येशु पर विश्वास नहीं किया। परंतु प्रभु
येशु ने उनसे कहा, "हर जगह लोग परमात्मा के प्रवक्ता का सम्मान
करते हैं। केवल उनके ही गाँव और उनके परिवार के लोग उनका
सम्मान नहीं करते हैं!" [58]क्योंकि लोगों ने उन पर विश्वास नहीं किया,
इसलिए प्रभु येशु ने वहाँ बहुत से चमत्कार नहीं किए।

14

समर्पण-स्नान दाता योहन की हत्या

[1]उन्हीं दिनों में गलील प्रदेश के शासक हेरोदेस अन्तिपस ने प्रभु येशु
के बारे में सुना। [2]उसने प्रभु येशु को समर्पण-स्नान दाता योहन समझा

और अपने सेवकों से कहा, “यह योहन हैं जो मरने के बाद ज़िन्दा हो
गए हैं। इस कारण इनके पास चमत्कारी काम करने की शक्ति है।”
3कई महीने पहले हेरोदेस ने अपने भाई की पत्नी हेरोदियास के
कारण योहन को बंदी बनाकर जेल में डलवा दिया था, 4क्योंकि योहन
हेरोदेस को अक्सर यह चेतावनी दिया करता था, “आपका अपने भाई
की पत्नी को रखना मोशे के नियम और शिक्षा के विरुद्ध है।” 5हेरोदेस
योहन को मार डालना चाहता था, पर वह लोगों से डरता था, क्योंकि
लोग योहन को परमात्मा के प्रवक्ता मानते थे।
6कुछ समय बाद हेरोदेस के जन्मदिन पर हेरोदियास की बेटी ने
मेहमानों के सामने नाच दिखा कर हेरोदेस को खुश कर दिया। 7खुश
होकर हेरोदेस ने उस लड़की को वचन दिया, “जो कुछ तुम मुझसे
माँगोगी, मैं तुम्हें दूँगा।” 8उसकी माता ने उसे यह सिखा-पढ़ा दिया था
कि वह ऐसा बोले, “मुझे यहीं एक थाल में योहन का सिर कटवाकर
दीजिए।” 9राजा हेरोदेस ने जो वचन दिया था उसके लिए उसे बहुत
पछतावा हुआ। लेकिन वह अपने मेहमानों के सामने किए गए वादे
को तोड़ना नहीं चाहता था। इसलिए उसने आज्ञा दी, “योहन का सिर
कटवाकर लाया जाए।” 10और सिपाहियों को जेल में भेजकर योहन
का सिर कटवा दिया। 11सिर थाल में लाकर लड़की को दे दिया गया
और वह उसे अपनी माता के पास ले गई। 12योहन के शिष्य आए और
उन्होंने अपने गुरु का शव ले जाकर कब्र में रखा और जाकर प्रभु येशु
को सब कुछ बता दिया।

पाँच रोटियों से गुरुजी ने हजारों लोगों का पेट भरा

13यह सुनकर कि योहन की हत्या कर दी गई है प्रभु येशु नाव में
चुपचाप किसी एकांत स्थान में चले गए। भीड़ ने यह सुना तो पास के
अनेक नगरों से लोग पैदल ही उनके पीछे-पीछे आ गए। 14जब प्रभु येशु
झील के किनारे पहुँचे तो उन्होंने बड़ी भीड़ को देखा। उन्हें लोगों पर
दया आई और उन्होंने भीड़ में कई बिमारों को ठीक किया।
15शाम हुई तो शिष्य गुरु येशु के पास आए। वे उनसे बोले, “गुरुजी,
यह सुनसान जगह है और दिन भी ढलने को है। भीड़ को विदा कर
दीजिए ताकि वे गाँव में जाकर अपने लिए भोजन खरीद लें।”

[16]परंतु प्रभु येशु ने कहा, "इनको जाने की ज़रूरत नहीं। तुम लोग ही इनके लिए खाने का इंतजाम करो।"

[17]शिष्य बोले, "हमारे पास यहाँ पाँच रोटी और दो मछलियों के अलावा कुछ नहीं है।"

[18]प्रभु येशु ने कहा, "वह खाना मेरे पास ले आओ।" [19]तब प्रभु येशु
ने भीड़ को घास पर बैठने को कहा और उन्होंने पाँच रोटी और दो
मछली लीं और आकाश की ओर देखकर परमात्मा को धन्यवाद
दिया। तब उन्होंने रोटियों के टुकड़े किए और शिष्यों को दिए और
शिष्यों ने लोगों में बाँट दिए। [20]सबने पेट भर भोजन किया और शिष्यों
ने बचे हुए खाने को बारह टोकरों में भरा। [21]भोजन करने वाले पुरुषों
की संख्या, स्त्रियों और बालकों के अलावा, लगभग पाँच हजार थी।

प्रभु येशु का झील पर चलना

[22]तब गुरु येशु ने तुरंत अपने शिष्यों को नाव में चढ़ने की आज्ञा दी
कि वे उनसे पहले झील के उस पार चले जाएँ, और वह स्वयं भीड़
को विदा करने के लिए रूक गए। [23]भीड़ को विदा कर गुरु येशु पहाड़
पर एकांत में प्रार्थना करने के लिए चले गए। शाम हो चुकी थी और
वह वहाँ अकेले थे।

[24]जिस नाव में शिष्य गए थे, वह किनारे से दूर+ लहरों में डगमगा
रही थी, क्योंकि हवा नाव की उलटी दिशा में बह रही थी। [25]प्रभु येशु
सूरज निकलने से थोड़ी पहले झील पर चलकर शिष्यों की ओर आए।
[26]पर शिष्य उन्हें झील पर चलते हुए देखकर दहशत से भर गए और वे
डर के कारण "भूत, भूत!" चिल्लाने लगे।

[27]इस पर प्रभु येशु उनसे बोले, "हिम्मत रखो! मैं हूँ, डरो मत।"

[28]शिष्य पतरस ने कहा, "प्रभु, यदि आप ही हैं तो मुझे पानी के ऊपर चलकर अपने पास आने की आज्ञा दीजिए।"

[29]उन्होंने कहा, "आओ।" तब पतरस नाव से उतरकर पानी पर चलने
लगा और प्रभु येशु की ओर बढ़ा। [30]परंतु वह तेज़ हवा को देखकर
डर गया, और डूबने लगा। वह चिल्लाकर बोला, "प्रभु, मुझे बचाइए!"
[31]इस पर प्रभु येशु ने हाथ बढ़ाया और उसे थाम लिया और कहा,
"तुममें आस्था की कमी है! तुमने शक क्यों किया?"

32जब वे नाव पर चढ़ आए तब हवा थम गई। 33नाव में जो शिष्य थे,
उन्होंने प्रभु येशु को दंडवत प्रणाम किया और बोले, “आप सचमुच
परमात्मा के पुत्र हैं!”

प्रभु के कपड़ो को छूने भर से बीमार ठीक हो गए

34गुरु येशु और उनके शिष्य झील के पार उतरकर गनेसरत+ गाँव के
पास में आए। 35वहाँ के लोगों ने उन्हें पहचान लिया। उन्होंने आस पास
सब जगह कहला भेजा कि प्रभु येशु आए हैं। लोग बीमारों को उनके
पास ले आए, 36और उनसे विनती कि की वह उन्हें अपने कपड़ों का
सिरा ही छू लेने दें। और जिन बीमारों ने उनके कपड़ों का सिरा ही छू
लिया, वे सब ठीक हो गए।

15

परंपरा-पालन का प्रश्न

1यरूशलम शहर से आए हुए फरीसी धार्मिक पंथ के लोगों और
धर्मगुरुओं ने गुरु येशु के पास आकर पुछा, 2“क्या कारण है कि आपके
शिष्य हमारे पूर्वजों की परंपरा के अनुसार भोजन करते समय हाथ नहीं
धोते?”
3प्रभु येशु ने उत्तर दिया, “क्या कारण है कि तुम स्वयं अपनी परंपरा-पालन
करने के लिए परमात्मा की आज्ञा को नहीं मानते? 4क्या परमात्मा ने यह
आज्ञा नहीं दी कि अपने माता-पिता का आदर करो? क्या उन्होंने यह नहीं
कहा कि जो अपने माता-पिता के साथ बुरा व्यवहार करेगा उसे मौत की
सज़ा मिलनी चाहिए? 5लेकिन तुम, लोगों को उनके माता-पिता की मदद
नहीं करने देते। तुम इस बात में उन लोगों का साथ देते हो जब वे अपने
माता-पिता से कहते हैं कि जो पैसा हमें तुम्हारी सेवा में लगाना था वह हमने
मंदिर में दान कर दिया है। 6क्या अपने माता-पिता का आदर करने का यही
तरीका है? तुम परमात्मा की आज्ञाओं का पालन करने के बजाय अपनी
परम्पराओं का पालन करते हो। 7तुम ढोंगी हो! परमात्मा ने तुम्हारे बारे में
परमात्मा के प्रवक्ता यशायाह द्वारा ठीक ही भविष्यवाणी की थी,

15:4 निर्गमन 20:12 **15:4** निर्गमन 21:17

[8]‘तुम लोग अपने होंठों से मेरा आदर करते हो,
पर तुम्हारा मन मुझसे दूर है।
[9]जब तुम इंसान द्वारा बनाए गए नियमों को सिखाते हो,
तो मेरी भक्ति करना तुम्हारे लिए बेकार है।’”

परमात्मा की दृष्टि से अशुद्धता और शुद्धता

[10]तब प्रभु येशु ने भीड़ को अपने पास बुलाकर कहा, “मेरी बात
ध्यान से सुनो और समझो। [11]जो भोजन तुम अपने मुँह में डालते हो वह
तुमको अशुद्ध नहीं बनाता है और न ही तुम्हें परमात्मा की भक्ति करने
के लिए अयोग्य ठहराता है। इसके बजाय तुम्हारे मुंह से निकली बुरी
बातें तुम को अशुद्ध बनाती हैं।”
[12]शिष्य प्रभु येशु के पास आए और बोले, “क्या आप जानते हैं कि
जो आपने कहा, उससे फरीसियों को बुरा लगा है?”
[13]प्रभु येशु ने उत्तर दिया, “हर एक पौधा जिसे मेरे पिता परमात्मा
ने नहीं लगाया, उखाड़ा जाएगा। [14]फरीसियों की बात रहने दो। वे अंधे
हैं और अंधों को रास्ता दिखाने वाले हैं। यदि अंधा अंधे को रास्ता
दिखाए तो दोनों ही गड्ढे में गिरेंगे।”
[15]शिष्य पतरस ने प्रभु येशु से कहा, “आपका क्या अर्थ था जब
आप लोगों को बता रहे थे कि कौन सी चीज़ें लोगों को अशुद्ध करती
हैं?”
[16]प्रभु येशु बोले, “क्या तुम भी अब तक इतने नासमझ हो? [17]क्या
तुम्हारी समझ में नहीं आता कि जो मुँह में भोजन जाता है, वह पेट में
से होकर मल द्वारा बाहर निकल जाता है? [18]परंतु बुरी बातें जो मुँह
से बाहर निकलती है, वे मन से निकलती हैं और परमात्मा की भक्ति
के लिए तुम्हें अयोग्य ठहराती हैं। [19]बुरी-बुरी योजनाएँ, हत्या, शादी के
बाहर शारीरिक सम्बन्ध बनाना, अनैतिक यौन सम्बन्ध, चोरी, झूठी
गवाही और परमात्मा और लोगों का अपमान मन से ही पैदा होते हैं।
[20]ये बातें व्यक्ति को अशुद्ध करती हैं। बिना हाथ धोए भोजन करना
किसी को अशुद्ध नहीं करता है।”

15:9 यशायाह 29:13

महिला की अटूट आस्था

21वहाँ से चलकर प्रभु येशु सोर और सीदोन के इलाकों में गए। 22उस
जगह से एक कनानी समाज की स्त्री आकर प्रभु येशु को ऊँची आवाज़
से पुकारकर कहने लगी, "हे प्रभु! राजा दाविद के वंशज, मुझ पर दया
कीजिए! मेरी बेटी को अशुद्ध आत्मा ने बुरी तरह से जकड़ रखा है।"
23पर प्रभु येशु कुछ न बोले। तब उनके शिष्यों ने पास आकर उनसे
कहा, "इस औरत से हम सब का पीछा छुड़ाइए, क्योंकि यह चिल्लाती
हुई हमारे पीछे लगी है।"
24प्रभु येशु ने कहा, "मैं इज़राएल वंश की भटकी हुई भेड़ों को छोड़कर
अन्य किसी के लिए नहीं भेजा गया हूँ।" 25पर वह स्त्री प्रभु येशु के सामने
आकर उनके चरणों पर गिर पड़ी और बोली, "प्रभु, मेरी मदद कीजिए।"
26प्रभु येशु बोले, "बच्चों को परोसा गया खाना उनसे लेकर कुत्तों के
आगे डालना ठीक नहीं।"
27वह बोली, "सच है प्रभु, पर पालतू कुत्ते भी तो अपने मालिकों की
मेज़ से गिरे हुए खाने के टुकड़े ही खाते हैं।"
28इस पर प्रभु येशु ने कहा, "महिला, मुझ में तुम्हारी आस्था अटूट
है! जैसा तुम चाहती हो, वैसा ही तुम्हारे लिए हो।" और उसी समय
उसकी बेटी ठीक हो गई।

हर प्रकार की बीमारी का ठीक हो जाना

29वहाँ से, प्रभु येशु गलील झील के किनारे के साथ-साथ चलकर
एक पहाड़ी पर चढ़ गए और वहाँ बैठ गए। 30वहाँ एक बड़ी भीड़ उनके
पास आई जिसमें लँगड़े, अपंग, अंधे, गूँगे और अन्य बहुत से बीमार
थे। लोगों ने उन्हें प्रभु येशु के चरणों पर डाल दिया और प्रभु येशु ने
उन सब को ठीक कर दिया। 31जब भीड़ ने देखा कि गूँगे बोल रहे हैं,
अपंग स्वस्थ हो रहे हैं, लँगड़े चल रहे हैं और अंधे देख रहे हैं, तो वे
हैरान रह गए और इज़राएल के परमात्मा का गुणगान करने लगे।

सात रोटियों से हज़ारों ने पेट भर खाया

32गुरु येशु ने अपने शिष्यों को बुलाकर कहा, "मुझे इस भीड़ पर दया
आती है, क्योंकि ये लोग तीन दिन से मेरे साथ हैं और इनके पास खाने

को कुछ नहीं है। मैं इन्हें भूखा घर नहीं भेजना चाहता कहीं ऐसा न हो
कि ये भूख के कारण रास्ते में बेहोश हो जाएँ।”
33उनके शिष्य बोले, “इस सुनसान जगह में हमें इतना भोजन कहाँ से
मिलेगा कि हम इतनी बड़ी भीड़ को पेट भर खाना खिला सकें?”
34प्रभु येशु ने उनसे पूछा, “तुम्हारे पास कितनी रोटियाँ हैं?”
वे बोले, “सात रोटियाँ, और कुछ छोटी मछलियाँ।”
35प्रभु येशु ने भीड़ को बैठने को कहा। 36उसके बाद उन्होंने सात
रोटी और मछलियाँ लीं और परमात्मा को धन्यवाद दिया। उन्होंने
उनके टुकड़े करके शिष्यों को दिए, और शिष्यों ने भीड़ में बाँट
दिए।
37सबने भर पेट भोजन किया और शिष्यों ने बचे हुए खाने को सात
टोकरों में भरा 38भोजन करने वालों में महिलाएँ और बच्चों के अलावा
केवल पुरुषों की संख्या ही चार हज़ार थी। 39तब प्रभु येशु भीड़ को
विदा कर नाव पर चढ़े और मगदन इलाके की सीमा में आए।

16

समय के लक्षणों को पहचानो

1फरीसी और सदूकी पंथ के लोग प्रभु येशु के पास आए। उन्होंने प्रभु
येशु को परखने के लिए उनसे कहा, “हमें ऐसा सबूत दिखाइए जिससे
पता चले कि आपको परमात्मा ने भेजा है।”
2प्रभु येशु ने कहा, “शाम होने पर तुम कहते हो, ‘दिन अच्छा रहेगा,
क्योंकि आसमान साफ है’ 3और सुबह होने पर, ‘आज आँधी आएगी,
क्योंकि आसमान लाल है और बादल छाए हुए हैं।’ तुम आसमान
देखकर मौसम पहचान लेते हो पर अभी जो हो रहा है, उसे तुम नहीं
समझ पा रहे हो।+ 4इस पीढ़ी के लोग बुरे हैं और परमात्मा के प्रति
विश्वासयोग्य नहीं हैं। वे परमात्मा की शक्ति का सबूत और चमत्कार
देखना चाहते हैं, परंतु इनको परमात्मा के प्रवक्ता योना के उदाहरण*
के सबूत के अलावा कोई अन्य सबूत नहीं मिलेगा।”
तब प्रभु येशु उन्हें छोड़कर चले गए।

---

* **16:4** *योना के उदाहरण* - यह निशान पहले से ही 12:39-40 में उलेखित है।

गलत शिक्षा लोगों को बर्बाद कर देती है

5झील की दूसरी ओर पहुँचने पर शिष्यों ने पाया कि वे अपने साथ
रोटी लाना भूल गए हैं। 6प्रभु येशु ने उनसे कहा, “देखो, फरीसियों और
सदूकियों के खमीर से सावधान रहना।”
7वे आपस में बात करने लगे, “हम रोटी लाना भूल गए, इसलिए
उन्होंने हमसे ऐसा कहा।” 8प्रभु येशु ने यह जानकर उनसे कहा, “मुझमें
तुम्हारी आस्था बस इतनी ही है? तुम इस सोच-विचार में क्यों पड़े हो
कि हमारे पास रोटी नहीं है? 9क्या तुमको समझ नहीं आया? क्या
तुम पांच रोटियों से 5,000 लोगों को खिलाने और बचे हुए खाने से
भरे सभी टोकरों के बारे में भूल गए हो? 10और केवल सात रोटियों
से 4,000 लोगों ने खाया और बचे हुए खाने से भरे सभी टोकरे भी
तुम भूल गए? 11मेरी यह बात तुम्हारी समझ में क्यों नहीं आती कि
फरीसियों और सदूकियों के खमीर से सावधान रहना रोटियों के बारे में
नहीं था।”
12तब शिष्यों की समझ में आया कि प्रभु येशु उस खमीर के बारे
में बात नहीं कर रहे थे जिससे रोटी बनती है, परंतु फरीसियों और
सदूकियों की गलत शिक्षा के असर से सावधान रहने को कह रहे थे।

शिष्य पतरस का प्रभु येशु को मुक्तिदाता स्वीकार करना

13जब प्रभु येशु कैसरया-फिलिपी शहर* के पास आए तब उन्होंने
अपने शिष्यों से पूछा, “तेजस्वी मानव-पुत्र को लोग कौन समझते हैं?”
14उन्होंने उत्तर दिया, “कुछ लोग आपको समर्पण-स्नान दाता योहन
समझते हैं, और कुछ लोग परमात्मा के प्रवक्ता एलियाह। और अन्य
लोग समझते हैं कि आप परमात्मा के प्रवक्ता यरमियाह हैं या कोई
और परमात्मा के प्रवक्ता।”
15प्रभु येशु ने पूछा, “पर मैं कौन हूँ? इस बारे में तुम क्या कहते हो?”
16शिमोन पतरस ने उत्तर दिया, “आप मुक्तिदाता और जीवित
परमात्मा के पुत्र हैं!”

---

* **16:13** *कैसरया-फिलिपी शहर* - कैसरिया-फिलिपी ग्रीक देवता पान (जिसे परमात्मा-ग्रंथ में “बाल” भी कहा जाता है) की पूजा का केंद्र था। प्रभु येशु यहाँ अपने शिष्यों को स्पष्ट रूप से बताते हैं कि वह मुक्तिदाता हैं, और उनके सत्संग की दुनिया में किसी भी अन्य आध्यात्मिक शक्ति पर विजय होगी।

[17]प्रभु येशु ने कहा, "योना के पुत्र शिमोन, तुम पर परमात्मा का
आशीर्वाद है! तुम्हारी मानवीय समझ या किसी व्यक्ति* ने तुम पर
यह भेद प्रकट नहीं किया, बल्कि मेरे पिता परमात्मा ने प्रकट किया
है। [18]पतरस, मेरी बात सुनो। तुम्हारे नाम का अर्थ 'चट्टान' है, और इस
चट्टान पर मैं अपने सत्संग की नीवं डालूँगा और मृत्युलोक की शक्ति
इसे रोक न पाएगी। [19]मैं तुम्हें परमात्मा के परमस्वर्ग के साम्राज्य के
अधिकार की चाबियाँ दूँगा। इस अधिकार को प्राप्त करके तुम्हारे द्वारा
जो कुछ भी पृथ्वी पर बाँधा जाएगा परमात्मा उसे बांध चुके हैं। और
जो कुछ भी तुम्हारे द्वारा पृथ्वी पर मुक्त* किया जाएगा वह परमात्मा
द्वारा मुक्त किया जा चुका है।"
[20]तब गुरु येशु ने शिष्यों को चेतावनी दी, "किसी से मत कहना कि
मैं मुक्तिदाता हूँ।"

प्रभु येशु अपने लक्ष्य के प्रति समर्पित

[21]उस समय से गुरु येशु अपने शिष्यों को कहने लगे, "मुझे यरूशलम
जाना ही होगा। वहाँ यहूदी समाज के बड़े, प्रधान पुरोहित और धर्मगुरु
मुझे बहुत दुख देंगे, यहाँ तक कि वे मुझे मार डालेंगे, किंतु परमात्मा
मुझे तीन दिन बाद ज़िन्दा कर देंगे।"
[22]इस पर पतरस ने उन्हें अलग ले जाकर उनसे झिड़क कर कहा,
"प्रभु, आप इस तरह की बात मत कीजिए! परमात्मा ऐसा कभी न होने
दें!"
[23]प्रभु येशु ने पतरस से कहा, "मेरे सामने से हट, शैतान! तू मेरे लक्ष्य
में बाधा पैदा कर रहा है। तू वह सोच रहा है जो मनुष्य चाहता है, न
कि वह जो परमात्मा चाहते हैं।"
[24]तब गुरु येशु ने अपने शिष्यों से कहा, "यदि कोई मेरे शिष्य बनना
चाहता, तो उसको अपना अहम त्यागना होगा, अपना क्रूस उठाना

---

* **16:17** *मानवीय समझ या किसी व्यक्ति* - या, "मांस और खून" इस संदर्भ में इसका अर्थ "मनुष्य और उसकी समझ है।" * **16:19** *मुक्त* - यहाँ और 18:18 में, बाँधना और छोड़ना पतरस और सत्संगियों के अधिकार को दर्शाता है कि वे अशुद्ध आत्माओं को बाँध लें और लोगों को अशुद्ध आत्माओं से मुक्त करें। इसका अर्थ यह भी है कि सत्संग में क्या करने की आज्ञा है और क्या नहीं, यह कहने का अधिकार पतरस और अन्य अनुभवी सेवकों को भी है।

होगा और मेरे पीछे चलना होगा। [25]जो कोई अपने जीवन को बचाना
चाहता है, वह उसे गंवा देगा तथा जो कोई मेरे लिए अपने जीवन की
हानि उठाता है, तो वह अपने जीवन को पा लेगा। [26]यदि कोई सारे
संसार का मालिक बन जाए परंतु उसे मोक्ष प्राप्त न हो, तो उसे क्या
लाभ? क्या संसार में मोक्ष से बढ़कर और कोई बहुमूल्य चीज़ है?
[27]"जब तेजस्वी मानव-पुत्र अपने स्वर्गदूतों के साथ अपने पिता
परमात्मा के तेज में आएँगे, तब वह हर एक व्यक्ति के कर्मों के
अनुसार फल देगा। [28]मैं तुमसे सच कहता हूँ, यहाँ कुछ व्यक्ति खड़े हैं
जो जब तक तेजस्वी मानव-पुत्र को अपने साम्राज्य में आते हुए न देख
लेंगे, तब तक मृत्यु का स्वाद न चखेंगे।"

17

प्रभु येशु का दिव्य रूपांतर

[1]छह दिन बाद प्रभु येशु ने पतरस, याकोब और उसके भाई योहन को
अपने साथ लिया और वह उन्हें एक ऊँचे पहाड़ पर एकांत में ले गए।
[2]वहाँ उनके सामने प्रभु येशु का रूपांतर हो गया। उनका चेहरा सूर्य के
समान चमक उठा और उनके कपड़े प्रकाश की तरह उज्जवल हो गए।
[3]वहाँ शिष्यों को परमात्मा के दोनों प्रवक्ता मोशे और एलियाह प्रभु येशु
के साथ बातचीत करते हुए दिखाई दिए।

[4]तब पतरस ने प्रभु येशु से कहा, "प्रभु, हमारा यहाँ होना कितनी खुशी
की बात है! यदि आप कहें तो मैं+ यहाँ तीन तम्बू के मंदिर बना देता हूँ,
एक आपके लिए, एक मोशे के लिए और एक एलियाह के लिए।"

[5]वह यह बोल ही रहा था कि एक बादल ने उनको ढक लिया और
उसमें से एक आवाज़ आई, "यह मेरा प्रिय पुत्र है और मैं इससे बहुत
खुश हूँ। इसकी बात सुनो और मानों।" [6]शिष्य यह सुनकर डर के मारे
गिर पड़े।

[7]तब प्रभु येशु उनके पास आए और उन्हें छूकर बोले, "उठो, डरो
मत।" [8]जब उन्होंने ऊपर देखा तब गुरु येशु के अलावा कोई और नहीं
था।

17:5 उपदेश 18:15

[9]पहाड़ से उतरते समय गुरु येशु ने शिष्यों को आज्ञा दी, "जब तक
तेजस्वी मानव-पुत्र मरे हुओं में से ज़िन्दा न किया जाए, किसी को इस
दर्शन के बारे में न बताना।"
[10]इस पर उनके शिष्यों ने उनसे पूछा, "धर्मगुरु क्यों कहते हैं कि
मुक्तिदाता के आने से पहले प्रवक्ता एलियाह का आना ज़रूरी है?"
[11]प्रभु येशु बोले, "सच है, एलियाह सब कुछ तैयार करने के लिए पहले
आएँगे। [12]पर मैं तुमसे कहता हूँ कि एलियाह आ चुके हैं किंतु लोगों ने
उन्हें नहीं पहचाना और उनके साथ बुरा व्यवहार किया। इसी प्रकार वे
तेजस्वी मानव-पुत्र के साथ भी बुरा व्यवहार करेंगे।" [13]तब शिष्य समझे
कि वह उनसे समर्पण-स्नान दाता योहन के बारे में कह रहे हैं।

अशुद्ध आत्मा से जकड़ा बालक

[14]प्रभु येशु और उनके शिष्य भीड़ के पास लौट आए। तब एक मनुष्य
गुरु येशु के पास आया और घुटने टेककर बोला, [15]"प्रभु, मेरे पुत्र पर
दया कीजिए। उसे दौरे पड़ते है और बहुत कष्ट होता है। दौरों के कारण
वह कभी आग में गिर पड़ता है और कभी पानी में। [16]मैं उसे आपके
शिष्यों के पास लाया था पर वे उसे ठीक नहीं कर सके।"
[17]प्रभु येशु बोले, "ओ नास्तिक और बिगड़ी हुई पीढ़ी! कब तक मैं
तुम्हारे साथ रहूँगा? कब तक मैं तुमको सहन करूँगा? उस लड़के को
मेरे पास यहाँ लाओ।" [18]तब प्रभु येशु ने अशुद्ध आत्मा को डाँटा और
वह उसमें से निकल गई और लड़का उसी समय ठीक हो गया।
[19]बाद में शिष्यों ने अकेले में गुरु येशु के पास आकर पूछा, "हम उसे
क्यों नहीं निकाल सके?"
[20-21]प्रभु येशु ने उनसे कहा, "तुम्हारी आस्था में कमी के कारण। मैं
तुमसे सच कहता हूँ, यदि तुममें राई के दाने बराबर भी आस्था हो तो
तुम इस पहाड़ से कहोगे, 'यहाँ से हटकर वहाँ जा,' तो वह वहाँ से हट
जाएगा। तुम्हारे लिए कुछ भी असंभव न होगा।"
[22]जब सब शिष्य गलील प्रदेश में जमा हो रहे थे+ तब प्रभु येशु ने उनसे
कहा, "तेजस्वी मानव-पुत्र उन लोगों के हाथ में सौंप दिया जाएगा [23]जो
उसे मार डालेंगे, पर परमात्मा उसे मरे हुओं में से तीसरे दिन ज़िन्दा कर
देंगे।" इस पर शिष्य बहुत दुखी हुए।

गुरु ने मंदिर-टैक्स भरा

24जब गुरु येशु और उनके शिष्य कफरनहूम शहर में आए तब
मंदिर-टैक्स लेने वालों ने पतरस के पास आकर कहा, “क्या तुम्हारे
गुरु मंदिर-टैक्स नहीं देते?”
25पतरस ने कहा, “हाँ, देते हैं।”
जब पतरस घर में आया तब प्रभु येशु ही उससे पहले बोले, “शिमोन,
तुम्हारा क्या विचार है? पृथ्वी के राजा चुंगी और टैक्स किससे लेते
हैं? अपने बच्चों से या दूसरों से?”
26पतरस बोला, “दूसरों से।”
प्रभु येशु ने उससे कहा, “तो उनके बच्चे टैक्स से मुक्त हैं, 27पर हम
मंदिर-टैक्स लेने वालों और अपने आप को परेशानी में नहीं डालना
चाहते। इसलिए झील पर जाकर काँटा डालो और जो पहली मछली
पकड़ो, उसका मुँह खोलो और उसमें तुम्हें चाँदी का एक सिक्का
मिलेगा। उसे लेकर मेरा और अपना मंदिर-टैक्स भर दो।”

18

बच्चों के स्वभाव से परमात्मा के साम्राज्य में प्रवेश

1उस समय शिष्यों ने आकर प्रभु येशु से पूछा, “परमात्मा के
परमस्वर्ग के साम्राज्य में सबसे ऊँचा पद किसका है?”
2प्रभु येशु ने एक बच्चे को अपने पास बुलाकर उन लोगों के बीच में
खड़ा किया 3और लोगों को कहा, “मेरी बात ध्यान से सुनो। तुमको
अपना स्वभाव बदलना होगा और बच्चों के समान कोमल बनना होगा।
नहीं तो, तुम परमात्मा के परमस्वर्ग के साम्राज्य में कभी नहीं जा
सकोगे। 4जो मनुष्य अपने आपको इस बच्चे के समान नम्र बनाता है,
उसे परमात्मा के साम्राज्य में सबसे ऊँचा पद मिलेगा। 5और जो कोई
एक बच्चे को मेरे नाम से प्यार करता है, वह मुझ से प्यार करता है।

दूसरों को पाप में फँसाने के गंभीर परिणाम

6“जो पाप का जाल बिछाकर मुझ पर आस्था रखने वाले मासूम
बच्चों को फँसाते हैं, उन लोगों के लिए अच्छा यह है कि उनके गले में
चक्की के पत्थर बांधे जाएँ और उन्हें समुद्र में फेंक कर डुबो दिया जाए।

[7]जो लोगों को फ़साने के लिए जाल बिछाते हैं, उनको इसका परिणाम
भुगतना होगा! पाप के जाल में फँसने के अवसर आएँगे ज़रूर, लेकिन
परमात्मा उन लोगों को भयानक दंड देंगे जिसने वह जाल बिछाएँ हैं।
[8]"यदि तुम्हारा हाथ या पैर तुम्हें पाप में फँसाए तो उसे काटकर
अलग फेंक दो। तुम्हारा लूला या लँगड़ा होकर मोक्ष प्राप्त करना इससे
कहीं अच्छा है कि तुम दो हाथ-पैर रहते हुए कभी न बुझने वाली
आग में डाले जाओ। [9]यदि तुम्हारी आँख तुम्हें पाप में फँसाए तो उसे
निकालकर फेंक दो। एक आँख लेकर मोक्ष प्राप्त करना इससे कहीं
अच्छा है कि दो आँखें होते हुए तुम नरक की आग में डाले जाओ।

परमात्मा सबकी चिंता करते हैं

[10]"देखो, इन छोटे बच्चों में से किसी के साथ भी बुरा व्यवहार
मत करना! क्योंकि मैं तुमसे कहता हूँ, परमस्वर्ग में इन बच्चों के
रक्षक-स्वर्गदूत उनकी हर बात की सूचना परमात्मा को देते हैं।
[11-12]+तुम इस बारे में क्या सोचते हो यदि किसी मनुष्य के पास सौ भेड़ें
हों और उनमें से एक भेड़ भी भटक जाए, तो क्या वह निन्यानवे को
पहाड़ पर छोड़कर उस भटकी हुई एक भेड़ को ढूँढ़ने न जाएगा?
[13]यदि वह रास्ता भटक गई भेड़ उसे मिल जाए, तो मैं सच कहता
हूँ, वह उसके लिए निन्यानवे भेड़ों के मुकाबले, जो भटकी नहीं थीं,
ज़्यादा खुशी मनाएगा। [14]इसी प्रकार तुम्हारे+ पिता परमात्मा यह नहीं
चाहते हैं कि इन बच्चों में से एक भी रास्ता भटके।

पापी को रास्ते पर कैसे लाएँ

[15]"यदि तुम्हारा भाई या बहन तुम्हारे विरुद्ध+ पाप करे तो जाओ और
अकेले में जहाँ केवल तुम और वह हो, उसकी गलती उसे समझा दो।
यदि वह तुम्हारी बात सुन ले तो तुम उसको वापस सही रास्ते पर ले
आए। [16]यदि वह तुम्हारी बात न सुने तो अपने साथ एक या दो लोगों
को और ले जाओ। परमात्मा-ग्रंथ में लिखा है कि दो या तीन गवाहों
के सामने हर एक आरोप साबित हो। [17]यदि वह उनकी बात भी न सुने

18:16 उपदेश 19:15

तो सत्संग के सामने उसकी बात रखो। और यदि वह सत्संग की बात
भी न माने, तो उसके साथ ऐसा ही व्यवहार करो, जैसे अधर्मी और
बेईमान टैक्स लेने वालों के साथ किया जाता है।
[18]“मैं तुम पर सच्चाई प्रकट करता हूँ, तुम्हारे द्वारा जो कुछ भी पृथ्वी
पर बाँधा जाएगा, परमात्मा उसे बांध चुके हैं। और जो कुछ भी तुम्हारे
द्वारा पृथ्वी पर मुक्त किया जाएगा वह परमात्मा द्वारा मुक्त किया
जा चुका है।* [19]मैं तुम्हें सच्चाई बताता हूँ, यदि तुममें से दो व्यक्ति
पृथ्वी पर किसी बात के लिए एक मत होकर उसे माँगे, तो मेरे पिता
परमात्मा, उसे कर देंगे। [20]क्योंकि जहाँ मेरे दो या तीन भक्त इकट्ठा होते
हैं, वहाँ मैं उनके बीच में होता हूँ।”

माफ न करना परमात्मा के क्रोध को जगाता है

[21]तब पतरस ने प्रभु येशु के पास आकर कहा, “प्रभु, अगर कोई मेरे
विरुद्ध पाप करे तो मैं कितनी बार मैं माफ करूँ? क्या सात बार?”
[22]प्रभु येशु बोले, “सिर्फ सात बार नहीं, परंतु अनगिनत बार! [23]सुनो,
इस कहानी से तुम्हें पता चलेगा कि परमात्मा के परमस्वर्ग का
साम्राज्य कैसा है।
“एक दिन एक राजा ने अपने सेवकों को बुलाया और उनसे पूछा कि
उन्हें उसका कितना कर्ज़ चुकाना है। [24]जब वह हिसाब लेने लगा तो उसके
सामने एक सेवक लाया गया जिस पर दस हजार सोने के सिक्कों* का कर्ज़
था। [25]उसके पास देने को कुछ नहीं था, इसलिए राजा ने आज्ञा दी कि
उसकी पत्नी, बच्चों और उसे गुलाम बनाकर बेच दिया जाए और जो कुछ
उसके पास है, उसे भी बेच दिया जाए और कर्ज़ चुका लिया जाए।
[26]“इस पर वह सेवक राजा के चरणों पर गिर पड़ा और विनती करने
लगा, ‘राजन, सबर रखिए, मैं आपका सारा कर्ज़ा चुका दूँगा।’ [27]तब
राजा ने उस पर दया दिखाकर उसका सारा कर्ज़ माफ कर दिया और
उसे जाने दिया।

---

* **18:18** जैसा कि 16:19 पद में, यह अनदेखी दुनिया में अशुद्ध आत्माओं पर सत्संगियों के अधिकार को संदर्भित करता है और सत्संग के अधिकार को सत्संग में कुछ कार्यों या व्यवहारों को करना चाहिए या नहीं इसकी आज्ञा देता है। * **18:24** *दस हजार सोने के सिक्कों* - यह उस समय की गणना में उपयोग की जाने वाली सबसे अधिक संख्या है जैसे आज के समय के करोड़ों रुपए।

[28]"जब यह सेवक बाहर निकला तब उसे अपना एक साथी मिला
जिस पर उसका सौ चाँदी के सिक्कों का कर्ज़ था। वह उसे पकड़कर
उसका गला घोंटने लगा और बोला, 'तूने जो मुझसे कर्ज़ लिया है,
लौटा दे।'

[29]"उसका साथी उसके पैरों पर गिर पड़ा और विनती करने लगा,
'सबर रखो, मैं तुम्हारा सारा कर्ज़ा चुका दूँगा।' [30]लेकिन उसने उसकी
एक न सुनी और कर्ज़ चुकाने तक उसे जेल में डलवा दिया।

[31]"जब कुछ अन्य सेवकों को इस बारे में पता चला तो वे बहुत
नाराज़ हुए और उन्होंने सारी बात राजा को बता दी।

[32]"तब राजा ने उस पहले सेवक को बुलाकर कहा, 'तू बुरा इंसान
है! तेरे विनती करने पर मैंने तेरा सारा कर्ज़ माफ कर दिया था। [33]तो
क्या तुझे भी मेरी ही तरह अपने साथी पर दया नहीं दिखानी नहीं
चाहिए थी?' [34]राजा इतना नाराज़ हुआ कि उसने सेवक को तब तक
यातना देने का आदेश दिया जब तक कि वह सारा कर्ज़ा न चुका दे।
[35]इसी प्रकार यदि तुम में से हर एक व्यक्ति अपने भक्त भाइयों और
बहनों को दिल से माफ नहीं करेगा, तो मेरे पिता परमात्मा भी तुम्हारे
साथ ऐसा ही व्यवहार करेंगे।"

19

[1]जब प्रभु येशु ये बातें कह चुके तब वह गलील प्रदेश से चले गए
और यरदन नदी पार यहूदिया प्रदेश में आए। [2]वहाँ एक बड़ी भीड़ उनके
पीछे-पीछे चलने लगी और प्रभु येशु ने भीड़ में बीमार लोगों को स्वस्थ
किया।

तलाक का प्रश्न

[3]कुछ फरीसी धार्मिक पंथ के लोग प्रभु येशु के पास आए और
उनको परखने के लिए बोले, "क्या किसी भी कारण से अपनी पत्नी
को तलाक दिया जा सकता है? क्या मोशे के नियम और शिक्षा के
नज़रिए से यह सही है?"

[4]प्रभु येशु ने उत्तर दिया, "क्या तुम नहीं जानते हो कि दुनिया बनाने
वाले ने आरंभ में आदमी और औरत को बनाया था? [5]और इसलिए,

‘पति और उसकी पत्नी दो नहीं, परंतु एक तन हैं और उन्होंने एक नए
अनोखे रिश्ते की शुरुआत की है। यह रिश्ता उसके माता-पिता के रिश्ते
से अलग है।’ 6अब वे दो नहीं, परंतु एक* हैं। इसलिए जिसे परमात्मा ने
जोड़ा है, उन्हें कोई इंसान अलग न करें।”
7फरीसियों ने पूछा, “लेकिन परमात्मा के प्रवक्ता मोशे ने एक नियम
बनाया जो कहता है कि एक आदमी अपनी पत्नी को तलाक का कागज़
देकर घर से जाने के लिए कह सकता है। उन्होंने ऐसा नियम क्यों बनाया?”
8प्रभु येशु ने उनसे कहा, “तुम्हारे मन की कठोरता के कारण मोशे ने
वह नियम बनाया, लेकिन शुरुआत में परमात्मा का ऐसा नियम बनाने
का कोई इरादा नहीं था। 9मैं तुमसे कहता हूँ, जो आदमी अपनी पत्नी
के किसी और के साथ शारीरिक सम्बन्ध रखने के अलावा, यदि
किसी और कारण से उसे तलाक दे और दूसरी औरत से शादी कर ले,
तो वह आदमी यौन पाप करता है।”+
10शिष्यों ने उनसे कहा, “यदि पति-पत्नी का सम्बन्ध ऐसा है तो शादी
न करना ही अच्छा है।”
11प्रभु येशु ने उनसे कहा, “केवल वही लोग इस शिक्षा को स्वीकार
कर सकते हैं जिन्हें अविवाहित रहने का वरदान दिया गया है। 12जैसे
कुछ लोग माता के गर्भ से ही नपुंसक पैदा हुए है, कुछ हैं जिन्हें मनुष्यों
ने नपुंसक बना दिया है और कुछ लोगों ने परमात्मा के परमस्वर्ग के
साम्राज्य के लिए अपने आपको नपुंसक बना लिया है। जो यह शिक्षा
स्वीकार कर सकता है, वह स्वीकार करे।”

प्रभु का बच्चों को आशीर्वाद

13कुछ लोग अपने बच्चों को प्रभु येशु के पास लाए कि वह उनके सिर
पर हाथ रखें और आशीर्वाद दें, पर शिष्यों ने उन लोगों को डाँटा।
14प्रभु येशु ने कहा, “बच्चों को मेरे पास आने दो, उन्हें आने से मना
मत करो, क्योंकि परमात्मा के परमस्वर्ग का साम्राज्य ऐसे लोगों का
है जो इन बच्चों के समान हैं।” 15प्रभु येशु ने उनके सिर पर हाथ रख कर
उन्हें आशीर्वाद दिया और वहाँ से चले गए।

19:5 उत्पत्ति 1:27; 2:24 * **19:6** एक - या, “एक नया परिवार”

केवल अच्छे कर्मों से मोक्ष की प्राप्ति नहीं

[16]एक युवक ने पास आकर प्रभु येशु से कहा, "गुरुजी, मैं कौन-से
अच्छे काम करूँ जिससे मुझे मोक्ष प्राप्त हो?"
[17]प्रभु येशु बोले, "तुम मुझसे क्यों पूछते हो की अच्छा क्या है?
केवल परमात्मा ही अच्छे हैं। यदि तुम मोक्ष प्राप्त करना चाहते हो तो
उनकी आज्ञाओं का पालन करो।"
[18]वह बोला, "कौन-सी आज्ञाएँ?"
प्रभु येशु ने कहा, "हत्या न करो, शादी के बाहर शारीरिक सम्बन्ध
न रखना, चोरी न करो, दूसरों के बारे में झूठ मत बोलो, [19]अपने
माता-पिता का आदर करो और दूसरों से अपने समान प्रेम करो।"
[20]युवक ने उत्तर दिया, "इन सबका तो मैं पालन करता आया हूँ, मुझे
और क्या करना चाहिए?"
[21]प्रभु येशु ने उससे कहा, "यदि तुम सिद्ध होना चाहते हो तो जाओ,
अपनी संपत्ति बेच दो और जो पैसे मिले उसे गरीबों में बाँट दो, और
तुम्हें परमस्वर्ग में धन मिलेंगे। उसके बाद आना और मेरे शिष्य
बनना।" [22]वह युवक यह बात सुनकर उदास हो गया और वहाँ से
चला गया, क्योंकि वह बहुत अमीर था।
[23]तब प्रभु येशु ने अपने शिष्यों से कहा, "तुम मेरी बातों की सच्चाई
को देख सकते हो, अमीर व्यक्ति का परमात्मा के परमस्वर्ग के
साम्राज्य में जाना कितना मुश्किल है। [24]यह बात सच है कि परमात्मा
के साम्राज्य में अमीर व्यक्ति के जाने के मुकाबले ऊँट का सुई के छेद
में होकर निकल जाना ज़्यादा आसान है।"
[25]यह सुनकर उनके शिष्य बहुत हैरान हुए और कहने लगे, "तो फिर
कौन मुक्ति प्राप्त कर सकता है?"
[26]प्रभु येशु ने उनकी ओर देखकर कहा, "मनुष्यों के लिए तो यह
असंभव है, पर परमात्मा के लिए सबकुछ संभव है।"
[27]इस पर पतरस ने उनसे पूछा, "देखिए, हम तो सबकुछ छोड़कर
आपके शिष्य हो गए हैं। परमात्मा हमें क्या इनाम देंगे?"
[28]प्रभु येशु ने कहा, "मैं सच कहता हूँ, जब परमात्मा का सम्राज्य
पूरी तरह से पृथ्वी पर आएगा और तेजस्वी मानव-पुत्र अपने राजसी
सिंहासन पर बैठेगा तो तुम जो मेरे शिष्य हो, बारह सिंहासनों पर बैठोगे

और इज़राएल देश के बारह वंशों का न्याय करोगे। [29]जो कोई भी मेरे
लिए अपने भाई-बहन, पिता-माता, बच्चे, घर और ज़मीन को छोड़ कर
आया है, वह न सिर्फ इन सब का सौ गुना+ पाएगा परंतु मोक्ष भी प्राप्त
करेगा। [30]जिन्हें यहाँ कुछ नहीं समझा जाता है, वहाँ उन्हें बहुत सम्मान
मिलेगा और जिन्हें बहुत कुछ समझा जाता हैं, उन्हें वहाँ कोई सम्मान
नहीं मिलेगा।”

20

परमात्मा की उदारता अद्‌भुत है

[1]प्रभु येशु ने आगे कहा, “परमात्मा के परमस्वर्ग का साम्राज्य उस
ज़मींदार के समान है जो सुबह निकला कि अपने अंगूर के बाग
में मज़दूरों को लगाए। [2]उसने मज़दूरों को दिहाड़ी मज़दूरी देने पर
ठहराकर अपने अंगूर के बाग में भेजा।

[3]“फिर लगभग सुबह के नौ बजे वह कुछ और मज़दूरों को लाने
निकला और कुछ मज़दूरों को उसने नगर-चौक में बिना रोज़गार खड़े
देखा। [4]उसने कहा, ‘तुम भी अंगूर के बाग में जाओ और जो सही
दिहाड़ी होगी वह मैं तुम्हें दूँगा।’ [5]तो वे भी अंगूर के बाग में मज़दूरी
करने चले गए।

“जमींदार फिर बारह और तीन बजे कुछ और मजदूरों की तलाश में
बाहर निकला और मजदूरों को दिहाड़ी पर रख लिया।

[6]“शाम पाँच बजे वह फिर बाहर गया। उसने कुछ और मज़दूरों को वहाँ
खड़े देखा। उसने उनसे कहा, ‘तुम यहाँ दिनभर क्यों बेकार खड़े रहे?’

[7]“वे बोले, ‘किसी ने हमें मज़दूरी पर नहीं लगाया।’

“जमींदार ने उनसे कहा, ‘तुम भी बाग में जाकर मज़दूरी करो।’

[8]“शाम होने पर अंगूर बाग के मालिक ने हिसाब-किताब रखने वाले
अधिकारी से कहा, ‘मज़दूरों को बुलाओ और उनको मज़दूरी दो।’
ज़मींदार ने यह भी कहा, ‘जो बाद में आए थे मज़दूरी देने की शुरुआत
उनसे करो।’ [9]तो जो मज़दूर शाम को पाँच बजे मज़दूरी करने आए थे,
उन्हें भी पूरे दिन की मज़दूरी मिली।

[10]“इस पर जो मज़दूर पहले आए थे, उन्होंने समझा कि हमें अधिक
मज़दूरी मिलेगी, परंतु उन्हें भी उतनी ही मिली। [11]हालाँकि मज़दूरी तो

उन्होंने ले ली, पर वे ज़मींदार पर बड़बड़ाने लगे [12]और बोले, 'जो लोग
देर से आए, उन्होंने केवल एक घंटा ही काम किया था तो भी आपने
इन्हें हमारे बराबर मज़दूरी दी। हमने दिनभर धूप में कड़ी मेहनत की!'
[13]"जमींदार ने उनमें से एक को उत्तर दिया, 'मित्र, मैं तुम्हारे साथ
कोई अन्याय नहीं कर रहा। क्या तुमने मुझसे दिहाड़ी नहीं ठहराई थी?
[14]जो तुम्हारा बनता है, उसे लो और चले जाओ। यह मेरी इच्छा है कि
जितना तुम्हें दूँ उतना ही उसको भी जो बाद में आया है। [15]क्या मुझे
अधिकार नहीं कि जो मेरा है उससे मैं जो चाहूँ करूँ? क्या मेरा उदार
होना तुम्हारी आँखों में खटकता है?' [16]इस प्रकार जो बाद में आएँगे, वे
पहले होंगे और जो पहले आए हैं, वे आखिर में होंगे।"

प्रभु येशु का अपनी मृत्यु के बारे में पहली बार बताना

[17]यरूशलम शहर जाते समय गुरु येशु बारह राजदूतों* को एकांत में ले
गए और उनसे कहने लगे,
[18]"देखो, हम यरूशलम जा रहे हैं, और तेजस्वी मानव-पुत्र प्रधान
पुरोहितों और धर्मगुरुओं के हाथ पकड़वाया जाएगा। वे उसे मृत्युदंड
दिलवाएँगे [19]और विदेशी रोम शासकों के हाथ में सौंप देंगे कि
वे उसका मज़ाक उड़ाएँ, उसे कोड़े लगाएँ और क्रूस पर कीलों से
ठोककर मार डालें। परंतु तीसरे दिन परमात्मा उसे ज़िन्दा कर देंगे।"

माँ ने बेटों के लिए विशेष स्थान माँगा

[20]तब ज़बदियाह की पत्नी अपने बेटों याकोब और योहन के साथ
प्रभु येशु के पास आई और घुटने टेक कर कहने लगी कि वह उसके
लिए कुछ करें। [21]प्रभु येशु ने उससे पूछा, "तुम क्या चाहती हो?"
वह बोली, "आज्ञा दीजिए कि आपके साम्राज्य में मेरे ये दोनों बेटे,
एक आपकी दाईं ओर और दूसरा बाईं ओर बैठे।"
[22]प्रभु येशु ने उनसे कहा, "तुम्हें पता नहीं कि तुम क्या माँग रहे हो।
क्या तुममें उन दुखों को सहने की* शक्ति है जिन्हें मैं सहने वाला हूँ?"

---

* **20:17** *बारह राजदूतों* - या, "बारह" है। इन बारह को शिष्य और राजदूत दोनों कहा जाता है।
* **20:22** *दुखों को सहने की* - या, "प्याले से पीना" का अर्थ है, "दुख सहना"

योहन और याकोब ने कहा, "जी हाँ, हममें है।"
[23]प्रभु येशु ने कहा, "तुम मेरे दुखों को सहोगे, परंतु अपने दाएँ और
बाएँ बैठाना मेरे अधिकार में नहीं आता। यह स्थान उनके लिए है
जिनके लिए मेरे पिता परमात्मा ने इसे तैयार किया है।"
[24]जब दस दूसरे शिष्यों ने यह सुना तो वे दोनों भाइयों पर नाराज़ हुए।
[25]परंतु प्रभु येशु ने अपने शिष्यों को बुलाकर कहा, "तुम जानते हो
कि संसार के शासक अपनी-अपनी प्रजा पर निरंकुश शासन करते हैं
और उनके बड़े अधिकारी प्रजा पर अधिकार जताते हैं। [26]परंतु तुम्हारे
बीच ऐसा नहीं होगा। तुम में जो बड़ा बनना चाहे, वह तुम्हारा सेवक
बने। [27]और जो तुममें प्रमुख होना चाहे, वह तुम्हारा सेवक बने। [28]जैसे
तेजस्वी मानव-पुत्र सेवा कराने नहीं, परंतु सेवा करने और बहुत से लोगों
को मुक्ति देने के बदले में, अपने प्राणों की बलि देने के लिए आए है।"

दो अंधों का भक्त बनना

[29]जब प्रभु येशु और उनके शिष्य यरीखो नगर से निकल रहे थे तब
बड़ी भीड़ उनके पीछे हो ली। [30]रास्ते के किनारे बैठे हुए दो अंधों
ने सुना कि प्रभु येशु जा रहे हैं, तो वे पुकारकर कहने लगे, "हे प्रभु,+
राजा दाविद के वंशज, हम पर दया कीजिए!"
[31]भीड़ ने अंधों को डाँटा कि वे पुकारना बंद करें, पर वे और भी
ऊँची आवाज़ में चिल्ला कर कहने लगे, "हे प्रभु, राजा दाविद के वंशज,
हम पर दया कीजिए!"
[32]प्रभु येशु रुक गए और उनको बुलाकर पूछा, "तुम मुझ से क्या
चाहते हो?"
[33]वे बोले, "प्रभु, हमारी आँखें ठीक हो जाएँ।" [34]प्रभु येशु को उन
पर दया आई और उन्होंने अंधों की आँखें छुईं। उसी समय अंधों को
दिखाई देने लगा और वे उनके शिष्य बनकर उनके पीछे हो लिए।

21

राजा येशु का यरूशलम में प्रवेश

[1]गुरु येशु और उनके शिष्य यरूशलम शहर के नज़दीक पहुँचे। जब वे
जैतून नामक पहाड़ी पर बैथफगे गाँव के पास आए तब गुरु येशु ने दो

शिष्यों को यह कहकर भेजा, [2]“अपने सामने के गाँव में जाओ। वहाँ
पहुँचते ही तुम्हें एक गधी और उसका बच्चा बाँधें हुए मिलेंगे। उनको
खोलकर मेरे पास ले आओ। [3]यदि कोई तुमसे कुछ बोले तो कह देना,
‘प्रभु को इनकी ज़रूरत है’ और वह तुरंत उन्हें तुम्हारे हवाले कर देगा।”
[4-7]शिष्य गए और प्रभु येशु के आदेश के अनुसार काम किया। उन्होंने
गधी और उसके बच्चे को लाकर उनकी पीठ पर कपड़े बिछा दिए और
प्रभु येशु उन पर आराम से बैठ गए। इसलिए परमात्मा द्वारा किया गया
यह वादा जैसा कि परमात्मा के प्रवक्ता ने कहा था, पूरा हुआ,

“यरूशलम शहर के लोगों से कहो,
‘देखो, तुम्हारे राजा तुम्हारे पास आ रहे हैं।
उनका मन कोमल है।
वह गधी पर
और गधी के बच्चे पर सवार हैं।’”

[8]बहुत लोगों ने उनके सम्मान में रास्ते पर कपड़े बिछाए और अन्य
लोगों ने उनके आदर में पेड़ों से डालियाँ काटकर रास्ते पर फैला दीं।
[9]प्रभु येशु के आगे और उनके पीछे चलने वाली भीड़ जयकारे लगा
रही थी,

“राजा दाविद के वंशज की जय हो!
प्रभु परमात्मा के नाम से आने वाले का गुणगान हो!
परमस्वर्ग में विराजमान परमात्मा की जय हो!”

[10]जब प्रभु येशु यरूशलम आए तब सारे शहर में हलचल मच गई।
लोग एक दूसरे से पूछने लगे, “यह कौन हैं?”
[11]भीड़ के लोगों ने उन्हें बताया, “यह गलील प्रदेश के
नासरत-निवासी परमात्मा के प्रवक्ता येशु हैं।”

प्रभु येशु ने मंदिर में व्यापारियों को खदेड़ा

[12]प्रभु येशु परमात्मा के+ मंदिर के आँगन में आए और वहाँ से
खरीदने-बेचने का व्यापार करने वाले सब लोगों को बाहर खदेड़
दिया। प्रभु येशु मुद्रा-व्यापार करने वालों की मेज़ें और बलि

21:4-7 जकरयाह 9:9

के लिए कबूतर बेचने वालों की गद्दियाँ उलट दीं [13]और उनसे
कहा, “परमात्मा-ग्रंथ में कहा गया है, ‘मेरा मंदिर प्रार्थना का मंदिर
कहलाएगा,’* पर तुमने तो उसे चोरों का अड्डा बना दिया है।”
[14]मंदिर में प्रभु येशु के पास अंधे और लँगड़े आए और उन्होंने उनको
ठीक कर दिया। [15]जब प्रधान पुरोहित और धर्मगुरुओं ने प्रभु येशु के
चमत्कारों को देखा और मंदिर में बच्चों के मुँह से “राजा दाविद के
वंशज की जय” सुनी, तब वे बहुत गुस्सा हुए [16]और प्रभु येशु से बोले,
“क्या आप सुन रहे हैं कि ये बच्चे क्या कह रहे हैं?”

उन्होंने कहा, “हाँ मैं सुन रहा हूँ, परंतु क्या तुमने परमात्मा-ग्रंथ में नहीं
पढ़ा, ‘प्रभु परमात्मा ने बच्चों और शिशुओं के मुँह से अपना गुणगान
कराया’?” [17]तब प्रभु येशु उनके पास से शहर के बाहर बैथनिया गाँव
को चले गए और वहाँ रात बिताई।

विश्वास की प्रार्थना से चमत्कार होते हैं

[18]सुबह शहर को लौटते समय प्रभु येशु को भूख लगी। [19]उन्होंने
रास्ते के किनारे अंजीर का एक पेड़ देखा। वह उसके पास गए, परंतु
उसमें पत्तों को छोड़कर कुछ नहीं पाया। उन्होंने अंजीर के पेड़ से
कहा, “अब से तुझमें कभी फल न लगें।” वह पेड़ उसी समय सूख
गया।

[20]यह देखकर शिष्यों को हैरानी हुई और वे बोले, “यह अंजीर का
पेड़ तुरंत कैसे सूख गया?”

[21]प्रभु येशु बोले, “मेरी बात ध्यान से सुनो, यदि तुम आस्था रखो
और शक न करो, तो तुम इस पेड़ के साथ वैसा ही करोगे जैसा
मैं ने किया, परंतु तुम इससे भी बढ़कर करोगे। तुम इस पहाड़ को
आदेश दोगे, ‘उठ और समुद्र में कूद जा,’ तो यह भी हो जाएगा।
[22]तुम प्रार्थना में विश्वास के साथ जो कुछ माँगोगे, वह तुम्हें
मिलेगा।”

---

* **21:13** *मेरा मंदिर प्रार्थना का मंदिर कहलाएगा* - या, “मेरा भवन प्रार्थना का भवन कहलाएगा,” लेकिन इस संदर्भ में और परमात्मा-ग्रंथ में, अर्थ यरूशलम मंदिर है। परमात्मा के प्रवक्ता यशायाह के अनुसार वह मंदिर दुनिया के सभी समाजों के लोगों के लिए प्रार्थना का स्थान माना जाता था।

21:13 यशायाह 56:7; यरमियाह 7:11 **21:16** भजन शास्त्र 8:2

प्रभु येशु के अधिकार पर शंका

[23]प्रभु येशु मंदिर के आँगन में गए और वहाँ जब वह उपदेश दे रहे थे तब प्रधान पुरोहितों और समाज के बड़ों ने उनके पास आकर पूछा, "किस अधिकार से आप ये काम करते हैं? और किसने आपको यह अधिकार दिया है?"

[24]प्रभु येशु ने उन्हें उत्तर दिया, "मैं भी आप लोगों से एक सवाल पूछता हूँ। यदि आप लोग मुझे जवाब देंगे तो मैं भी आपको बता दूँगा
कि किस अधिकार से मैं ये काम करता हूँ। [25]समर्पण-स्नान देने का
अधिकार योहन को कहाँ से प्राप्त हुआ था? परमात्मा की ओर से* या इंसान की ओर से?"

वे आपस में बात करने लगे, "यदि हम कहें 'परमात्मा की ओर से' तो वह हमसे कहेंगे, 'फिर तुमने योहन पर क्यों नहीं विश्वास किया?'
[26]परंतु यदि हम कहें 'इंसान की ओर से' तो डर लगता है कि लोग हमें कोई भी हानि पहुँचा सकते हैं, क्योंकि सब लोग योहन को परमात्मा
के प्रवक्ता मानते हैं।" [27]इसलिए उन्होंने प्रभु येशु को उत्तर दिया, "हम नहीं जानते।"

इस पर प्रभु येशु ने उनसे कहा, "मैं भी तुम्हें नहीं बताता कि मैं किस अधिकार से यह सब करता हूँ।"

परमात्मा के साम्राज्य में सबका स्वागत है

[28]प्रभु येशु ने उनसे पूछा, "तुम इसके बारे में क्या सोचते हो? एक मनुष्य के दो बेटे थे। उसने बड़े बेटे के पास जाकर कहा, 'बेटे, आज
अंगूर के बाग में जाकर काम करो।' [29]उसके बेटे ने पिता से कहा कि वह नहीं जाएगा, लेकिन बाद में उसने अपना इरादा बदल दिया और
अंगूर के बाग में चला गया। [30]तब पिता ने अपने छोटे बेटे को अंगूर के बाग में काम करने के लिए कहा। बेटे ने कहा कि वह जाएगा, लेकिन
वह नहीं गया। [31]इनमें से किसने अपने पिता की इच्छा पूरी की?"

महापुरोहित और समाज के बड़ो ने कहा, "बड़े बेटे ने।"

---

* **21:25** *परमात्मा की ओर से* - या, "परमस्वर्ग की ओर से," लेकिन इस संदर्भ में इसका का अर्थ "परमात्मा की ओर से" है।

प्रभु येशु ने उनसे कहा, “मेरी बात ध्यान से सुनो। बेईमान टैक्स लेने
वाले और वेश्याएँ परमात्मा के साम्राज्य में तुमसे पहले जा रहे हैं। [32]योहन
आए और उन्होंने तुम्हें परमात्मा की आज्ञाओं का पालन करने का रास्ता
दिखाया और तुमने उन पर विश्वास नहीं किया, परंतु टैक्स लेने वालों
और वेश्याओं ने उन पर विश्वास किया। तुमने यह सब अपनी आँखों से
देखा, परंतु फिर भी तुमने अपने में कोई बदलाव नहीं किया।”

धार्मिक गुरुओं को आईना दिखाना

[33]गुरु येशु ने महापुरोहितों और समाज के बड़ों से यह कहानी सुनने
को कहा।

“एक ज़मींदार था जिसने अंगूर का बाग लगाया और उसके चारों ओर
पत्थर की दिवार बनाई, उसमें अंगूरों के लिए रसकुंड बनाया और
उसकी पहरेदारी के लिए एक ऊंचा स्थान बनाया। यह सब इन्तज़ाम
करने के बाद वह बाग को किराए पर देकर विदेश चला गया।

[34]“जब फल का मौसम आया तब ज़मींदार ने पट्टेदार किसानों
के पास अपने नौकर भेजे कि वे उसको फसल का हिस्सा दें। [35]परंतु
किसानों ने उसके नौकरों को पकड़कर पीटा, किसी की हत्या कर
दी और किसी को पत्थरों से मार डाला। [36]तब उसने पहले से ज़्यादा
नौकरों को भेजा। परंतु किसानों ने उनके साथ भी वैसा ही किया।

[37]“अंत में यह सोचकर कि ये लोग मेरे बेटे का आदर करेंगे, उसने
अपने बेटे को उनके पास भेजा। [38]जब किसानों ने बेटे को देखा तो
वे आपस में कहने लगे, ‘यह तो इस संपत्ति का वारिस है। आओ,
इसे मार डालें कि इसकी पूरी संपत्ति हमारी हो जाए।’ [39]तो उन्होंने उसे
पकड़ा और अंगूर बाग के बाहर निकालकर मार डाला।”

[40]प्रभु येशु ने उन लोगों से कहा, “मुझे बताइए, जब अंगूर के बाग का
मालिक आएगा, तब वह इन किसानों के साथ क्या करेगा?”

[41]प्रधान पुरोहितों और समाज के बड़ों ने कहा, “वह उन हत्यारों का
विनाश करेगा और अंगूर का बाग दूसरे किसानों को दे देगा जो अंगूर
का मौसम आने पर उसे फसल का हिस्सा दिया करेंगे।”

[42]प्रभु येशु ने उनसे कहा, “तो फिर परमात्मा-ग्रंथ में इस पद का क्या
अर्थ है?

‘जिस पत्थर को भवन बनाने वालों ने बेकार समझा
वह नींव का सबसे महत्वपूर्ण पत्थर बन गया।
यह प्रभु परमात्मा की ओर से हुआ
और हमारी दृष्टि में अद्‌भुत है।’
43“इसलिए मैं तुमसे कहता हूँ, परमात्मा का साम्राज्य तुमसे ले लिया
जाएगा और अलग-अलग देश के उन लोगों को दे दिया जाएगा जो
परमात्मा की आज्ञा मानते हैं। 44जो कोई भी इस मुख्य पत्थर को
ठुकराता है, वह गिर जाएगा और दुख उठाएगा, और जिस पर भी यह
मुख्य पत्थर गिरेगा, वह दंड से कुचल दिया जाएगा।”*
45प्रधान पुरोहित और फरीसी उनकी कहानियों को सुनकर समझ
गए कि प्रभु येशु उनके ही बारे में कह रहे हैं। 46इसलिए वे प्रभु येशु
को गिरफ्तार करने का रास्ता खोजने लगे, पर वे लोगों से डरते थे,
क्योंकि लोग प्रभु येशु को परमात्मा के प्रवक्ता मानते थे।

22

परमात्मा के निमंत्रण को प्राथमिकता दो

1प्रभु येशु ने फिर कहानियाँ सुनाते हुए कहा। 2“परमात्मा के
परमस्वर्ग के साम्राज्य की तुलना उस राजा से की जा सकती है जिसने
अपने बेटे की शादी की दावत दी। 3उसने अपने सेवकों को भेजा
कि वे दावत में आमन्त्रित मेहमानों को बुला लाएँ। परंतु उन लोगों
ने आने से मना कर दिया। 4उसने फिर अन्य सेवकों को यह कहकर
भेजा, ‘मेहमानों से कहना, देखिए, मैं दावत* की तैयारी कर चुका हूँ।
मैंने अच्छे-अच्छे पकवान बनवाए हैं और सबकुछ तैयार हैं। दावत में
आइए।’
5“लेकिन मेहमानों ने राजा के सेवकों की बात पर कोई ध्यान नहीं
दिया। उनमें से कुछ अपने खेतों के लिए चले गए, और कुछ अपने

21:42 भजन शास्त्र 118:22-23 * **21:44** *कुचल दिया जाएगा* - या, “वह, जो इस पत्थर पर गिरेगा, टुकड़े-टुकड़े हो जाएगा, किन्तु जिस किसी पर यह पत्थर गिरेगा उसे कुचल कर चूर्ण बना देगा।”
* **22:4** *अच्छे-अच्छे पकवान* - मध्य पूर्वी परंपरा की इस दावत में माँसाहारी खाना शामिल था, लेकिन प्रभु येशु के राजदूतों ने यह भी सिखाया कि जो लोग केवल शाकाहारी हैं, उन्हें भी परमात्मा स्वीकार करते हैं।

व्यापार के स्थानों पर। [6]बाकी ने सेवकों को पकड़कर उनके साथ
बुरा बरताव किया और उन्हें मार डाला।
[7]“तो राजा बहुत गुस्सा हुआ और उसने अपनी सेना भेज कर उन
हत्यारों को मरवा डाला और उनका शहर जलावा दिया। [8]तब राजा ने
अपने सेवकों से कहा, ‘शादी की दावत तो तैयार है पर मेहमान उसके
योग्य नहीं थे। [9]इसलिए चौराहों पर जाओ और जितने लोग तुमको
मिलें सबको शादी की दावत के लिए बुला लाओ।’ [10]वे सेवक सड़कों
पर गए और भले-बुरे, जो भी मिले सबको इकट्ठा कर ले आए, यहाँ
तक कि बारात-घर मेहमानों से भर गया।
[11]“राजा मेहमानों को देखने अंदर आया तो उसने वहाँ एक मनुष्य को
देखा जो शादी में शामिल होने के लिए अच्छे कपड़े नहीं पहने हुए था।
[12]राजा ने उससे कहा, ‘मित्र, तुम अच्छे कपड़े पहने बिना शादी में कैसे
आए?’ वह राजा को जवाब न दे सका। [13]तब राजा ने अपने सेवकों से
कहा, ‘इसके हाथ-पैर बाँध दो और बाहर अंधकार में डाल दो। वहाँ
यह रोएगा और गुस्से और दर्द से दाँत पीसेगा।’
[14]“आमंत्रित तो बहुत हैं पर चुने हुए थोड़े हैं।”

प्रभु येशु फरीसियों के जाल में नहीं फँसे

[15]तब फरीसी धार्मिक पंथ के लोग एकजुट हो गए और उन्होंने
योजना बनाई कि वे प्रभु येशु को अपनी चाल में फंसाकर उनसे गलत
बुलवाएँ। [16]उन्होंने प्रभु येशु के पास अपने भक्तों और राजा हेरोदेस
दल के सदस्यों को भेजा। वे आए और प्रभु येशु से बोले, “गुरुजी, हम
जानते हैं कि आप सच्चे हैं, आप सच्चाई से परमात्मा के मार्ग का उपदेश
देते हैं और आपको किसी का डर नहीं, क्योंकि आप कोई भेदभाव
नहीं करते। [17]तो हमें बताइए कि आपके विचार से रोम सम्राट को
टैक्स देना सही है या नहीं?”
[18]प्रभु येशु उनकी दुष्ट योजना भाँप कर बोले, “ढोंगीयों, तुम मेरी
परीक्षा क्यों ले रहे हो? [19]मुझे वह सिक्का दिखाओ जिससे तुम टेक्स
देते हो।” तो उन्होंने एक सिक्का उन्हें दे दिया। [20]प्रभु येशु ने सिक्का दिखा
कर एक प्रश्न किया, “यह किसका चित्र है और इस पर किसका नाम
लिखा है?”

[21]उन्होंने उत्तर दिया, “रोम के सम्राट का चित्र है और उन्ही का नाम लिखा है।”

तब प्रभु येशु ने उनसे कहा, “जो सम्राट को देना चाहिए वह सम्राट
को दो और जो परमात्मा को देना चाहिए वह परमात्मा को दो।” [22]यह
सुनकर वे हैरान रह गए और प्रभु येशु को छोड़कर चले गए।

मृत्यु के बाद रिश्ते कैसे होंगे

[23]उसी दिन सदूकी संप्रदाय के लोग जो मानते थे कि मरा हुआ
इंसान ज़िन्दा नहीं हो सकता, प्रभु येशु के पास आए और पूछने लगे,
[24]“गुरुजी, परमात्मा के प्रवक्ता मोशे ने हमारे लिए लिखा है कि यदि
किसी विवाहित व्यक्ति की मृत्यु बिना संतान हो जाती है, तो उसके
भाई को अपने भाई की विधवा से विवाह करना चाहिए। तब उनका
पहला बेटा मृत भाई का बेटा माना जाएगा।

[25]“एक समय की बात है कि हमारे यहाँ सात भाई थे। पहले ने शादी
की, वह मर गया और उसकी पत्नी ने अपने देवर से शादी की क्योंकि
उनकी कोई संतान नहीं थी। [26]इस प्रकार दूसरे और तीसरे ने भी किया
और सातों भाइयों के साथ यही हुआ। [27]सबके अंत में वह स्त्री भी मर
गई। [28]जब परमात्मा सब मरे हुए लोगों का न्याय करने के लिए उन्हें
ज़िन्दा करेंगे, तब वह स्त्री किसकी पत्नी होगी? क्योंकि वह तो सातों
भाइयों की पत्नी रही थी।”

[29]प्रभु येशु ने उत्तर दिया, “तुम्हारी सोच गलत है। तुम न तो
परमात्मा-ग्रंथ और न ही परमात्मा की शक्ति को नहीं जानते। [30]जब
परमात्मा मरे हुए इंसानों को ज़िन्दा करेंगे, तो वे शादी नहीं करेंगे, परंतु
स्वर्गदूतों के समान होंगे। [31]रहा मरे हुए लोगों के ज़िन्दा होने के बारे में,
तो क्या तुमने यह वचन नहीं पढ़ा जो परमात्मा ने कहा है, [32]‘मैं वह
परमात्मा हूँ जिसकी भक्ति अब्राहम, इसहाक और याकोब की जीवित
आत्माएँ भी करती हैं।’ परमात्मा मरे हुए लोगों के नहीं, परंतु जीवित
आत्माओं के परमात्मा हैं।”

[33]यह सुनकर भीड़ उनकी शिक्षाओं पर हैरान रह गई।

22:24 उपदेश 25:5

परमात्मा और इंसानों से प्रेम जीवन का आधार

34जब फरीसियों ने सुना कि प्रभु येशु ने सदूकियों का मुँह बंद कर
दिया है तो वे इकट्ठा होकर प्रभु येशु के पास गए। 35उनमें से एक
धर्मगुरु ने उनको परखने के लिए पूछा, 36"गुरुजी, मोशे के नियमों में
कौन-सा नियम सबसे बड़ा है?"
37प्रभु येशु ने उससे कहा, "तुम प्रभु परमात्मा से अपने पूरे मन, पूरे
जीवन और पूरी बुद्धि से प्रेम करो। 38यही सबसे बड़ा नियम है। 39इसी
के समान एक और ज़रूरी आज्ञा यह है, 'दूसरों से अपने समान प्रेम
करो।' 40सारे मोशे के नियमों और परमात्मा के प्रवक्ताओं की पुस्तकों
का आधार ये ही दो नियम हैं।"

मुक्तिदाता को राजा दाविद ने सम्मान दिया

41फरीसी अभी उसी स्थान पर इकट्ठा थे कि प्रभु येशु ने उनसे पूछा,
42"मुक्तिदाता के बारे में आप लोगों का क्या विचार है? वह किसका
वंशज है?"

उन्होंने उत्तर दिया, "राजा दाविद का।"

43प्रभु येशु बोले, "तो फिर राजा दाविद ने पवित्र आत्मा की प्रेरणा से
मुक्तिदाता को 'प्रभु' क्यों कहा? राजा दाविद का कहना है,

44 'प्रभु परमात्मा ने मेरे प्रभु से कहा,
"जब तक मैं तुम्हारे शत्रुओं को
तुम्हारे पाँव तले न ले आऊँ,
तुम मेरे सिंहासन के दाईं ओर बैठकर शासन करो।"'

45"यदि राजा दाविद उसे 'प्रभु' कहते हैं तो मुक्तिदाता राजा दाविद के
सिर्फ वंशज कैसे हुआ?"

46प्रभु येशु की बात सुनकर कोई भी फरीसी कुछ भी जवाब न दे सके,
और न उस दिन से किसी को उनसे सवाल पूछने की हिम्मत हुई।

23

धर्मगुरुओं को भयंकर दंड की चेतावनी

1तब गुरु येशु ने भीड़ और अपने शिष्यों से कहा, 2"धर्मगुरुओं और
फैरिसी धार्मिक पंथ के सदस्यों को तुम्हें यह बताने का अधिकार

है कि मोशे के नियम और शिक्षा का क्या अर्थ है। [3]इसलिए वे तुमसे
जो कुछ मोशे के नियम और शिक्षा के अनुसार कहें वह करना और
मानना, परंतु उन जैसे काम न करना, क्योंकि वे नियमों की शिक्षा तो
देते हैं पर स्वयं उन का पालन नहीं करते।

[4]"वे कठिन नियमों का बोझ लोगों पर डालते हैं, पर वे बोझ को
उठाने में अपनी एक अँगुली से भी मदद नहीं करते। [5]वे जो कुछ भी
करते हैं केवल दिखावे के लिए करते हैं, यहाँ तक कि वे अपने माथे
और बाहों पर परमात्मा-ग्रंथ के पदों को बांधने का एक बड़ा धार्मिक
ढोंग करते हैं। वे अपने कपड़ों में लम्बी-लम्बी धागे की झालर
लगाकर भी पहनते हैं ताकि लोग उनकी ओर आकर्षित हों।* [6]दावतों
में सम्मानित स्थान और यहूदी सत्संग भवनों में प्रमुख आसन उन्हें
बहुत पसंद है। [7]और सार्वजनिक जगहों पर लोगों का झुककर प्रणाम
लेना और 'गुरुजी' कहलाना अच्छा लगता है।

[8]"पर तुम गुरु न कहलाना, क्योंकि तुम्हारा एक ही गुरु है, और तुम
सब भाई और बहन हो। [9]पृथ्वी पर किसी को अपना आत्मिक पिता
न कहना, क्योंकि तुम्हारे पिता केवल पिता परमात्मा हैं। [10]तुम मालिक
न कहलाना, क्योंकि तुम्हारा मालिक केवल मुक्तिदाता है। [11]तुममें से
जिसके पास सबसे बड़ा पद है उसे सबकी सेवा करनी चाहिए। [12]जो
अपने आपको दूसरों से बड़ा समझता है, उसे परमात्मा नीचा करेंगे।
और जो बड़ा होकर भी अपने आपको छोटा करता है, परमात्मा उसे
और भी बड़ा करेंगे।

[13-14]"धर्मगुरुओ और फरीसियो, तुम ढोंगी हो और इसका परिणाम तुम्हें
भुगतना पड़ेगा! तुम दूसरे लोगों को परमात्मा के परमस्वर्ग के साम्राज्य के
द्वार में जाने से रोक देते हो और तुम स्वयं भी उसमें नहीं जाते हो।

[15]"धर्मगुरुओ और फरीसियो, तुम ढोंगी हो और इसका परिणाम
तुम्हें भुगतना होगा! तुम एक मनुष्य को अपने धर्म में लाने के लिए
लम्बी-लम्बी यात्राएँ करते हो। परंतु जब वह आ जाता है, तो तुम उसे
नरक में अपने से भी ज़्यादा दंड पाने के लिए तैयार कर देते हो।

*** 23:5** *हों* - इस पद में परमात्मा-ग्रंथ में वर्णित अच्छी चीजों का उल्लेख है, लेकिन इनको दिखावे के लिए इस्तेमाल नहीं करना चाहिए।

[16]“तुम्हें इसका परिणाम भुगतना पड़ेगा क्योंकि तुम्हें तो दूसरों को
रास्ता दिखाना चाहिए था पर स्वयं तुम्हें ही रास्ते का पता नहीं। एक
तरफ तो तुम सिखाते हो कि इससे कोई फर्क नहीं पड़ता यदि कोई
मंदिर की कसम खाता है। लेकिन दूसरी तरफ तुम कहते हो मंदिर के
सोने की कसम खाने से फर्क पड़ता है। [17]अरे अक्ल के अंधो! बड़ा
क्या है, सोना या वह मंदिर जिससे सोना पवित्र होता है?

[18]“तुम यह भी सिखाते हो कि यदि कोई व्यक्ति वेदी की कसम
खाता है तो इससे कोई फर्क नहीं पड़ता। लेकिन यदि कोई वेदी पर रखे
भेंट की कसम खाता है तो इससे फर्क पड़ता है। [19]अक्ल के अंधो!
क्या बड़ा है, भेंट या वह वेदी जिससे भेंट पवित्र होती है? [20]जो वेदी
की कसम लेता है, वह वेदी की और जो कुछ उस पर है, उसकी
कसम लेता है [21]और जो मंदिर की कसम लेता है, वह मंदिर की और
परमात्मा की, जो उसमें रहतें हैं, कसम लेता है। [22]और जो परमस्वर्ग
की कसम लेता है, वह परमात्मा के सिंहासन की और जो उस पर
विराजमान परमात्मा की कसम लेता है।

[23]“धर्मगुरुओ और फरीसियो, तुम ढोंगी हो! तुम्हें इसका परिणाम
भुगतना पड़ेगा! तुम परमात्मा को भेंट चढ़ाने के लिए पुदीने, सौंफ
और जीरे जैसी छोटी चीज़ों का दसवाँ अंश दान में तो देते हो, परंतु
तुमने मोशे के नियम और शिक्षा की ज़रूरी बातें जैसे न्याय, दया
और आस्था को मानना भुला दिया है। तुम्हें दोनों बातों पर ध्यान देना
चाहिए था। [24]तुम्हें दूसरों को रास्ता दिखाना चाहिए था पर तुम्हें स्वयं
रास्ता पता नहीं! तुम अशुद्ध छोटी मक्खी को तो छान कर अपने प्याले
से निकाल देते हो, परंतु अशुद्ध बड़े ऊँट को निगल जाते हो!

[25]“धर्मगुरुओ और फरीसियो, तुम्हें इसका परिणाम भुगतना पड़ेगा!
ढोंगीयो, तुम उन कटोरों और थालियों की तरह हो जो बाहर से तो माँजे
जाते हैं, लेकिन अंदर से गंदे रह जाते हैं। तुम बाहर से तो साफ दिखते
हो, लेकिन तुम्हारे दिल में लालच और स्वार्थ की गंदगी भरी हुई है।
[26]अक्ल के अंधे फरीसियो! कटोरे+ को पहले अच्छी तरह अंदर से
साफ करो, बाद में बाहर से।

[27]“धर्मगुरुओ और फरीसियो, तुम ढोंगी हो! तुम्हें इसका परिणाम
भुगतना पड़ेगा! तुम चूने से पुती हुई शव रखने वाली गुफा के समान

हो जो बाहर से तो सुंदर दिखाई देती हैं, परंतु अंदर मुर्दों की हड्डियों
और सब प्रकार की गंदगी से भरी रहती हैं। [28]इसी प्रकार तुम भी बाहर
से लोगों को धर्मी दिखाई देते हो, परंतु तुम्हारे मन में ढोंग और अधर्म
भरा है।

[29]"धर्मगुरुओ और फरीसियो, तुम ढोंगी हो! तुम्हें इसका परिणाम
भुगतना पड़ेगा! तुम परमात्मा के प्रवक्ताओं की कब्रों की देखभाल
करते हो और धर्मी भक्तों की समाधियों पर माला चढ़ाते हो, [30]और
कहते हो, 'यदि हम अपने पूर्वजों के समय में होते, तो परमात्मा
के प्रवक्ताओं की हत्या में भागीदार न हुए होते।' [31]इस प्रकार तुम
स्वयं अपना भेद खोलकर बताते हो कि तुम परमात्मा के प्रवक्ताओं
के हत्यारों की संतान हो। [32]तुम अपने पूर्वजों के पाप का घड़ा भरते
जाओ!* [33]अरे ज़हरीले साँपो और साँपों के बच्चों! तुम नरक के दंड से
कैसे बचोगे?

[34]"सुनो, मैं तुम्हारे पास परमात्मा के प्रवक्ताओं, ज्ञानियों और
धर्मगुरुओं को भेजूँगा। उनमें से कुछ को तुम मार डालोगे, कुछ को
कीलों से क्रूस पर ठोक दोगे और कुछ को अपने सत्संग भवनों में
कोड़े मारोगे और नगर-नगर उनको ढूँढकर सताओगे। [35]इसलिए
तुम्हें हर बेगुनाह व्यक्ति की हत्या के लिए दोषी ठहराया जाएगा,
जिसकी शुरुआत बेगुनाह हाबिल से होती है। इसमें बराखिया का बेटा
जकरयाह भी शामिल है, जिसकी तुम लोगों ने अपने मंदिर और वेदी
के बीच में हत्या कर दी थी। [36]मैं वादा करता हूँ कि तुम लोग आज जो
कर रहे हो, इन सभी चीजों के लिए तुम्हें सज़ा ज़रूर मिलेगी।

प्रभु की सुरक्षा को अस्वीकार करने के परिणाम

[37]"यरूशलम शहर, ओ यरूशलम! तू परमात्मा के प्रवक्ताओं और
परमात्मा के संदेश दूतों को पथराव करके मार डालता है जो तेरे पास
भेजे जाते हैं। मैंने कितनी बार चाहा कि जैसे मुर्गी अपने बच्चों को अपने
पंखों के नीचे इकट्ठा करती है, वैसे ही मैं भी तेरे लोगों को इकट्ठा

---

* **23:32** *तुम अपने पूर्वजों के पाप का घड़ा भरते जाओ* - यह वह नहीं है जो प्रभु येशु उन्हें करने की आज्ञा दे रहे थे बल्कि वह व्यंग्य का उपयोग करते हुए यह दिखाया कि वह जानते थे कि वे उसको मार डालेंगे जैसे उनके पूर्वजों ने परमात्मा के प्रवक्ताओं को मार दिया था।

करके सुरक्षा दूँ, परंतु तूने यह न चाहा। [38]और अब तेरा शहर वीरान
हो जाएगा। [39]मैं तुझ से सच कहता हूँ, तू मुझे फिर से तब तक नहीं
देखेगा जब तक यह न कहेगा, 'प्रभु परमात्मा के नाम से आने वाले का
गुणगान हो।'"

24

यरूशलम मंदिर के विनाश

[1]जब गुरु येशु परमात्मा के मंदिर के आँगन से बाहर निकलकर जा
रहे थे तब उनके शिष्यों ने उनके पास आकर कहा, "प्रभु, मंदिर के इन
भवनों को देखिए।"

[2]प्रभु येशु ने उनसे कहा, "सच तो यह है कि जिन भवनों को तुम
देख रहे हो, एक समय आएगा जब इन भवनों का एक भी पत्थर अपने
स्थान पर नहीं बचेगा। हर एक पत्थर को नीचे ढाह दिया जाएगा।"

[3]जब गुरु येशु जैतून पहाड़ी पर बैठे थे तब शिष्य उनके पास आए
और अकेले में उनसे पूछा, "हमें बताइए कि यह सब कब होगा?
आपके दुबारा आने के और इस संसार के अंत होने के निशान क्या
होंगे?"

[4]प्रभु येशु ने उन्हें उत्तर दिया, "सावधान रहो कि कोई तुम्हें धोखे
में न डाले। [5]कई लोग मेरे नाम से आएँगे और दावा करेंगे कि वे ही
मुक्तिदाता हैं, और बहुत से लोगों को धोखे में डालेंगे।

[6]"तुम युद्ध की आवाज़ें और युद्ध के समाचार सुनोगे। तो उस समय
घबराना मत, क्योंकि यह होना ज़रूरी है, किंतु इसे ही इस संसार का
अंत मत समझ लेना। [7]देश-देश के विरुद्ध और राज्य-राज्य के विरुद्ध
लड़ाई के लिए उठ खड़े होंगे, और अलग-अलग जगहों में अकाल
पड़ेंगे+ और भूकंप आएँगे। [8]ये सभी परेशानियाँ तो प्रसव पीड़ा के
समान शुरुआत मात्र होगी।

[9]"तुम्हें गिरफ्तार किया जाएगा, दंडित किया जाएगा, और यहाँ तक
कि तुम्हारी हत्या कर दी जाएगी। मेरे कारण हर समाज के लोग तुमसे
नफरत करेंगे। [10]उन दिनों बहुत से लोग सत्य-मार्ग से भटक जाएँगे।

23:39 भजन शास्त्र 118:26

वे एक-दूसरे को पकड़वाएँगे और एक-दूसरे से नफरत करेंगे। [11]अनेक
झूठे लोग जो अपने आप को परमात्मा के प्रवक्ता कहेंगे अचानक पैदा
हो जाएँगे जो बहुत से लोगों को धोखे में डाल देंगे। [12]अधर्म के बढ़ने
से एक-दूसरे और परमात्मा के प्रति लोगों का प्रेम खत्म हो जाएगा।
[13]पर जो अंत तक आस्था में मज़बूत रहेगा वह मुक्ति पाएगा। [14]जब
परमात्मा के साम्राज्य के बारे में शुभ संदेश दुनिया भर में फैल चुका
होगा और हर समाज के लोगों को बताया जा चुका होगा, तब इस
संसार का अंत हो जाएगा।

महा संकट की चेतावनी

[15]"किसी दिन जब तुम उस घृणित चीज़ को जो पवित्र स्थान को
अशुद्ध करती है देखो, जिसके बारे में परमात्मा के प्रवक्ता दानिएल ने
बताया था। जो कोई भी इसे पढ़ रहा है इसे समझने की कोशिश करे!
[16]तो उस समय जो लोग यहूदिया प्रदेश में रहते हैं, पहाड़ों पर भाग
जाएँ। [17]जो छत पर हो, वह घर से कोई चीज़ लेने को नीचे न उतरे।
[18]और जो खेत में हो, वह घर से कोई कपड़ा लेने के लिए वापस न
जाए। [19]उन स्त्रियों के लिए बहुत बुरा होगा जो उन दिनों गर्भवती होंगी
या दूध पिलाती होंगी। [20]प्रार्थना करो कि तुम्हें ठंड के दिनों में या
आराम-दिवस के मौके पर घर छोड़ कर भागना न पड़े। [21]क्योंकि उस
समय ऐसी दुख पीड़ा होगी कि जैसी जबसे दुनिया बनी है तब से अब
तक न कभी हुई है और न कभी होगी। [22]यदि परमात्मा उस भयंकर
समय को कम नहीं करते तो कोई भी ज़िन्दा नहीं बचता, परंतु उन्होंने
अपने चुने हुए भक्तों के कारण सब लोगों के ऊपर आने वाले भयंकर
समय को घटा दिया है।

[23]"उस समय यदि कोई कहे, 'देखो, मुक्तिदाता यहाँ है' या 'वह
वहाँ है' तो इस बात पर विश्वास न करना, [24]क्योंकि झूठे मसीहा
और झूठे प्रवक्ता पैदा हो जाएँगे और अद्‌भुत निशान और चमत्कार
दिखाएँगे जिससे ये परमात्मा के चुने हुए लोगों को भी धोखे में डालने
की कोशिश करेंगे। [25]सावधान रहना, मैंने पहले से ही तुम्हें बता दिया
है। [26]यदि कोई तुमसे कहे, 'देखो, मुक्तिदाता तुमको सुनसान जगह में
मिल सकते हैं,' तो वहाँ मत जाना! या 'देखो, वह किसी के घर में हैं'

तो विश्वास न करना! [27]क्योंकि जैसे बिजली पूर्व से कड़ककर पश्चिम
तक चमकती है, उसी प्रकार तेजस्वी मानव-पुत्र का आना सबको
दिखाई देगा। [28]जहाँ शव होगा, वहाँ गिद्ध भी इकट्ठे होंगे।

तेजस्वी मानव-पुत्र का बादलों पर होकर आना

[29]"उन दिनों की परेशानियों के बाद ही
सूरज पर अँधेरा छा जाएगा
और चाँद भी रोशनी नहीं देगा।
आकाश से तारे गिरेंगे
और स्वर्ग की शक्तियाँ हिल जाएँगी।
[30]"तब तेजस्वी मानव-पुत्र की निशानी आकाश में दिखाई देगी और
दुनिया के हर वंश के लोग शोक मनाएँगे। ये लोग तेजस्वी मानव-पुत्र
को, शक्ति और बड़े तेज के साथ बादलों पर आते हुए देखेंगे। [31]एक
बिगुल की तेज़ आवाज़ पर, तेजस्वी मानव-पुत्र अपने चुने हुओं को
लाने के लिए अपने स्वर्गदूतों को पृथ्वी के हर हिस्से में भेजेगा।

घटनाओं के लक्षणों को पहचानों

[32]"अंजीर के पेड़ से यह सीखो कि ज्यों ही उसकी शाखाएँ कोमल
होती हैं और उनमें पत्ते निकलने लगते हैं, तुम जान लेते हो कि गर्मी
का मौसम नज़दीक है। [33]इसी प्रकार जब तुम ये भयंकर घटनाएँ होते
देखो तो समझ लेना कि तेजस्वी मानव-पुत्र नज़दीक है, दरवाज़े पर
ही है। [34]मेरी बात ध्यान से सुनो। इन घटनाओं के हुए बिना इस पीढ़ी
का अंत नहीं होगा। [35]आकाश और पृथ्वी हमेशा के लिए नहीं रहेंगे,
लेकिन मेरे शब्द हमेशा रहेंगे।

अच्छे और बुरे कर्मों के न्याय के दिन के लिए तैयार रहो

[36]"उस दिन और उस घड़ी के बारे में, जब यह सब होगा, पिता
परमात्मा के अलावा और कोई नहीं जानता, न उनके स्वर्गदूत और न
पुत्र।+ [37]क्योंकि जैसे परमात्मा के प्रवक्ता नोहा के समय में हुआ था,
वैसा ही तेजस्वी मानव-पुत्र के वापस लौटने के समय में होगा। [38]जब
जलप्रलय नहीं आया था, तब तक लोग दावतों और ब्याह शादियों का

आनंद ले रहे थे। और तब नोहा बड़ी नाव में गए। [39]जब तक जल-प्रलय
आनंद मना रहे लोगों को बहा न ले गया, तब तक उन्हें कुछ पता न था
कि क्या हो रहा है। इसी तरह तेजस्वी मानव-पुत्र का आना भी होगा।
[40]“उस समय दो मनुष्य खेत में होंगे एक ले लिया जाएगा और दूसरा
छोड़ दिया जाएगा। [41]दो महिलाएँ साथ-साथ चक्की पर अनाज पीसती
होंगी, एक ले ली जाएगी और दूसरी छोड़ दी जाएगी।
[42]“इस कारण जागते रहो, क्योंकि तुम नहीं जानते कि तुम्हारा प्रभु किस
दिन[+] आएगा। [43]यह जान लो कि यदि घर के मालिक को पता होता कि
चोर किस समय आएगा, तो वह जागता रहता और अपने घर में चोरी न
होने देता। [44]इस कारण तुम भी तैयार रहो, क्योंकि जिस समय कि तुम
कल्पना भी नहीं कर सकते, उसी समय तेजस्वी मानव-पुत्र आ जाएगा।”

दिखावटी सेवा के भयंकर परिणाम

[45]प्रभु येशु ने आगे कहा, “विश्वासयोग्य और बुद्धिमान नौकर कौन
है जिसे उसका मालिक खाने के सामान का अधिकारी बनाए कि वह
अन्य नौकरों को, जो कुछ भी उन्हें चाहिए, वह तय समय पर उन्हें
दे? [46]उस नौकर को बड़ा इनाम मिलेगा जिसे उसका मालिक लौटने
पर अपना काम अच्छी तरह करता हुआ देखे! [47]मैं तुमसे सच कहता
हूँ, मालिक उस वफादार नौकर को अपनी पूरी संपत्ति की देखभाल
करने का अधिकार देगा। [48-50]लेकिन अगर नौकरों में से एक को लगता
है उसका मालिक देर से वापस लौटेगा, और वह अपने साथी नौकरों
को पीटने लगे और शराबियों के साथ खाए-पिए तो उस बुरे नौकर
का मालिक ऐसे समय आएगा जब वह सोचता भी न होगा। [51]मालिक
उसको भयंकर सज़ा देगा और मालिकों की सेवा करने का दिखावा
करने वालों के साथ बाहर फेंक दिया जाएगा। वहाँ वे रोएँगे और गुस्से
और दर्द से दाँत पीसेंगे।”

25

तैयार और सतर्क रहो

[1]“परमात्मा के परमस्वर्ग का साम्राज्य वैसा ही है जैसा एक रात हुआ
जब दस लड़कियों ने अपनी-अपनी लालटेन लेकर दूल्हे[+] से मिलने

की रस्म पूरी करने को निकलीं।* [2]उनमें पाँच लापरवाह थीं और पाँच
समझदार। [3]लापरवाह लड़कियों ने लालटेन तो लीं, पर यह ध्यान नहीं
रखा कि तेल काफी है या नहीं। [4]परंतु समझदार लड़कियों ने अपनी
लालटेनों के साथ-साथ बोतलों में तेल भी लिया।

[5]"जब दूल्हे के आने में देर हुई तब वे सब ऊँघने लगीं और सो गईं।
[6]आधी रात को धूम मची, और कोई चिल्लाया 'देखो, दूल्हा आ रहा है,
उससे मिलने चलो!'

[7]"तब सब लड़कियाँ उठीं और अपनी अपनी लालटेन की बत्तियों
को ठीक किया। [8]अब लापरवाह लड़कियों ने समझदार लड़कियों
से कहा, 'अपने तेल में से थोड़ा हमें भी दे दो, क्योंकि हमारी लालटेनें
बुझ रही हैं।'

[9]"पर समझदार लड़कियों ने उत्तर दिया, 'नहीं, हम दोनों के लिए यह
काफी नहीं है। तुम तेल बेचने वालों के पास जाओ और अपने लिए
तेल खरीद लो।'

[10]"जब वे तेल खरीदने जा रही थीं तब ही दूल्हा आ पहुँचा। जो तैयार
थीं, वे उसके साथ बारात-घर में चली गईं और दरवाज़ा बंद हो गया।
[11]तब दूसरी लड़कियाँ आईं और कहने लगीं, 'श्रीमान, श्रीमान! हमारे
लिए दरवाज़ा खोल दीजिए।'

[12]"पर दूल्हे ने कहा, 'मैं तुमसे सच कहता हूँ, मैं तुम्हें नहीं जानता।'

[13]"इसीलिए शिष्यो, जागते रहो, क्योंकि तुम न उस दिन को जानते
हो और न उस पल को जब दूल्हा आएगा।

परमात्मा ने जो तुम्हें दिया है, उसका इस्तेमाल करो

[14]"परमात्मा के परम्स्वर्ग का साम्राज्य भी वैसा ही है जैसा उस
व्यक्ति के साथ हुआ जिसने विदेश जाने से पहले अपने तीन सेवकों
को बुलाया और उन्हें अपने पैसे देकर उसे निवेश करने का अधिकार

---

* **25:1** *दूल्हे+ से मिलने की रस्म पूरी करने को निकलीं* - प्राचीन यहूदी शादी प्रथा में, दूल्हा दुल्हन के घर जाता था और फिर उसे शादी समारोह के लिए अपने पिता के घर वापस लाता था। इस कहानी में, 10 लड़कियाँ दुल्हन के घर गईं और दूल्हे के आने का इंतज़ार कर रही थीं, लेकिन वह देर से आया। जब दूल्हा अपनी दुल्हन के लिए आया, तो 5 समझदार लड़कियाँ उससे मिलने के लिए तैयार थीं। फिर वे सब एक साथ शादी समारोह के लिए दूल्हे के घर गए।

दिया। [15]उसने एक को पाँच हज़ार चाँदी के सिक्के,* दूसरे को दो हज़ार
और तीसरे को एक हज़ार सिक्के दिए। हर एक को जितना वह संभाल
सकता था उसके अनुसार दिया। उसके बाद वह विदेश चला गया।
[16]"जिसे चाँदी के पाँच हज़ार सिक्के मिले थे, उसने तुरंत जाकर उनसे
व्यापार किया और उसने पाँच हज़ार सिक्के और कमा लिए। [17]इसी प्रकार
जिसे दो हज़ार सिक्के मिले थे, उसने दो हज़ार सिक्कों से और भी सिक्के
कमाएँ। [18]पर जिसे एक हज़ार सिक्के मिले थे, उसने जाकर ज़मीन खोदकर
एक गड्ढा बनाया और अपने मालिक का धन उसमें छिपा दिया।
[19]"बहुत समय बाद उन सेवकों का मालिक लौटा और उनसे हिसाब
लेने लगा। [20]जिस सेवक को चाँदी के पाँच हज़ार सिक्के मिले थे उसने
पाँच हज़ार सिक्के और कमाकर कहा, 'मालिक, आपने मुझे पाँच हज़ार
सिक्के दिए थे। देखिए, मैंने आपके दिए पाँच हज़ार सिक्कों से और सिक्के
कमाए हैं।'
[21]"उसके मालिक ने कहा, 'शाबाश, अच्छे और विश्वासयोग्य
सेवक! तुम थोड़ी चीज़ों में विश्वासयोग्य निकले, अब मैं तुमको बहुत
चीज़ों पर अधिकार दूँगा। मेरे साथ खुशी मनाओ।'
[22]"जिस सेवक को चाँदी के दो हज़ार सिक्के मिले थे, वह भी आकर
बोला, 'मालिक, आपने मुझे दो हज़ार सिक्के दिए थे। देखिए, मैंने दो
हज़ार सिक्के और कमाए हैं।'
[23]"उसके मालिक ने कहा, 'शाबाश, अच्छे और विश्वासयोग्य
सेवक! तुम थोड़ी चीज़ों में विश्वासयोग्य निकले, अब मैं तुमको बहुत
चीज़ों पर अधिकार दूँगा। मेरे साथ खुशी मनाओ।'
[24]"परंतु जिसे चाँदी के एक हज़ार सिक्के मिले थे, वह आकर बोला,
'मालिक, मैं आपको जानता था कि आप कठोर व्यक्ति हैं। आप
उस फसल की कटाई करते हैं जिसे आपने बोया नहीं है और जहाँ
आपने बीज नहीं डाले वहाँ से आप फसल इकट्ठा करते हैं। [25]तो डर के
मारे मैंने जाकर, आपने जो सिक्के दिए थे ज़मीन में छिपा दिए थे। यह
लीजिए आपके सारे सिक्के।'

---

* **25:15** *पाँच हज़ार चाँदी के सिक्के* - अर्थात्, "5 सोने के टेलेंट।" एक टेलेंट का मूल्य 15 साल की मज़दूरी के समान होता था।

26 “उसके मालिक ने कहा, ‘निक्कमे और सुस्त सेवक! जब तू जानता
था कि जहाँ मैंने बोया नहीं वहाँ से फसल काटता हूँ और जहाँ मैंने
बीज नहीं डाले वहाँ से फसल इकट्ठा करता हूँ, 27 तू इतना तो कर
सकता था कि मेरे पैसे ब्याज पर चढ़ा देता? मैं आकर ब्याज सहित ले
लेता।’

28 “तब मालिक ने कहा, ‘सेवको, इससे एक हज़ार चाँदी के सिक्के
ले लो और जिसके पास अब दस हज़ार सिक्के हैं, उसे दे दो। 29 जिसके
पास है, उसे भरपूरी से और भी दिया जाएगा और जिसके पास नहीं
है, उससे वह भी जो उसके पास है, छीन लिया जाएगा। 30 इस निकम्मे
सेवक को बाहर निकाल दो और अंधकार में फेंक दो, जहाँ यह रोएगा
और गुस्से और दर्द से दाँत पीसेगा।’

प्रभु के लोगों के साथ व्यवहार हमारी मंजिल को तय करता है

31 “जब तेजस्वी मानव-पुत्र अपने तेज में पृथ्वी पर आएँगे तो सब
स्वर्गदूत भी उसके साथ आएँगे, तब वह अपने शाही सिंहासन पर
बैठेगा। 32 दुनिया के हर समाज के लोग उसके सामने इकट्ठे किए जाएँगे
और जैसे चरवाहा भेड़ों को बकरियों से अलग करता है, वैसे ही वह
सब लोगों को दो समूहों में बाँट देगा।

33 “वह अपनी दाईं ओर एक समूह, और बाईं ओर दूसरे समूह को
खड़ा करेगा। 34 तब राजा जो उसकी दाईं ओर हैं वह उनसे कहेगा, ‘मेरे
पिता परमात्मा ने तुमको आशीर्वाद दिया है! आओ, और उस साम्राज्य
को प्राप्त करो जो दुनिया के आरंभ से पहले तुम्हारे लिए तैयार किया
गया था। 35 जब मैं भूखा था तुमने मुझे भोजन कराया। जब मैं प्यासा
था तुमने मुझे पानी पिलाया। जब मैं परदेसी था तुमने मुझे अपनाया।
36 जब मैं नंगा था तुमने मुझे कपड़े पहनाए। जब मैं बीमार था तुमने मेरी
देखभाल की। और जब मैं जेल में था तुम मुझसे मिलने आए।’

37 “तब धर्मी भक्त उनसे कहेंगे, ‘प्रभु, हमने आपको कब भूखा
देखा और भोजन कराया, या प्यासा देखा और पानी पिलाया? 38 हमने
आपको कब परदेसी देखा और अपनाया, या नंगा देखा और कपड़े
पहनाए? 39 हमने आपको कब बीमार या जेल में देखा और आपसे
मिलने आए?’

[40]"तब राजा उत्तर देगा, 'सच्चाई तो यह है कि जब भी तुमने मेरे इन
लोगों में से किसी एक की कुछ भी सेवा की, चाहे वह कितना भी
मामूली व्यक्ति क्यों न हो, तुमने मेरी सेवा की।'
[41]"तब वह अपनी बाईं ओर के लोगों से कहेगा, 'शापित लोगो! मुझसे
दूर हो और कभी न बुझने वाली आग में जा पड़ो, जो शैतान और उसके
दूतों के लिए तैयार की गई है। [42]क्योंकि जब मैं भूखा था, तुमने मुझे भोजन
नहीं कराया। जब मैं प्यासा था तुमने मुझे पानी नहीं पिलाया। [43]जब मैं
परदेसी था तुमने मुझे नहीं अपनाया। जब मैं नंगा था तुमने मुझे कपड़े नहीं
पहनाए। जब मैं बीमार था और जेल में था तुम मुझसे मिलने नहीं आए।'
[44]"इस पर वे कहेंगे, 'प्रभु, हमने आपको कब भूखा, या प्यासा, या
परदेसी, या नंगा, या बीमार, या जेल में देखा और आपकी सेवा नहीं की?'
[45]"तब राजा उत्तर देगा, 'सच्चाई तो यह है कि जब भी तुमने मेरे लोगों
में से किसी एक की कुछ सेवा नहीं की, चाहे वह व्यक्ति कितना भी
मामूली क्यों न हो, तुमने मेरी सेवा नहीं की।' [46]जिन लोगों ने प्रभु और
उनके लोगों की सेवा नहीं की, वे अनंत दंड के लिए नरक में भेजे
जाएँगे, परंतु धर्मी भक्त परमात्मा के साथ मोक्ष में प्रवेश करेंगे।"

26

प्रभु येशु की हत्या की साज़िश

[1]गुरु येशु ये सब कहकर अपने शिष्यों से बोले, [2]"तुम जानते हो कि
दो दिन के बाद मुक्ति-त्यौहार है। तब तेजस्वी मानव-पुत्र कीलों से
क्रूस पर ठोके जाने के लिए पकड़वाया जाएगा।"
[3]अब काइफस नामक महापुरोहित के आँगन में अन्य प्रधान पुरोहित
और समाज के बड़े इकट्ठा हुए। [4]वे आपस में सलाह करने लगे कि
किस प्रकार प्रभु येशु को छल से पकड़कर मार डालें। [5]परंतु वे कहते
थे, "मुक्ति-त्यौहार के दिनों में ऐसा करना ठीक नहीं, वरना लोग
भड़क कर दंगा फैला देंगे।"

महिला का अद्‌भुत भक्ति प्रदर्शन

[6]जब प्रभु येशु बैथनिया गाँव में शिमोन के घर पर खाना खा रहे
थे (वही शिमोन जिसे पहले कोढ़ रोग हुआ था), [7]एक औरत महंगे

खुशबूदार तेल की बोतल लेकर आई और उसे प्रभु येशु के सिर पर
लगाने लगी। [8]शिष्य यह देखकर नाराज़ हुए और कहने लगे, “इतने
महंगे तेल की बर्बादी क्यों? [9]इसे बेचकर बहुत पैसे मिल सकते थे
और गरीबों को दिए जा सकते थे।”
[10]लेकिन जब प्रभु येशु ने यह सुना तो उन्होंने कहा, “इस औरत पर
क्यों नाराज़ होते हो? इसने मुझे सम्मान देने के लिए एक अच्छा काम
किया है। [11]गरीब तो तुम्हारा दान लेने के लिए हमेशा तुम्हारे साथ
रहेंगे, पर मैं तुम्हारे साथ हमेशा नहीं रहूँगा। [12]उसने मेरे शरीर के अंतिम
संस्कार की तैयारी के लिए उस पर खुशबूदार तेल डाला है। [13]मैं तुमसे
सच कहता हूँ, सारे संसार में जहाँ-जहाँ शुभ संदेश के बारे में सुनाया
जाएगा, वहाँ इस औरत की याद में, इस बात को बताया जाएगा।”

शिष्य का गुरु को कुछ सिक्कों के लिए धोखा देना

[14]तब प्रभु येशु के बारह राजदूतों में से एक ने, जो यहूदा इस्करियोत
कहलाता है, प्रधान पुरोहितों के पास जाकर कहा, [15]“यदि मैं येशु को
आप लोगों के हाथ पकड़वा दूँ तो आप लोग मुझे क्या देंगे?” उन्होंने
चाँदी के तीस सिक्के गिनकर उसे दिए। [16]उस समय से यहूदा प्रभु येशु
को गिरफ्तार कराने का सही मौका ढूँढ़ने लगा।

गुरु का अपने शिष्यों के साथ मुक्ति-त्यौहार मनाना

[17]रोटी-त्यौहार के पहले दिन शिष्यों ने प्रभु येशु के पास आकर पूछा,
“आप कहाँ चाहते हैं कि हम आपके लिए त्यौहार का भोजन तैयार करें?”
[18]उन्होंने कहा, “शहर में एक व्यक्ति के पास जाना और उससे कहना,
‘गुरुजी कहते हैं कि मेरा समय निकट आ पहुँचा है। मैं तुम्हारे यहाँ अपने
शिष्यों के साथ मुक्ति-त्यौहार मनाऊँगा।’” [19]जैसा गुरु येशु ने आदेश दिया
था वैसा ही शिष्यों ने किया और मुक्ति-त्यौहार का भोजन तैयार किया।
[20]शाम के समय गुरु येशु बारह राजदूतों+ के साथ भोजन करने बैठे।
[21]जब वे भोजन कर रहे थे तब गुरु येशु ने कहा, “मेरी बात ध्यान से
सुनो, तुममें से एक शिष्य मुझे धोखा देगा।”

26:11 उपदेश 15:11

[22]इस पर वे बहुत दुखी हुए और हर एक शिष्य उनसे पूछने लगा,
"प्रभु, क्या वह मैं तो नहीं हूँ?"
[23]उन्होंने उत्तर दिया, "जो मेरे साथ कटोरे में निवाला डुबोकर खाता
है, वही मुझे धोखा देगा। [24]तेजस्वी मानव-पुत्र तो जैसा परमात्मा-ग्रंथ
में उसके बारे में लिखा है, मृत्यु की ओर जा रहा है। परंतु उस मनुष्य
को उसका परिणाम भुगतना होगा जो मानव-पुत्र को धोखा देगा। उस
मनुष्य के लिए अच्छा होता कि वह पैदा ही न हुआ होता।"
[25]तब यहूदा, जो उनके साथ धोखा करने वाला था उसने कहा,
"गुरुजी, क्या वह मैं तो नहीं हूँ?"
गुरु येशु ने जवाब दिया, "यह तो तुमने अपने आप ही कह दिया।"

परमात्मा और मनुष्य के बीच अनुबंध की पुष्टि

[26]भोजन करते समय गुरु येशु ने रोटी ली, परमात्मा से आशीर्वाद
माँगकर उसके टुकड़े किए और शिष्यों को दिए और कहा, "लो,
खाओ, इसे मेरा शरीर समझो।" [27]उसके बाद उन्होंने अंगूर के रस
का प्याला लिया और परमात्मा को धन्यवाद देकर शिष्यों को दिया
और कहा, "तुम सब इसमें से पियो। [28]क्योंकि यह मेरी बलि के खून
के समान है, जो परमात्मा और उसके लोगों के बीच में अनुबंध की
पुष्टि करता है। यह बहुत से लोगों के बुरे कर्मों के खाते को मिटाने के
लिए बहाया गया है। [29]मैं तुमसे सच कहता हूँ, अब मैं यह अंगूर-रस
तुम्हारे साथ केवल मेरे पिता परमात्मा के साम्राज्य में ही पीऊँगा, उससे
पहले नहीं।" [30]तब भजन गाने के बाद प्रभु येशु और उनके शिष्य जैतून
पहाड़ी पर चले गए।

गुरु की शिष्य के बारे में भविष्यवाणी

[31]तब प्रभु येशु ने उनसे कहा, "आज रात को तुम सब मुझे छोड़कर
भाग जाओगे, क्योंकि परमात्मा-ग्रंथ का कहना है,

'मैं चरवाहे पर हमला करूँगा
और झुंड की भेड़ें तितर बितर हो जाएँगी।'

26:31 जकरयाह 13:7

32“परंतु जब परमात्मा मुझे मरे हुओं में से ज़िन्दा कर देंगे उसके बाद मैं तुमसे पहले गलील प्रदेश को जाऊँगा।”

33पतरस बोला, “चाहे सब आपका साथ छोड़ दें, पर मैं कभी नहीं छोड़ूँगा।”

34प्रभु येशु ने कहा, “मैं तुमसे सच कहता हूँ, इसी रात को
मुरगे के बाँग देने से पहले तुम तीन बार कहोगे कि तुम मुझे नहीं
जानते हो।” 35परंतु पतरस ने कहा, “चाहे मुझे आपके साथ
मरना पड़े तो भी मैं हरगिज़ नहीं कहूँगा कि मैं आपको नहीं
जानता।”

इसी प्रकार अन्य शिष्यों ने भी कहा।

प्रभु येशु का पहाड़ समान दुखों को सहना

36प्रभु येशु अपने शिष्यों के साथ गतसमनी नामक स्थान पर गए।
जब वे वहाँ पहुँचे, तो उन्होंने उनसे कहा, “यहाँ बैठो जब तक मैं
वहाँ प्रार्थना कर रहा हूँ।” 37वह पतरस को और ज़बदियाह के दोनों
बेटे योहन और याकोब को साथ ले गए। गुरु येशु उदास और
परेशान होने लगे। 38वह उनसे बोले, “मैं बहुत दुखी हूँ। ऐसा लगता
है मेरे प्राण निकले जा रहे हैं। तुम यहीं ठहरो और मेरे साथ जागते
रहो।”

39तब प्रभु येशु थोड़ा आगे बढ़े और ज़मीन पर मुहँ के बल लेटकर प्रार्थना करने लगे, “मेरे पिता परमात्मा, यदि संभव हो तो इस दुख के पहाड़ को मुझ से दूर कर दें। परंतु जो मैं चाहता हूँ वह नहीं, पर जो आप चाहते हैं वह पूरा हो।”

40जब वह शिष्यों के पास लौटे और उन्हें सोते देखा तो पतरस से
बोले, “मेरे साथ एक घंटे जागने की भी शक्ति तुम में नहीं? 41तुम सब
सतर्क रहो और प्रार्थना करते रहो, ऐसा न हो कि तुम परीक्षा में फँस
जाओ। इसमें कोई शक नहीं कि आत्मा तो सतर्क और तैयार है परंतु
शरीर थककर कमज़ोर हो जाता है।”

42फिर से प्रभु येशु प्रार्थना करने के लिए गए और कहा, “मेरे पिता परमात्मा, अगर कोई और रास्ता नहीं है और मुझे दुख उठाना ही होगा, तो मैं वही करूँगा जो आप चाहते हैं।”

43गुरु येशु प्रार्थना करके लौटे और उन्होंने शिष्यों को फिर सोते हुए
पाया, क्योंकि उनकी आँखें नींद से भारी हो रही थीं। 44उन्हें छोड़कर
प्रभु येशु फिर गए और तीसरी बार उन्हीं शब्दों में प्रार्थना की।
45तब वह शिष्यों के पास आए और उनसे कहा, "अब भी सो रहे हो
और आराम कर रहे हो? देखो, समय आ पहुँचा है। तेजस्वी मानव-पुत्र
पापियों के हाथ पकड़वाया जाने वाला है। 46उठो, हम चलें। देखो, मुझे
धोखा देने वाला नज़दीक आ गया है।"

भीड़ द्वारा प्रभु येशु की गिफ्तारी

47गुरु येशु बोल ही रहे थे कि बारह शिष्यों में से एक शिष्य यहूदा
आ गया। उसके साथ तलवारें और लाठियाँ लिए बड़ी भीड़ थी जिसे
प्रधान पुरोहितों और समाज के बड़ों ने भेजा था। 48यहाँ आने से पहले
यहूदा ने उन्हें बता दिया था, "जिस व्यक्ति को मैं चूम कर नमस्कार
करूँ उसको गिरफ्तार कर लेना।"
49वह तुरंत प्रभु येशु के पास जाकर बोला, "गुरुजी, नमस्कार" और
उनके गाल को चूम किया।
50प्रभु येशु ने उससे कहा, "मित्र, जिस काम के लिए आए हो, उसे
कर लो।"
तब जो लोग यहूदा के साथ थे उन्होंने पास आकर प्रभु येशु को
गिरफ्तार कर लिया। 51इस पर प्रभु येशु के एक शिष्य ने अपनी
तलवार खींची और महापुरोहित के सेवक पर चलाकर उसका कान
काट दिया। 52प्रभु येशु ने उससे कहा, "अपनी तलवार म्यान में रखो,
क्योंकि जो तलवार चलाते हैं, वे तलवार से ही मारे जाएँगे! 53क्या तुम
सोचते हो कि मैं अपने पिता परमात्मा से माँग नहीं सकता था कि वह
मेरे लिए इसी समय हज़ारों स्वर्गदूतों की सेना भेज दें? 54मैं माँग सकता
था, लेकिन परमात्मा-ग्रंथ का कहना है कि यह एक अलग तरीके से
होगा।"
55उस समय प्रभु येशु ने भीड़ से कहा, "क्या तुम तलवारें और
लाठियाँ लेकर मुझे बंदी बनाने आए हो, मानो मैं कोई खतरनाक
क्रन्तिकारी हूँ? मैंने रोज़ाना परमात्मा के मंदिर के आँगन में बैठकर
तुम्हें उपदेश दिए पर उस समय तुमने मुझे नहीं पकड़ा। 56किंतु यह

सब इसलिए हुआ ताकि परमात्मा के प्रवक्ताओं द्वारा की गई भविष्यवाणियाँ पूरी हों।”
तब सब शिष्य प्रभु येशु को छोड़कर भाग गए।

प्रभु येशु को अपराधी साबित करने की साज़िश

[57]प्रभु येशु को पकड़ने वाले उनको महापुरोहित काइफस के घर
ले गए, जहाँ धर्मगुरु और समाज के बड़े इकट्ठा थे। [58]पतरस भी दूरी
बनाकर उनके पीछे महापुरोहित के भवन के आँगन तक गया और
क्या होने वाला है देखने के लिए अंदर जाकर पहरेदारों के साथ बैठ
गया। [59]दूसरी तरफ प्रधान पुरोहित और सारी यहूदी धर्म-महासभा
प्रभु येशु को मार डालना चाहती थी। इसलिए वे सभी उनके विरुद्ध
झूठे गवाह ढूँढ़ने की कोशिश करने लगे। [60]पर अनेक झूठे गवाह खड़े
करने पर भी, कोई प्रमाण न मिला। आखिरकार दो गवाह आकर बोले,
[61]“इसने कहा था, ‘मैं परमात्मा के मंदिर को गिरा सकता हूँ और तीन
दिन में उसे फिर खड़ा कर सकता हूँ।’”
[62]इस पर महापुरोहित ने खड़े होकर प्रभु येशु से कहा, “ये लोग जो तुम
पर आरोप लगा रहे हैं, उसके बचाव में तुम कुछ बोलोगे नहीं?” [63]पर प्रभु
येशु मौन रहे। महापुरोहित ने कहा, “मैं तुम्हें जीवित परमात्मा की कसम
देकर पूछता हूँ कि बताओ, क्या तुम मुक्तिदाता, परमात्मा के पुत्र हो?”
[64]प्रभु येशु बोले, “आपने यह स्वयं ही कह दिया। मैं आपसे यह भी
कहता हूँ कि अब से आप लोग तेजस्वी मानव-पुत्र को सर्वशक्तिमान
परमात्मा के सिंहासन के दाईं ओर बैठा शासन करते और बादलों पर
सवार होकर आता हुआ देखोगे।”
[65]इस पर महापुरोहित ने गुस्से में आकर अपने कपड़े फाड़े और कहा,
“इसने परमात्मा का अपमान किया है। क्या हमें अब भी गवाहों की
ज़रूरत है? आप सब लोगों ने स्वयं अपने कानों से परमात्मा की निंदा
सुन ली। [66]आप लोगों का क्या फैसला है?”
उन्होंने उत्तर दिया, “यह मृत्युदंड के योग्य है!” [67]तब उन्होंने प्रभु
येशु के मुँह पर थूका, उन्हें घूँसे मारे और कुछ ने थप्पड़ मारकर उनसे
कहा, [68]“ओ मुक्तिदाता! हमें परमात्मा से पता करके बता कि इन में से
किसने तुझे मारा।”

शिष्य का गुरु को पहचानने से इंकार करना

69पतरस बाहर आँगन में बैठा था। तब एक सेविका उसके पास
आकर बोली, "तुम भी तो गलील-निवासी येशु के साथ थे।"
70पर पतरस ने सबके सामने इंकार करते हुए कहा, "मैं नहीं जानता
कि तुम किसके बारे में बात कर रही हो।"
71पतरस बाहर के दरवाज़े पर चला गया, तब किसी और सेविका ने
उसे देखा और वहाँ खड़े लोगों से कहा, "यह व्यक्ति नासरत-निवासी
येशु के साथ था।"
72एक बार फिर पतरस ने इंकार किया और कसम खाते हुए कहा,
"मैं उस व्यक्ति को नहीं जानता।"
73कुछ समय बाद वहाँ खड़े हुए लोगों ने पतरस के पास आकर कहा,
"ज़रूर, तुम उन्हीं में से एक हो, क्योंकि तुम्हारी बोली उन्हीं लोगों के
समान है।"
74तब पतरस ने कसम खाई और कहा, "मैं उस मनुष्य को नहीं
जानता। अगर मैं झूठ बोल रहा हूँ तो परमात्मा मुझको भस्म कर दें।"
और ठीक उसी समय मुरगे ने बाँग दी।
75अब पतरस को वे शब्द याद आए जो गुरु येशु ने कहे थे, "मुरगे के
बाँग देने से पहले तुम तीन बार कहोगे कि तुम मुझे नहीं जानते।" तब
पतरस बाहर जाकर फूट-फूटकर रोने लगा।

27

प्रभु येशु को मृत्युदंड देने की सहमति

1जब सुबह हुई तब सब प्रधान पुरोहितों और समाज के बड़े इस बात
पर सहमत थे कि प्रभु येशु को मृत्युदंड देना चाहिए। 2वे प्रभु येशु को
बाँधकर ले गए और उन्हें राज्यपाल पिलातुस को सौंप दिया।
3जिस यहूदा ने प्रभु येशु को धोखा दिया था, जब यह देखा कि प्रभु
येशु को मृत्युदंड की आज्ञा मिली है तब जो कुछ उसने किया था उस
पर वह पछताने लगा। वह प्रधान पुरोहितों और बड़ों के पास चाँदी
के तीस सिक्के लेकर आया और उनसे बोला, 4"मैंने निर्दोष व्यक्ति को
मृत्युदंड के लिए आप लोगों के हाथ में सौंपकर पाप किया है।"
उन्होंने कहा, "इससे हमें क्या!"

[5]इस पर यहूदा चाँदी के सिक्के परमात्मा के मंदिर में फेंककर वहाँ से
निकल गया और अपने आप को फाँसी लगा ली।
[6]प्रधान पुरोहितों ने चाँदी के सिक्के लेकर कहा, “इन्हें मंदिर के कोष
में रखना सही नहीं, क्योंकि यह पैसा एक आदमी को मारने के लिए
दिया गया था।” [7]उन्होंने आपस में बातचीत करके उस पैसे से एक
कुम्हार का खेत खरीद लिया ताकि उसमें वे विदेशियों के शवों को
दफना सकें। [8]इस कारण वह खेत आज भी “खून का खेत” कहलाता
है। [9]तब परमात्मा के प्रवक्ता यरमियाह की कही बात पूरी हुई,

“उन्होंने चाँदी के तीस सिक्के लिए
 जो इज़राएल के लोगों ने इस व्यक्ति के लिए मूल्य तय किया था
[10] और कुम्हार के खेत को खरीद लिया
 जैसा प्रभु परमात्मा ने मुझे आदेश दिया था।”

प्रभु येशु पर आरोपों की बौछार

[11]अब प्रभु येशु राज्यपाल पिलातुस के सामने खड़े थे और राज्यपाल
ने उनसे पूछा, “क्या तुम यहूदियों के राजा हो?”
प्रभु येशु ने उत्तर दिया, “आपने स्वयं ही कह दिया।” [12]परंतु जब
प्रधान पुरोहितों और समाज के बड़ों ने उन पर आरोप लगाए तो उन्होंने
एक शब्द भी नहीं बोला। [13]पिलातुस ने कहा, “क्या तुम नहीं सुन रहे
कि ये तुम्हारे विरुद्ध कितने आरोप लगा रहे हैं?” [14]पर प्रभु येशु ने एक
बात का भी उत्तर नहीं दिया। इससे राज्यपाल बहुत हैरान हुआ।

लोगों ने निर्दोष के बजाय दोषी को चुना

[15]मुक्ति-त्यौहार के समय राज्यपाल हमेशा लोगों द्वारा चुने गए एक
कैदी को मुक्त करता था। [16]उस समय येशु बराबस+ नामक एक माना
हुआ खतरनाक क्रन्तिकारी कैद में था। [17]लोगों के इकट्ठा होने पर
पिलातुस ने उनसे पूछा, “तुम किस कैदी को मुक्त कराना चाहते हैं?
क्या येशु बराबस* या येशु जिसे तुम मुक्तिदाता कहते हो?” [18]पिलातुस

27:10 यरमियाह 19:1-13; जकरयाह 11:12-13 *** 27:17** *येशु बराबस* - “येशु” इस समय एक आम यहुदी नाम था।

जानता था कि प्रधान पुरोहित और समाज के बड़े येशु को उसके पास
इसलिए लाए थे क्योंकि वे उससे जलन रखते थे।
19जब पिलातुस इस मामले का न्याय कर रहा था, उसकी पत्नी ने उसे
एक संदेश भेजवाया, "उस निर्दोष के साथ कुछ नहीं करना है। आज
मैंने इसे अपने सपने में देखा और उसके बाद मैं बहुत परेशान हुई।"
20प्रधान पुरोहितों और समाज के बड़ों ने भीड़ को भड़काया कि
बराबस की मुक्ति और प्रभु येशु की मृत्यु की माँग करें। 21राज्यपाल
ने पूछा, "तुम क्या चाहते हो? दोनों में से किस को तुम्हारे लिए छोड़
दूँ?"

लोग बोले, "बराबस को।"

22पिलातुस ने कहा, "तो फिर येशु का, जो मुक्तिदाता कहलाते हैं, मैं
क्या करूँ?"

वे सब कहने लगे, "उसे क्रूस पर कीलों से ठोक दो।"

23पिलातुस ने पूछा, "क्यों? उसने क्या गलती की है?"

इस पर वे और भी ऊँची आवाज़ में चिल्लाने लगे, "उसे कीलों से क्रूस
पर ठोको!"

24जब पिलातुस ने देखा कि उसे प्रभु येशु को बचाने में सफलता नहीं
मिल रही है और दंगा भड़क सकता है, तब उसने पानी लिया और
लोगों के सामने हाथ धोते हुए कहा, "इस मनुष्य+ की मृत्यु के लिए मैं
दोषी नहीं हूँ। इसका खून तुम्हारे सिर पर होगा।"

25लोगों ने उत्तर दिया, "इसकी हत्या का खून हम पर और हमारे बच्चों
पर हो।"

26तब पिलातुस ने बराबस को उनके लिए मुक्त कर दिया और प्रभु
येशु को कोड़े लगवाकर कीलों से क्रूस पर ठोकने के लिए उन्हें सौंप
दिया।

प्रभु येशु का मज़ाक उड़ाया जाना

27तब राज्यपाल के सैनिक प्रभु येशु को किले में ले गए और सारे
सैनिकों ने प्रभु येशु का मज़ाक उड़ाने के लिए उन्हें घेर लिया। 28उन्होंने
प्रभु येशु के कपड़े उतारकर उन्हें शाही लाल पोशाक पहनाई, 29और
काँटों का मुकुट गूँथकर उनके सिर पर रखा और उनके दाएँ हाथ

में राजदंड के समान डंडी* थमाई। तब सैनिकों ने उनके सामने घुटने
टेककर उनका मज़ाक उड़ाते हुए कहने लगे, "यहूदियों के राजा,
आपकी जय हो।" [30]सैनिकों ने उन पर थूका और वही डंडी लेकर उनके
सिर पर मारी। [31]जब वे प्रभु येशु का मज़ाक उड़ा चुके तब उनकी शाही
पौशाक उतार ली और उनके कपड़े पहनाकर उन्हें क्रूस पर कीलों से
ठोकने के लिए ले चले।

प्रभु येशु का क्रूस पर कीलों से ठोका जाना

[32]शहर से बाहर जाते समय सैनिकों को शिमोन नामक साइरेन शहर
का एक निवासी मिला। उसे उन्होंने प्रभु येशु की क्रूस उठाने के लिए
मजबूर किया। [33]जब वे उस स्थान पर पहुँचे जो गोलगोथा कहलाता
है [34]उन्होंने प्रभु येशु को अंगूर-रस और कड़ुवे रस मिलाकर पीने को
दिया। प्रभु येशु ने उसे चखा, पर उसे पीने से इंकार कर दिया।

[35]तब सैनिकों ने प्रभु येशु को क्रूस पर कीलों से ठोक दिया। और
सैनिकों ने यह तय करने के लिए कि प्रभु येशु के कपड़े कौन लेगा,
उन्होंने अपने-अपने नाम की पर्ची डाली। [36]और वहाँ बैठकर उनका
पहरा देने लगे। [37]उन्होंने प्रभु येशु के सिर के ऊपर क्रूस पर सूचना लगा
दी कि क्यों उन्हें यह सज़ा मिली है "यह यहूदियों का राजा येशु है।"
[38]प्रभु येशु की क्रूस के पास दो क्रन्तिकारी अलग-अलग क्रूस पर ठोके
गए, एक उनकी दाईं ओर और दूसरा बाईं ओर।

[39]उधर से आने-जाने वाले लोग प्रभु येशु की निंदा कर रहे थे और
उनके अपमान में सिर हिलाकर कहते थे, [40]"तो तुम वही हो जिसने
दावा किया था कि तुम मंदिर को गिरा सकते हो और तीन दिनों में उसे
फिर से खड़ा कर सकते हो! यदि तुम परमात्मा के पुत्र हो, तो अपने
आप को बचाओ और क्रूस से नीचे उतर आओ!"

[41]इसी प्रकार महापुरोहित, धर्मगुरुओं, और समाज के बड़े प्रभु येशु का
मज़ाक उड़ा रहे थे। उन्होंने कहा, [42]"इसने दूसरों को बचाया, पर अपने
को नहीं बचा पा रहा है। अगर यह इज़राएल का राजा, अभी क्रूस से उतर

---

* **27:29** डंडी - राजा अक्सर अपने हाथ में राजदंड रखते थे। उनके लिए यह अधिकार और शक्ति का प्रतीक था। इसके विपरीत उन लोगों ने प्रभु येशु के हाथ में एक डंडी पकड़ा दी जिससे उनका अपमान हो।

आएगा तो हम भी इस पर विश्वास कर लेंगे। [43]इसने परमात्मा पर भरोसा
किया। यदि परमात्मा इसे चाहते हैं तो अब इसे छुड़ाएँ, क्योंकि इसने कहा
था, 'मैं परमात्मा का पुत्र हूँ।'" [44]प्रभु येशु के दाएँ और बाएँ अलग-अलग
क्रूस पर कीलों से ठोके गए क्रन्तिकारी भी, उनको बुरा-भला कह रहे थे।

प्रभु येशु की मृत्यु से मंदिर का पर्दा फटा

[45]दोपहर बारह से लेकर तीन बजे तक सारे देश में अंधकार छाया
रहा। [46]लगभग तीन बजे प्रभु येशु ने ऊँची अवाज में पुकारा, "एली,
एली, लमा सबक्तनी?" जिसका अर्थ है, "हे मेरे परमात्मा, हे मेरे
परमात्मा, आपने मुझे क्यों छोड़ दिया?"*

[47]यह सुनकर वहाँ खड़े लोगों में से कुछ बोले, "यह परमात्मा के
प्रवक्ता एलियाह को पुकार रहा है।" [48]उनमें से एक व्यक्ति ने तुरंत
दौड़कर स्पंज लिया और खट्टे अंगूर के रस में डुबोया और उसे डंडी
पर रखकर उन्हें पीने को दिया। [49]औरों ने कहा, "ठहर जाओ, देखें कि
परमात्मा के प्रवक्ता एलियाह इसे बचाने आता है या नहीं।"

[50]तब प्रभु येशु ने फिर ऊँची अवाज से चिल्लाकर अपना प्राण त्याग
दिया। [51]और उसी समय, यरूशलम के एक मात्र मंदिर का परदा बीच
में से फटकर दो हिस्सों में बँट गया। पृथ्वी काँप उठी, और चट्टानें
तड़क गईं। [52]शव रखने वाली बंद गुफाएँ खुल गईं और अनेक मरे हुए
पवित्र भक्त ज़िन्दा हो गए। [53]और वे प्रभु येशु के ज़िन्दा होने के बाद
पवित्र शहर यरूशलम में गए और अनेक लोगों ने उन्हें देखा।

[54]रोम सेना-अधिकारी और उसके सैनिक जो प्रभु येशु पर पहरा दे
रहे थे, भूकंप और इन घटनाओं को देखकर बहुत डर गए और बोले,
"बेशक, यह मनुष्य परमात्मा का पुत्र था।"

[55]कई महिलाएँ प्रभु येशु के साथ गलील प्रदेश से उनकी मदद के
लिए वहाँ आई थीं, और कुछ दूरी से यह सब कुछ देख रही थीं।
[56]उनमें मगदलवासी मरियम, याकोब और योसफ की माता मरियम,
और ज़बदियाह के पुत्र याकोब और योहन की माता थीं।

27:46 भजन शास्त्र 22:1 * **27:46** *हे मेरे परमात्मा, हे मेरे परमात्मा, आपने मुझे क्यों छोड़ दिया?* - ये शब्द भजन शास्त्र 22 से हैं जिसमें इस्राएल के पीड़ित राजा के कई संदर्भ शामिल हैं।

प्रभु येशु के अमीर शिष्य का सेवा भाव

[57]शाम होने पर अरिमतेया नगर का निवासी योसफ नामक एक
अमीर व्यक्ति वहाँ आया। वह स्वयं गुरु येशु का शिष्य था। [58]उसने
पिलातुस के पास जाकर प्रभु येशु का शव माँगा और पिलातुस ने उसे
शव देने का आदेश दे दिया। [59]योसफ ने शव को लिया और साफ
चादर में उसे लपेटा। [60]तब उसने शव को शव रखने वाली गुफा में रखा
जो उसने अपने लिए चट्टान में खुदवाई थी और जिसका इस्कतेमाल
अभी तक नहीं हुआ था। उसने गुफा के मुख पर एक बड़ा पत्थर
लुढ़का कर लगा दिया और चला गया। [61]इस पूरे समय मगदलवासी
मरियम और दूसरी मरियम वहाँ गुफा के सामने बैठी सब कुछ देख
रही थीं।

प्रभ येशु की मृत्यु के बाद रोम सरकार चिंतित

[62]दूसरे दिन, आराम-दिवस पर प्रधान पुरोहितों और फरीसियों ने
पिलातुस के सामने इकट्ठा होकर उससे कहा, [63]"राज्यपाल साहब,
हमें याद है कि उस ढोंगी ने, जब वह ज़िन्दा था, कहा था कि मैं तीन
दिन बाद ज़िन्दा हो जाऊँगा। [64]इसलिए आज्ञा दीजिए कि तीसरे दिन
तक शव रखनेवाला गुफा पर पहरा दिया जाए, कहीं ऐसा न हो कि
उसके शिष्य उसे चुरा ले जाएँ और लोगों से कहने लगें, 'वह मरने के
बाद ज़िन्दा हो गए हैं।' तब यह आखिरी धोखा पहले से अधिक बुरा
होगा।"

[65]पिलातुस ने कहा, "मेरे कुछ पहरेदार ले जाओ और जैसा सही
समझो करो शव रखने वाली गुफा पर पहरा दो।" [66]इसलिए उन्होंने उसे
चारो तरफ से अच्छी तरह से बंद कर दिया और वहाँ सुरक्षा के लिए
पहरेदार बैठा दिए।

28

परमात्मा ने प्रभु येशु द्वारा मृत्यु को पराजित किया

[1]आराम-दिवस के बाद, हफ्ते के पहले दिन, सुबह-सुबह,
मगदलवासी मरियम और दूसरी मरियम जिसमें प्रभु येशु का शव रखा
गया था उस गुफा को देखने आईं।

2और अचानक बड़ा भूकंप आया, और प्रभु परमात्मा का एक स्वर्गदूत
परमस्वर्ग से उतरा। उसने आकर शव रखने वाली गुफा पर लगे भारी
पत्थर को लुढ़का दिया और उस पर बैठ गया। 3वह बिजली की चमक
जैसा दिखाई दे रहा था और उसके कपड़े बर्फ की तरह सफेद थे।
4पहरेदार डर के मारे कांप उठे और नीचे गिर पड़े, मानो वे मर गए हों।
5स्वर्गदूत ने स्त्रियों से कहा, "डरो मत, मैं जानता हूँ कि तुम प्रभु येशु
को, जिन्हें क्रूस पर कीलों से ठोक दिए गए थे, ढूँढ़ रही हो। 6वह यहाँ
नहीं हैं, किंतु जैसा उन्होंने कहा था, परमात्मा ने उन्हें मरने के बाद
भी ज़िन्दा कर दिया है। आओ, और इस स्थान को देखो जहाँ उनका
शव रखा गया था। 7अब जल्दी जाओ और उनके शिष्यों को बताओ
कि वह ज़िन्दा हो गए हैं और गलील प्रदेश के रास्ते में है। वहाँ जाओ,
और तुम उन्हें देखोगे। यही बात बताने के लिए मैं आया हूँ।"
8महिलाएँ डरी हुई थीं पर फिर भी बहुत खुश थीं। वे जल्दी उस जगह
से निकलीं और शिष्यों को बताने के लिए दौड़ीं। 9परंतु प्रभु येशु उन
महिलाओं को अचानक रास्ते में मिले और बोले, "नमस्ते, सुखी रहो।"
वे उनके निकट गईं और उनके चरण पकड़कर उनकी भक्ति की। 10प्रभु
येशु ने उन महिलाओं से कहा, "डरो मत। जाओ, मेरे भाइयों से कहो
कि वे गलील प्रदेश पहुँचें। वहाँ मैं उनसे मिलूँगा।"

प्रभु येशु के शरीर के चुराए जाने की झूठी कहानी

11वे महिलाएँ अभी रास्ते में ही थीं कि कई पहरेदार जो शव रखने
वाली गुफा की पहरेदारी कर रहे थे, शहर में गए और उन्होंने प्रधान
पुरोहितों को सब बातें बता दीं। 12पुरोहितों ने समाज के बड़ों को इकट्ठा
कर उनसे बात चीत और उन पहरेदारों को रिश्वत में बहुत-से पैसे
देकर कहा, 13"लोगों से कहना कि जब हम रात को सोए हुए थे तब
प्रभु येशु के शिष्य आए और उसके शरीर को चुराकर ले गए। 14यदि
राज्यपाल के कान तक यह बात पहुँचेगी तो हम उन्हें स्थिति के बारे में
समझा देंगे और तुम्हारे लिए चिंता की कोई बात न होगी।" 15पहरेदारों
ने रिश्वत ले ली और वैसा ही किया जैसा उन्हें बताया गया था। उनके
शरीर के चुराए जाने के बारे में यह झूठी कहानी फैल गई और अब
तक यहूदियों में मशहूर है।

आकाश और पृथ्वी का सारा अधिकार प्रभु को मिला

[16]अब ग्यारह शिष्य गलील गए, जिस पहाड़ पर प्रभु येशु ने उन्हें
मिलने को कहा था। [17]गुरु येशु को देखकर शिष्यों ने झुककर उन्हें
प्रणाम किया, परंतु कुछ शिष्यों को संदेह हुआ।
[18]तब प्रभु येशु ने उनसे कहा, "परमात्मा ने मुझे आकाश* और पृथ्वी
का सारा अधिकार दिया है। [19]इसलिए जाओ और दुनिया के हर
समाज के लोगों को शिष्य बनाओ। उन्हें पिता परमात्मा, पुत्र और
पवित्र आत्मा के नाम से समर्पण-स्नान दो। [20]और जिन बातों कि मैंने
तुम्हें आज्ञा दी है, उन सबका पालन करना उन्हें सिखाओ। और याद
रखो, संसार के अंत तक मैं हमेशा तुम्हारे साथ हूँ।"

*** 28:18** *आकाश* - या, "स्वर्ग"